www.understandquran.com

UNDERSTAND AL-QUR'AN ACADEMY

80%
क़ुरआनी अल्फ़ाज़

आओ क़ुरआन समझें – आसान तरीक़े से

कोर्स-2: सूरह अल-बक़रा (आयात: 1-37)

इन्शा अल्लाह, इस कोर्स के बाद आप क़ुरआन मजीद के तक़रीबन **80** फ़ीसद अल्फ़ाज़ समझने लगेंगे
(*अगर आप सूरह अल-बक़रा और उस के बाद वाली सूरतों को पढ़ना जारी रखेंगे)

तालीफ़
डा० अब्दुलअज़ीज़ अब्दुर्रहीम
बानी व डायरेक्टर: अन्डरस्टैण्ड अल-क़ुरआन एकेडमी

www.understandquran.com

इब्तिदाई पाँच सफ़्हात के इशारात TPI के ज़रीया

कुरआन को हमारी ज़िंदगी में लाने के लिए एक सादा तरीक़ा

www.understandquran.com

UNDERSTAND AL-QUR'AN ACADEMY

80%
क़ुरआनी अल्फ़ाज़

आओ क़ुरआन समझें

आसान तरीक़े से

कोर्स–2ः सूरह अल–बक़रा (आयात 1–37)

इन्शा अल्लाह, इस कोर्स के बाद आप कुरआन मजीद के तक़रीबन 80 फ़ीसद अल्फ़ाज़ समझने लगेंगे

(अगर आप सूरह अल्बक़रा और उसके बाद वाली सूरतों को पढ़ना जारी रखें)

तालीफ़

डा0 अब्दुलअज़ीज़ अब्दुर्रहीम

बानी व डायरेक्टरः अन्डरस्टैण्ड अल–कुरआन एकेडमी

www.understandquran.com

© EduSuite Solutions Private Limited

इस किताब के किसी भी हिस्से की बग़ैर इजाज़त कॉपी, तक़सीम और किसी भी वेबसाइट पर अपलोड करना मना है।

किताब आओ कुरआन समझें आसान तरीके से
कोर्स-2: सूरह अल-बक़रा (1-37) 80 फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़

तालीफ़ डा0 अब्दुलअज़ीज़ अब्दुर्रहीम
डायरेक्टर: अन्डरस्टैण्ड अल-कुरआन एकेडमी

नाशिर EduSuite Solutions Private Limited

एडीशन जनवरी 2021, तादाद: 1000

सफ़्हात 126

रिसर्च व डेवलपमेंट टीम
मोहसिन सिद्दीक़ी
मोहम्मद फुरक़ान फ़लाही, आमिर इरशाद फ़ैज़ी
अब्दुलक़ुद्दूस उमरी,
इरशाद आलम नदवी

एडवाइज़रस
खुरशीद अनवर नदवी
फ़ाज़िल दारुलउलूम नदवतुल-उलमा
व कामिल जामिया निज़ामिया

मुआविनीन
डॉक्टर अब्दुलक़ादिर फ़ज़लानी
ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहसन, अबदुर्रहीम नईमुद्दीन
मोहम्मद यूनुस जामई

हिन्दी टाइपिंग
तूबा मज़हर ज़हरावी

अरबी फ़ॉन्ट डिज़ाईनर
शकील अहमद मरहूम (अल्लाह उन की क़ब्र को नूर से भर दे),
आयशा फ़ौज़िया

ग्राफ़िक डिज़ाइनर
कफ़ील अहमद फ़ैज़ी

कुरआनी (अल्फ़ाज़) तादाद व शुमार
तारिक़ अज़ीज़, मुज्तबा शरीफ़ www.corpus.quran.com

Publisher
EduSuite Solutions Private Limited

Plot No. 13-6-434/B/41, 2nd Floor, Omnagar,
Langar House, Hyderabad - 500 008.
Telangana - INDIA
Ph.: +91- 9652 430 971 /+91-40-23511371
Website: www.understandquran.com
Email: info@understandquran.com

www.understandquran.com

بسم الله الرحمن الرحيم

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

सबक़ नंबर	क़ुरआन	सफ़्हा नंबर		ग्रामर (क़वाइद)	सफ़्हा नंबर	
		टेक्स्टबुक	वर्कबुक		टेक्स्टबुक	वर्कबुक
	अहम हिदायात	IV				
	एकेडमी का तआरूफ़	VI				
	पेशे लफ़्ज़	VII				
1a	तआरुफ़ और तअव्वुज़	8	86	कम्ज़ोर अफ़आल का तआरूफ़	50	106
1b	सूरह अल-फ़ातिहा	10	87	कम्ज़ोर अफ़आलः وَهَبَ	51	107
1c	मुत्तक़ियों के लिए हिदायत (अल-बक़राः 1-2)	12	88	कम्ज़ोर अफ़आलः وَعَدَ	53	108
1d	मुत्तक़ियों की सिफ़ात (अल-बक़राः 3-5)	14	89	कम्ज़ोर अफ़आलः قَالَ	55	109
2a	काफ़िरीन को हिदायत नहीं (अल-बक़राः 6-7)	16	90	कम्ज़ोर अफ़आलः كَانَ	56	110
2b	मुनाफ़िक़ीन को हिदायत नहीं (अल-बक़राः 8-10)	18	91	कम्ज़ोर अफ़आलः زَادَ	58	111
2c	फ़सादी और बेवक़ूफ़ (अल-बक़राः 11-13)	20	92	कम्ज़ोर अफ़आलः دَعَا	60	112
2d	दो रुख़े (अल-बक़राः 14-16)	22	93	कम्ज़ोर अफ़आलः هَدٰى	62	113
3a	आग की मिसाल (अल-बक़राः 17-18)	24	94	हम्ज़ा वाले अफ़आलः أَمَرَ	64	114
3b	बारिश की मिसाल (अल-बक़राः 19-20)	26	95	यकसाँ हुरूफ़ वाले अफ़आलः ظَنَّ	65	115
3c	क़ुरआन की दावत (अल-बक़राः 21-22)	28	96	यकसाँ हुरूफ़ वाले अफ़आलः ضَلَّ	66	116
3d	क़ुरआन का चैलेंज (अल-बक़राः 23)	30	97	कम्ज़ोर हुरूफ़ और हम्ज़ा वाले अफ़आलः شَاءَ	67	117
4a	वईद और बशारत (अल-बक़राः 24-25)	32	98	فَتَحَ يَفْتَحُ के जैसे अफ़आल का इआदा	68	118
4b	मच्छर की मिसाल (अल-बक़राः 26)	34	99	نَصَرَيَنْصُرُ के जैसे अफ़आल का इआदा	69	119
4c	गुमराह कौन? (अल-बक़राः 27)	36	100	نَصَرَ، ضَرَبَ के जैसे अफ़आल का इआदा	71	120
4d	कुफ़्र कैसे? (अल-बक़राः 28-29)	38	101	سَمِعَ يَسْمَعُ، وَهَبَ يَهَبُ، وَعَدَ يَعِدُ के जैसे अफ़आल का इआदा	73	121
5a	ख़लीफ़ा पर सवाल? (अल-बक़राः 30)	40	102	قَالَ، زَادَ، شَاءَ के जैसे अफ़आल का इआदा	75	122
5b	अस्मा की तालीम (अल-बक़राः 31-33)	42	103	دَعَا، هَدٰى، ظَنَّ، ضَلَّ के जैसे अफ़आल का इआदा	77	123
5c	सजदा और इब्लीस (अल-बक़राः 34-35)	44	104	कम्ज़ोर अफ़आलः رَضِيَ، نَسِيَ	79	124
5d	फिसलाना और तौबा (अल-बक़राः 36-37)	46	105	इआदाः टूटी हुई जमा	81	125

www.understandquran.com

अहम हिदायात

इस कोर्स को मुअस्सिर अंदाज़ में इस्तिमाल करने के लिए चंद अहम हिदायातः

- इस बात की बहुत अहमियत के साथ ताकीद की जाती है कि इस कोर्स को पढ़ने से पहले आप हमारा कोर्स–1 (आओ क़ुरआन और नमाज़ समझें) मुकम्मल कर लीजिए।
- यह पूरी तरह़ तआ़मुली **(interactive)** कोर्स है; इस लिए जो कुछ भी आप पढ़ें या सुनें उस की अ़मली मश्क़ कीजिए।
- मश्क़ के दौरान होने वाली ग़लतियों की वजह से परेशान न हों, शुरूअ़ में हर किसी से ग़लती हो ही जाती है।
- जो ज़्यादा मश्क़ करेगा वह उतना ही ज़्यादा सीखेगा, चाहे मश्क़ के दौरान ग़लतियाँ हुई हों।
- यह सुनहरी क़ायदा याद रखिएः

I listen, I forget, I see, I remember. I practice, I learn. I teach, I master.

- हर सबक़ के बाद ग्रामर भी मौजूद है। ग्रामर का ह़िस्सा अस्ल अस्बाक़ से बिलावास्ता मुतअ़ल्लिक़ नहीं है क्योंकि इस सूरत में कोर्स मुश्किल हो जाता और बहुत मुम्किन था कि क़ुरआन के अस्बाक़ को शुरूअ़ करने से पहले हमें ग्रामर को अलग से पढ़ाने की ज़रूरत पड़ती। दरअस्ल ग्रामर का ह़िस्सा अस्ल सबक़ के दौरान पढ़े जाने वाले अल्फ़ाज़ में अ़रबी क़वायद की ततबीक़ को बयकवक़्त मज़बूत करता रहता है। यही वजह है कि चंद अस्बाक़ के मुकम्मल होने पर खुद आप को सूरतों या अज़्कार के पढ़ने के दौरान ग्रामर के फ़वायद नज़र आने लगेंगे।

नीचे दिए गए सात होम–वर्कस करना हरग़िज़ न भूलिएः

दो तिलावत केः

❶ कम से कम **5** मिनट मुसह़फ़ (क़ुरआन) देख कर तिलावत करना।
❷ कम से कम **5** मिनट बग़ैर देखे अपने ह़ाफ़िज़े से (जो भी याद हो) तिलावत करना।

दो मुतालआ़ (Study) केः

❸ कम से कम **10** मिनट इस किताब का मुतालआ़ कीजिए। (मुब्तदी (शुरूआ़ती) ह़ज़रात के लिए)
❹ कम से कम सिर्फ़ आधा मिनट अल्फ़ाज़ व मआ़नी की शीट का हर नमाज़ के बाद या अपनी सहूलत के मुताबिक़ किसी वक़्त मुतालआ़ कीजिए। और इस कोर्स के मुकम्मल होने तक इस बुकलेट को हमेशा अपने साथ रखिए।

दो सुनने और सुनाने केः

❺ इन आयात की लफ़्ज़ी तर्जमा के साथ कोई रिकॉर्डिंग सुनिए। आप इसे सफ़र करते हुए कार वग़ैरह में, या घर के कामों को करने के साथ साथ भी सुन सकते हैं। या आप खुद अपनी आवाज़ में इस कोर्स के अस्बाक़ को रिकार्ड कर के बार–बार सुन सकते हैं।
❻ दिन में कम से कम एक मिनट अपने घर वालों, दोस्तों, क्लास के साथियों के साथ सबक़ के तअ़ल्लुक़ से गुफ़्तगू कीजिए।

और एक इस्तिमाल करने का:

❼ रोज़ाना सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ों में अलग अलग सूरतों की तिलावत कीजिए, इस का मक़सद यह है कि आप रोज़ाना की नमाज़ों में एक ही सूरत को बार-बार न पढ़ते रहें।

मुख़्तलिफ़ औक़ात में अल्लाह तआ़ला से बार-बार दुआ़ करने की आ़दत डालिए।

❶ खुद के लिए दुआ़ (رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا) और

❷ अपने साथियों के लिए दुआ़ कि अल्लाह हमारी और उनकी क़ुरआन को सीखने में मदद फ़रमाए।

याद रखिए की सीखने का सब से बेहतरीन तरीक़ा यह है कि सिखाया जाए, और किसी को सिखाने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसे भी टीचर बना दिया जाए। आप खुद भी टीचर बन सकते हैं। आप हमारी वेबसाइट पर जाईए और वहाँ से पी-पी-टी फ़ाइल्स डाउनलोड कीजिए, विडियो देखिए और जिस तरह़ पढ़ाया गया है, बस उसी तरह़ पढ़ाईए। अपनी तरफ़ से कोई शरह़ बढ़ाने से पहले उल्मा से चेक कर लीजिए, वर्ना दी हुई शरह़ को ही इस्तिमाल कीजिए, इन्शा अल्लाह यह काफ़ी है और उल्माए किराम ने इस को चेक किया हुआ है।

www.understandquran.com

“अन्डरस्टैन्ड अल–क़ुरआन एकेडमी” का तआ़रूफ़

www.understandquran.com

एकेडमी के मक़ासिदः (1) क़ुरआन से दूरी को दूर किया जाए और ऐसी नस्ल की तैयारी में मदद की जाए जो क़ुरआन को पढ़े, समझे, अ़मल करे और दूसरों तक इस के पैग़ाम को पहुँचाए (2) क़ुरआन को सब से दिलचस्प आसान मुअस्सिर और रोज़ाना की ज़िंदगी में सब से ज़्यादा काम आने वाली दुनियाँ और आख़िरत की कामयाबी का रास्ता दिखाने वाली किताब के तौर पर पेश किया जाए (3) रसूलुल्लाह ﷺ की मुह़ब्बत व अज़्मत पैदा करने की नियत से अह़ादीस की बुनियादी तालीम फ़राहम की जाए (4) क़ुरआन पाक को आसान अंदाज़ में तज्वीद के साथ पढ़ना सिखाया जाए (5) स्कूल्स, मदारिस, मकातिब और आम लोगों के लिए ज़रूरी चीज़ें (किताबें, CD, पोस्टर्स वग़ैरह़) उलमा की निगरानी में तैयार किए जाएँ और उन्हें एक निसाब के तौर पर पेश किया जाए (6) मशग़ूल और तिजारत करने वाले अफ़राद के लिए कम वक़्त वाले कोर्सेस (शॉर्ट कोर्सेस) मुनअ़क़िद किए जाएं (7) सीखने सिखाने के आसान और नए तरीक़ों को इस्तेमाल करते हुए क़ुरआन के सीखने को आसान बनाया जाए।

वाज़ेह़ रहे कि इस का मक़सद क़ुरआनी ऊलूम के माहिरीन को तैयार करना नहीं है क्योंकि यह काम माशा अल्लाह दीगर मदारिस और इदारे कर रहे हैं बल्कि इसका मक़सद यह है कि आम मुसलमान और स्कूल्स के तलबा क़ुरआन के बुनियादी पैग़ाम को समझ सकें।

यह काम क्योंः ग़ैर अ़रब मुसलमानों की अक्सरियत क़ुरआन को नहीं समझती है। आज की नस्ल के लिए क़ुरआन से तआ़रुफ़ इन्तेहाई ज़रूरी है क्योंकि एक तरफ़ तो बेहयाई का तूफ़ान है जिस में किसी की बात का असर उतना नहीं हो सकता जितना अल्लाह के कलाम का होगा, और दूसरी तरफ़ तक़रीबन हर तरफ़ से दीने इस्लाम, मोह़म्मद ﷺ की ज़ाते अक़्दस और क़ुरआने करीम पर ह़मलों का सिलसिला जारी है, पूरी कोशिश की जा रही है कि मुसलमानों का ईमान क़ुरआन से ख़त्म हो जाए या कम्ज़ोर हो जाए और वह अल्लाह व रसूल से ग़ाफ़िल हो जाएँ। इन ह़ालात में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम नई नस्ल को क़ुरआन समझाएँ और उन को बुनियादी ऐतेराज़ात का मुक़ाबला करने के क़ाबिल भी बनाएँ, इन्शा अल्लाह जब वह क़ुरआन समझेंगे तो अपनी दुनिया व आख़िरत में कामयाब होंगें और दूसरों को भी इस की दावत पेश कर सकेंगे।

मुख़्तसर तारीख़ः **1998 में www.understandquran.com** वेबसाइट बनाई गई। अल्ह़म्दुलिल्लाह उस वक़्त से क़ुरआन मजीद को आसान और मुअस्सिर तरीक़ों के ज़रीए समझने और समझाने के लिए मुख़्तलिफ़ किताबों की तैयारी या उन के तराजिम पर काम किया जा रहा है। क़ुरआन फ़हमी का पहला कोर्स (पचास फ़ीसद क़ुरआनी अल्फ़ाज़) तक़रीबन **25** मुख़्तलिफ़ ममालिक में पढ़ाया जा रहा है और इस का तक़रीबन **20** आ़लमी ज़बानों में तर्जमा भी किया जा चुका है। इस के इलावा यह कोर्स पाँच मुल्की व आ़लमी टीवी चैनल्स पर भी नश्र किया जा चुका है। इस वक़्त तक़रीबन **2000** से ज़ायद स्कूल्स में “आओ क़ुरआन पढ़ें तज्वीद के साथ” और “आओ क़ुरआन समझें आसान तरीक़े से” के कोर्सेस जारी हैं। अल्ह़म्दुलिल्लाह

अल्लाह के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः “بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ اٰيَةً”(पहुंचा दो मेरी तरफ़ से अगरचः एक आयत ही हो) तो आईए हम सब मिल कर इस काम को आगे बढ़ाएँ! आप जहाँ भी हों, कोशिश करें कि इस कोर्स को सीखें और वहाँ की मस्जिद, मोह़ल्ले, स्कूल्स, मदरसे वग़ैरह में इसका तआ़रुफ़ कराएँ और बच्चों और बड़ों को इस अहम काम से जोड़ें। अल्लाह से दुआ़ है कि वह अपनी अज़ीमुश्शान किताब की ख़िदमत में किए गए हमारे इन छोटे मोटे कामों को क़बूल करे, हमें रियाकारी और दूसरे तमाम गुनाहों से बचाए और ग़लतियों से मह़फ़ूज़ रखे। आमीन

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ، وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، وَاغْفِرْ لَنَا، اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ - وَجَزَاكُمُ اللهُ خَيْرًا-

www.understandquran.com

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُولِ اللّٰهِ. اَمَّا بَعْدُ!

अल्लाह तआ़ला ने हम सब की हिदायत के लिए कुरआन नाज़िल किया है। इस से रहनुमाई उसी वक़्त ह़ासिल की जा सकती है जब हम इस को समझ कर पढ़ें। हमारें नौजवान और बड़े ह़ज़रात कुरआन को समझते नहीं क्योंकि उन्हें यह पढ़ाया ही नहीं गया। दूसरी तरफ़ आज भी आम तौर पर हमारे स्कूलों में कुरआन को समझा कर पढ़ाया नहीं जाता। इस की एक वजह आसान किताबों की कमी है।

इन्ही वुजूहात की बिना पर "अन्डरस्टैन्ड अल-कुरआन एकेडमी" के तह़त ख़िदमत कर रहे उल्मा व माहिरीने तदरीस की टीम ने कुरआन मजीद को बतौरे निसाब पेश करने की जानिब क़दम उठाया है जो बड़ों और बच्चों दोनों के लिए बराबर मुफ़ीद है। इस सिलसिले की पहली किताब "आओ कुरआन और नमाज़ समझें-आसान तरीक़े से" आपको **50** फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़ सिखा देती है। मगर दिलचस्प बात यह है कि अगर आप सूरह अल-बक़रा से कुरआन पढ़ना शुरूअ़ करें तो हर सतर में आप को औसतन **6** में से **9** अल्फ़ाज़ कोर्स-**1** ही के मिलेंगे। गोया आप **50** फ़ीसद नहीं बल्कि **66** फ़ीसद अल्फ़ाज़ जान रहे होंगे!

यह किताब "आओ कुरआन समझें-आसान तरीक़े से" (कोर्स-**2**) इसी सिलसिले की दूसरी कड़ी है। इस किताब के ख़त्म पर, यानी जब आप छटा सफ़्ह़ा शुरूअ़ करेंगे तो आप को इन्शा अल्लाह हर सतर में औसतन **9** में से सिर्फ़ **2** ही नएँ अल्फ़ाज़ मिलेंगे, यानी **80** फ़ीसद अल्फ़ाज़ को आप जान चुके होंगे सुबह़ानल्लाह!

इस किताब की चंद नुमायाँ खुसुसियातः

- कुरआन मजीद के मज़ामीन को समझने और याद रखने में सहूलत के लिए इन्हें इशारात **(Pointers)** के तह़त तक़सीम कर दिया गया है, इन इशारात की मदद से तलबा व तालिबात मज़ामीने कुरआन को अपने ज़ेहनों में आसानी से मह़फ़ूज़ रख सकते हैं।
- अल्फ़ाज़ के मआ़नी को याद करने के लिए फ़ेक़रों **(phrases)** का इस्तिमाल किया गया है। नई ज़बान सीखने के लिए यह एक नया और मुअस्सिर तरीक़ा है।
- एक सबक़ में एक इशारा पढ़ाया जाए इस की कोशिश की गई है। और हर सबक़ में एक ह़दीस भी शामिल की गई है; ताकि तलबा में रसूलुल्लाह ﷺ की अह़ादीस की अज़्मत भी पैदा हो और वह उन पर अ़मल करने वाले बनें।
- कुरआनी आयात के तर्जमे में इस बात की रिआ़यत की गई है कि वह लफ़्ज़ी तर्जमा भी रहे और रवाँ तर्जमे की ज़रूरत भी पूरी कर दे। इस मक़सद के पेशे नज़र यूँ तो अक्सर जगहों पर ह़ाफ़िज़ नज़र अहमद साह़िब के तर्जमे से इस्तिफ़ादा किया गया है जो मुख़्तलिफ़ मकातिबे फ़िकर के उलमाए किराम का नज़रे सानी शूदाः और मुत्तफ़क़ अलैह है, अलबत्ता आसान तर्जमानी की ग़रज़ से दीगर मुस्तनद व मोतबर तराजिमे कुरआन से भी इस्तिफ़ादा किया गया है।
- अ़रबी ग्रामर की मश्क़ की ग़रज़ से आयात में आने वाले नए अस्मा व अफ़आल को हर सबक़ में मुस्तक़िल ज़िक्र किया गया है, टीचर की ज़िम्मेदारी है कि वह हर इस्म और फ़ेअ़ल की तलबा से **(TPI)** के साथ मशक़ करवाए, ताकि अफ़आ़ल के अबवाब और उनकी मुख़्तलिफ़ शक्लें उन के ज़ेहनों में पोख़्ता हो जाएँ।
- चूँकि अ़रबी अफ़आ़ल मुख़्तलिफ़ क़िस्म के होते हैं, इससे पहले की किताब में सह़ीह़ अफ़आ़ल सिखाए गए हैं, इस किताब में ग्रामर के ह़िस्से में कम्ज़ोर हुरूफ़ वाले (मोअ़तल अफ़आ़ल सिखाए गए हैं, इन्शा अल्लाह अगली किताब में मज़ीद फ़ीः अफ़आ़ल सिखाए जाएंगे।
- सीखने का अ़मल बेहतर हो और तलबा की दरसगाह में मौजूदगी का अंदाज़ा हो सके इस लिए हर सबक़ के साथ वर्क-बुक का ह़िस्सा रखा गया है।

अल्लाह से दुआ़ है कि वह हमें ग़लतियों से मह़फ़ूज़ रखे और अगर हो गई हों तो मुआ़फ़ फ़रमाए, अगर आप इस में कोई ग़लती देखें तो बराहे करम ज़रूर बताएँ ताकि अगले ऐडीशन में उस की तसह़ीह़ हो सके।

अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रह़ीम
info@understandquran.com
January 2021

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 1a तआरुफ़ और तअव्वुज़

कोर्स के मक़ासिदः

1. कुरआन मजीद के इब्तिदाई पाँच सफ़्हात पढ़ना (सूरह अल-बक़रा, आयात **1-37**)
2. इस कोर्स के ख़त्म पर यानी छटे सफ़्हा से कुरआन मजीद की हर सतर के **7** अल्फ़ाज़ को समझना यानी **80%** अल्फ़ाज़ को सीख लेना!
3. इशारों और फ़ेक़रों के ज़रीए नए अल्फ़ाज़ व मआ़नी सीखना
4. कुरआन को ज़िंदगी में लाने का तरीक़ा समझना
5. कुरआन की हर सतर में आने वाले कम्ज़ोर अफ़आ़ल को सीखना
6. **200** से ज़्यादा कुरआनी मज़मून से मुतअ़ल्लिक़ अ़रबी बोल-चाल के जुमले सीखना

कुरआन फ़हमी के दौरान पेश आने वाले दो चैलेंजस और उन का हलः

1. **अल्फ़ाज़ के मआ़नीः** इन को इशारात और फ़ेक़रों के ज़रीए याद किया जा सकता है।
2. **ग्रामरः** इस को **TPI** और अ़रबी बोल-चाल के ज़रीए सीखा जा सकता है।

इशारात और उन के फ़ायदेः

आ़म तौर पर कुरआन के जो नुस्ख़े प्रिंट होते हैं उन में हर पारे में **20** सफ़्हात होते हैं। हर पारा **4** हिस्सों में तक़सीम किया गया है इस लिए हर पाव पारे में **5** सफ़्हात हैं हम इस कोर्स में शुरूअ़ के **5** सफ़्हात यानी पहला पाव पारा सीखेंगे।

इस कोर्स में हर सफ़्हे को **4** हिस्सों में तक़सीम किया गया है। हर हिस्सा एक इशारे के तौर पर पेश किया गया है। हर इशारे में एक से ज़ायद उनवानात और मज़ामीन हो सकते हैं। इशारात के कई फ़ायदे हैं, मसलनः

- इशारात की मदद से मज़मून का पता चलता है जिन में नए अल्फ़ाज़ इस्तिमाल हुए हैं।
- इशारात एक ज़ंजीर का किरदार अदा करते हैं जिन की मदद से अल्फ़ाज़ के मआ़नी को याद करना और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें दुबारा ज़ेहन में लाना आसान होता है, ज़ंजीर गोया मआ़नी को पकड़ कर रखती है।
- इन की मदद से आप पूरे सफ़्हे पर मौजूद मज़ामीन को ज़ेहन में ला सकते हैं।
- कुरआन मजीद को हिफ़्ज़ करने में इशारात बहुत मददगार होते हैं।

फ़ेक़रों (Phrases) के फ़ायदे

- फ़ेक़रे वह ज़ंजीर देते हैं जिस से नए अल्फ़ाज़ के मआ़नी को पकड़ कर रखा जा सकता है।
- आयात के मज़ामीन को याद रखने में मददगार बनते हैं।
- अल्फ़ाज़ के मुक़ाबले में फ़ेक़रे बात को बेहतर समझाते हैं। मसलन صَمَد: बेनेयाज़। اللّٰهُ الصَّمَد अल्लाह बेनेयाज़ है।
- सिर्फ़ अल्फ़ाज़ के मआ़नी याद करने के मुक़ाबले में फ़ेक़रों को और उन के मआ़नी को याद करना ज़्यादा मोअस्सिर, मुफ़ीद, दिलचस्प, और क़ाबिले अ़मल तरीक़ा है।

फ़ेक़रों को याद करने का फ़ार्मूला (R-5s-10-Loud):

जब भी आप किसी फ़ेकरे को पढ़ें, तो इस फ़ार्मूले को इस्तिमाल करेंः **R-5s-10-Loud**

- **R:Relex:** यानी आराम से पढ़िए, अगर आप मुख़्तलिफ़ ख़्यालात में घिरे हों या किसी तनाव में हों तो गहरी सांस लीजिए ताकि ज़ेहन इधर उधर न लगा रहे।
- **5s:** हवासे ख़मसा **(five senses)** को इस्तिमाल कीजिए। सुनना, देखना, सूँघना, चखना, छूना, महसूस करना। अफ़आ़ल की हरकतों का और अस्मा की शक्लों का तसव्वुर कीजिए।

www.understandquran.com

- **10 –** कम अज़ कम दस सेकण्ड इस काम को कीजिए।
- **Loud –** बुलन्द आवाज़ से कहिए।

अ़रबी बोल–चालः इस प्रेक्टिस के कई फ़ायदे हैं:

1. इस कोर्स में अ़रबी बोल-चाल के सारे जुमले कुरआनी माह़ौल से जूड़े होंगे, इस तरह़ कुरआन को समझना आसान होगा।
2. जुमलों की प्रैक्टिस से फ़ेअ़ल के मुख़्तलिफ़ सेग़े अच्छी तरह़ ज़ेहन नशीन हो जाएगें।
3. टीचर और तलबा के दरमियान और आपस में प्रैक्टिस के ज़रीए क्लास का माह़ौल active बना रहेगा।
4. ग्रामर सीखने में दिलचस्पी बनी रहेगी।

❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋

अब हम तअ़व्वुज़ को लेते हैं

مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ.	اَعُوْذُ بِاللّٰهِ
शैताने मर्दूद से।	मैं पनाह में आता हूँ अल्लाह की

मुख़्तसर शरह़ः

- तअ़व्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिह़ा (जो अगले सबक़ में आ रही है) से कई अस्बाक़ लिए जा सकते हैं। इन अस्बाक़ की बुनियाद पर हम चंद आ़दतों का ज़िक्र करेंगे, जो हम को दुनिया व आख़िरत में कामयाब बना सकती हैं। एक आ़दत का यहाँ ज़िक्र किया जा रहा है।
- اَعُوْذُ بِاللّٰهِ...: **आ़दत नंबर–1:** अपनी ह़िफ़ाज़त का हमेशा ख़्याल रखिए! यह याद रखिए कि आप शैतान के मुसलसल ह़मलों में घिरे हुए हैं और आप को मुसलसल ह़िफ़ाज़त की ज़रूरत है। शैतान किसी वक़्त भी ह़मले कर सकता है, वह घात में बैठा हुआ है।
- कुरआन पढ़ने से पहले तअ़व्वुज़ पढ़िए ताकि कुरआन की तिलावत के दौरान शैतानी वस्वसे ने आएँ, कुरआन में ग़ौर करने का मौक़ा मिले और कुरआन से हिदायत मिले।

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 1b सूरह अल–फ़ातिह़ा

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	بِسْمِ اللّٰهِ
जो बहुत मेहरबान, रह़म करने वाला है	नाम से अल्लाह के

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ③	رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
बहुत मेहरबान, रह़म करने वाला है।	(जो) रब है तमाम जहानों का।	तमाम तारीफ़ें और शुक्र अल्लाह के लिए है,

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ⑤	اِيَّاكَ نَعْبُدُ	مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ④
और सिर्फ़ तुझ ही से हम मदद चाहते हैं।	सिर्फ़ तेरी ही हम इबादत करते हैं	मालिक है दिन का बदले के।

صِرَاطَ الَّذِيْنَ	الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ⑥	اِهْدِنَا
रास्ता उन लोगों का	सीधे रास्ते की,	हिदायत दे हमें

وَلَا الضَّآلِّيْنَ ⑦	غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ	اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
और न गुमराह होने वाले।	न ग़ज़ब किया गया उन पर	तूने इन्आ़म किया उन पर,

मुख़्तसर शरह़:

इन आयात से कई अस्बाक़ लिए जा सकते हैं। इन अस्बाक़ की बुन्याद पर हम चंद आ़दतों का यहाँ ज़िक्र कर रहे हैं, जो हम को दुनिया व आख़िरत में कामयाब बना सकती हैं।

- بِسْمِ اللّٰهِ...: **आ़दत नंबर–2:** किसी भी काम को शुरूअ़ करने से पहले "بِسْمِ اللّٰهِ" कहें।
- الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ...: **आ़दत नंबर–3:** अल्लाह के बारे में हमेशा मुसबत सोच रखें, इस लिए कि वह "الرَّحْمٰنِ" और "الرَّحِيْمِ" है। अल्लाह ही पर यक़ीन रखें और पर–उम्मीद रहें कि वह हमेशा आप के साथ है और वह आप की ज़रूर मदद करेगा।
- **आ़दत नंबर–4:** हर ह़ाल में अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा कीजिए। इस लिए कि अल्लाह मुह़ब्बत और एह़सान के साथ हमारा ख़्याल रखते हुए हर ज़रूरत को पूरा करता है।
- رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ: **आ़दत नंबर–5:** इल्म ह़ासिल कीजिए और क़ायनात में ग़ौर कीजिए। इस तरह़ आप दिल की गहराई से अल्लाह की तारीफ़ कर सकेंगे।
- الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ...: **आ़दत नंबर–6:** दूसरों पर रह़म कीजिए यानी मुह़ब्बत के साथ उन का ख़्याल रखिए। ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ ने फ़रमाया "जो दूसरों पर रह़म नही करता उस पर रह़म नहीं किया जाता"। (बुख़ारी)
- مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ: **आ़दत नंबर–7:** आख़िरत को मद्दे नज़र रखते हुए हर दिन का प्लान बनाईए।
- اِيَّاكَ نَعْبُدُ...: **आ़दत नंबर–8:** रोज़ाना हर अच्छे काम से पहले इबादत की नीयत कीजिए। इस लिए कि दिल व दिमाग़ का सुकून और ह़क़ीक़ी कामयाबी सिर्फ़ इबादत ही से ह़ासिल की जा सकती है।
- وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ: **आ़दत नंबर–9:** हर चीज़ में अल्लाह की मदद तलब कीजिए। कुरआन मजीद की और ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ की सिखाई हुई दुआ़ओं को सीखिए जो अल्लाह से मदद माँगने का बेहतरीन अदब और माँगने के लिए बेहतरीन अल्फ़ाज़ सिखाती है।

www.understandquran.com

- اِهْدِنَا...: **आ़दत नंबर–10:** सीधे रास्ते को पहचानने और उस पर चलने के लिए अल्लाह से हिदायत की दुआ़ कीजिए।
- صِرَاطَ الَّذِيْنَ...: **आ़दत नंबर–11:** हमेशा अच्छे लोगों की पैरवी कीजिए। उन के बारे में मुतालआ़ कीजिए, उन की मिसाल ज़ेहन में रखते हुए अपने कामों का जायज़ा लीजिए। उन की तरह़ कामों को करने का प्लान बनाईए और फिर उस प्लान को अ़मल में लाने की कोशिश कीजिए।
- غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ...: **आ़दत नंबर–12:** बुरे लोगों से हमेशा दूर रहिए।

एक अहम मशवरा: कोशिश कीजिए कि नमाज़ में सूरह अल-फ़ातिह़ा पढ़ते हुए यह ह़दीस याद रहे ह़दीस की किताब सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रत अबूहोरैराह रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, मैं ने नमाज़ अपने और अपने बन्दे के दरमियान तक़सीम कर ली है। आधी मेरी है और आधी मेरे बन्दे की और मेरे बन्दे को में वह देता हूँ जो वो मुझ से मांगे, जब बन्दा कहता है اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿2﴾ तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है حَمِدَنِي عَبْدِيْ यानी मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ की, जब कहता है الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿3﴾ तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है اَثْنٰى عَلَيَّ عَبْدِيْ मेरे बन्दे ने मेरी सना की, जब कहता है مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿4﴾ तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है مَجَّدَنِي عَبْدِيْ यानी मेरे बन्दे ने मेरी बुज़ुर्गी ब्यान की, और जब اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿5﴾ कहता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है यह मेरे और मेरे बन्दे के दरमियान है और वह जो कुछ मुझसे माँगेगा में उसे दूँगा, और जब कहता है اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿6﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿7﴾ तो अल्लाह तआ़ला कहता है यह मेरे बन्दे के लिए है, वह जो कुछ माँगेगा सब कुछ उसे मिलेगा। (मुस्लिम)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एं और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

दुआ़: ऐ अल्लाह! मुझे इन तमाम अच्छी आ़दतों को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

प्लान: इन्शा अल्लाह मैं इन आ़दतों को याद रखने की कोशिश करूँगा, जैसे हमेशा بِسْمِ اللّٰهِ कहूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
तारीफ़ करना	حَمْد	مَحْمُوْد	حَامِد	اِحْمَدْ	يَحْمَدُ	حَمِدَ	ح م د / س	46
मालिक होना	مِلْك	مَمْلُوْك	مَالِك	اِمْلِكْ	يَمْلِكُ	مَلَكَ	م ل ك / ض	48
इबादत करना	عِبَادَة	مَعْبُوْد	عَابِد	اُعْبُدْ	يَعْبُدُ	عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
गुस्सा होना	غَضَب	مَغْضُوْب	غَاضِب	اِغْضَبْ	يَغْضَبُ	غَضِبَ	غ ض ب / س	7

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
नाम	أَسْمَاء	اِسْم
दुनिया	عَالَمُوْن، عَالَمِيْن	عَالَم
दिन	أَيَّام	يَوْم

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 1c मुत्तक़ियों के लिए हिदायत (अल–बक़राः1-2)

فِيْهِ ۛ	لَارَيْبَ ۛ	ذٰلِكَ الْكِتٰبُ	الٓمّٓ ۚ ①
इस में	नहीं है कोई शक	यह किताब है	الٓمّٓ

لِّلْمُتَّقِيْنَ ②	هُدًى
परहेज़गारों के लिए।	हिदायत है

सूरह अल–बक़राः इस सूरह में हमारे लिए यह पैग़ाम है कि ज़मीन पर एक ह़क़ीकी ख़लीफ़ा कैसा हो और सच्चा मुसलमान कैसे बना जाए। यहाँ इस सूरह के कुछ अहम मज़ामीन ज़िक्र किए जा रहे हैं:

- कुरआन मजीद मुत्तक़ियों के लिए हिदायत की किताब है, मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों (ह़क़ का इंकार करने वालों) के लिए नहीं।
- यह हिदायत सब से पहले इंसान ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अ़ता की गई थी।
- हम से पहले बनी इस्राईल को भी दी गई जिन्होंने इस की क़दर नहीं की।
- उन से पहले ह़ज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दी गई जो इंसानियत के इमाम हैं। क्योंकि वह सच्चे और ह़क़ीक़ी मुस्लिम यानी फ़रमाँबरदार थे।
- ऐ मुसलमानों! अब यह हिदायत तुम्हें दी गई है, लिह़ाज़ा सच्चे और ह़क़ीक़ी मुसलमान बन कर ज़िंदगी गुज़ारने की फ़िक्र करो।
- डस के बाद तफ़सीली हिदायात दी गई हैं मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर, जैसे क़िबला, सब्र, नमाज़, क़िसास, रोज़ा, ह़ज, निकाह़, तलाक़, इन्फ़ाक़, क़र्ज़, वग़ैरह। आख़िर में बहुत ही अहम दुआ़ पर इस सूरह का इख़्तेताम हुआ है।

सूरह अल–बक़रा की फ़ज़ीलतः

- रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः "दो रौशन सूरतें (सूरह अल–बक़रा और सूरह आले इमरान) पढ़ा करो, क्योंकि यह दोनों क़्यामत के दिन इस तरह़ आएँगी जिस तरह़ दो बादल हों या दो सायबान हों।" (मुस्लिमः **804-805**)
- ह़ज़रत अबू हुरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः "अपने घरों को क़ब्रस्तान न बनाओ, शैतान उस घर से भाग जाता है जिस में सूरह अल–बक़रा पढ़ी जाती है।" (मुस्लिमः**780**)

मुख़्तसर शरहः

- "الٓمّٓ": इन हुरुफ़ को "हुरुफ़े मुक़त्तआ़त" कहा जाता है, यानी ऐसे हुरुफ़ जिन्हें अलग अलग कर के पढ़ा जाता है। अल्लाह तआ़ला ही इन के मआ़नी के बारे में जानते हैं।
- لَارَيْبَ فِيْهِ: कुरआन में किसी तरह़ का शक़ व शुबहा नहीं! यह एक ख़ास जुमला है जो आप को किसी किताब में नज़र नहीं आता। हर किताब में लिखा होता है कि यह पहला एडिशन है, कोई कमी या ग़लती नज़र आए तो बराहे करम बताएँ ताकि अगले एडिशन में तस्ह़ीह़ की जा सके। जबकि कुरआन का आग़ाज़ ही हो रहा है इस बात से कि इस में कोई शक़ नहीं!
- هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ: कुरआन उन लोगों के लिए हिदायत है जो अपने रब से डरते हैं और जिन्हें इस बात का ख़ौफ़ होता है कि कहीं अल्लाह उन से नाराज़ न हो जाए। अगर किसी शख़्स के पास बहुत ज़्यादा इल्म हो (चाहे इस्लाम का इल्म ही क्यों न हो) लेकिन तक़वा न हो तो वह हिदायत नहीं पा सकता।
- हिदायत यानी यह कि क्या करना है? कब करना है? कैसे करना है? हमारी इस ज़िंदगी में हिदायत सब से अहम चीज़ है और हमें ज़िंदगी के हर मोड़ पर, हर लम्ह़ा और हर काम में हमें इस की ज़रुरत है। अगर हम हिदायत पर हों तो हम वाज़ेह़ अह़दाफ़ के साथ और बग़ैर किसी गुमराही के ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं।

➢ हज़रत मोहम्मद ﷺ यह दुआ पढ़ा करते थेः اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْـَٔلُكَ الْهُدٰى وَالتُّقٰى وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰى तर्जमाः ऐ अल्लाह! बेशक मैं सवाल करता हूँ तुझ से हिदायत का, तक़वा का, पाक़दामनी और बे-नियाज़ी का। (मुस्लिमः **2721**)

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएं और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- कुरआन में कोई शक नहीं।
- कुरआन हिदायत की किताब है।
- मुत्तक़ियों के लिए हिदायत

दुआः ऐ अल्लाह! कुरआन पर मेरा ईमान ज़्यादा फ़रमा! और मुझे हमेशा इस किताब को हिदायत की ग़र्ज़ से पढ़ने की तौफ़ीक़ दे!

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं कुरआन से हिदायत लेने में अपना वक़्त सर्फ़ करूंगा। मैं तक़वा को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाने की कोशिश करूंगा।

अस्मा, अफ़्आलः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़आल नीचे दिए गए है।

इन दो आयतों में एक भी तीन हर्फ़ी सहीह फ़ेअल (यानी فتح، نصر، ضرب، سمع के जैसा फ़ेअल) नहीं आया है।

अस्मा		
मआनी	जमा	वाहिद
किताब	كُتُب	كِتٰب
डरने वाला	مُتَّقُوْن، مُتَّقِيْن	مُتَّقٍ

www.understandquran.com

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 1d मुत्तकियों की सिफ़ात (अल–बक़रा: 3-5)

بِالْغَيْبِ	يُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ
ग़ैब पर	ईमान लाते हैं	जो लोग

يُنْفِقُوْنَ ﴿3﴾	رَزَقْنٰهُمْ	وَمِمَّا	الصَّلٰوةَ	وَيُقِيْمُوْنَ
वह ख़र्च करते हैं।	हम ने उन को रिज़्क़ दिया है	और उस से जो	नमाज़	और क़ायम करते हैं

وَمَآ	اُنْزِلَ اِلَيْكَ	بِمَآ	يُؤْمِنُوْنَ	وَالَّذِيْنَ
और जो	नाज़िल किया गया आप की तरफ़	उस पर जो	ईमान लाते हैं	और वह लोग जो

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿4﴾	وَبِالْاٰخِرَةِ	مِنْ قَبْلِكَ	اُنْزِلَ
वह सब यक़ीन रखते हैं।	और आख़िरत पर	आप से पहले,	नाज़िल किया गया

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿5﴾	وَاُولٰٓئِكَ هُمُ	مِّنْ رَّبِّهِمْ	عَلٰى هُدًى	اُولٰٓئِكَ
फ़लाह़ पाने वाले है।	और वही लोग	अपने रब की तरफ़ से,	हिदायत पर हैं	वह लोग

मुख़्तसर शरह़:

- मुत्तक़ीन की सिफ़ात:
- يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ...: **पहली सिफ़्त: ग़ैब पर ईमान लाते हैं:** बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जिन के बारे में हम नहीं जानते हैं। चूंकि हमारे ह़वासे ख़मसा मह़दूद हैं इस लिए पूरी ह़क़ीक़त को समझना और जानना हमारे लिए मुश्किल होता है। मुत्तक़ीन की पहली सिफ़्त यह है कि वह ग़ैब पर ईमान लाते हैं यानी: अल्लाह पर, फ़रिश्तों पर, किताबों पर, रसूलों पर, आख़िरत (जन्नत व जहन्नम, अल्लाह से मुलाक़ात वग़ैरह) पर और अच्छी और बुरी तक़दीर पर ईमान लाते हैं।
- وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ...: **दूसरी सिफ़्त: नमाज़ क़ायम करते हैं:** दरअसल नमाज़ को क़ायम करना तक़्वा को बढ़ाता है और ग़ैब पर ईमान को मज़बूत करता है। बाज़ मर्तबा आप कुछ मुसलमानों या लीडरों को देखेंगे जो कुरआन मजीद की आयात की अजीब व ग़रीब तशरीह़ ब्यान करते हैं। चूंकि वह पाबन्दी से नमाज़ नहीं पढ़ते, इसी लिए उन पर हिदायत की राह नहीं खुलती।
- وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ...: **तीसरी सिफ़्त: अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं:** याद रखें कि हिदायत का रास्ता जेब से हो कर जाता है! मुत्तक़ीन इस बात को अच्छी तरह़ समझते हैं कि माल अल्लाह का तोह़फ़ा है, इसी लिए वह अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं। वह सिर्फ़ ज़कात ही नहीं देते हैं बल्कि उस के अ़लावा भी ख़र्च करते रहते हैं, मसलन खुद पर, अपने वालेदैन पर, बीवी बच्चों और ग़रीबों पर ख़र्च करते हैं, इसी तरह़ मस्जिद, मदरसा, तालीम, दीन की दावत के काम वग़ैरह में भी ख़र्च करते हैं।
- وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ...: **चौथी सिफ़्त: पिछली किताबों (तौरात, इन्जील वग़ैरह) और कुरआन और ह़दीस पर ईमान लाते हैं:** ईमान का यह ह़िस्सा नुबूवत के झूठे दावेदारों और उन के मानने वालों के लिए तमाम दरवाज़ों को बन्द कर देता है, जैसे क़ादियानी, अह़मदी वग़ैरह। इस लिए कि अल्लाह ने यह नहीं कहा कि ऐ मोह़म्मद ﷺ! जो आप के बाद नाज़िल होगा, उस पर ईमान लाते हैं।

www.understandquran.com

- وَبِالْاٰخِرَةِ...: **पाँचवी सिफ़तः आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं:** ईमान का यह हिस्सा नमाज़ों को क़ायम करने, अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने और अल्लाह की नाज़िल करदः तमाम किताबों पर ईमान लाने के लिए निहायत ज़रूरी है।
- "مِنْ رَّبِّهِمْ": ऐसे लोग अपने रब की जानिब से हिदायत पर हैं: हक़ीक़त यह है कि हिदायत अल्लाह की तरफ़ से मिलने वाला सब से अहम तोहफ़ा है। इसी लिए हमें हमेशा हिदायत की दुआ माँगते रहना चाहिए:

"اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ"

- मुत्तक़ीन दुनिया और आख़िरत में कामयाब होंगे।
- जो कोई इन पाँच सिफ़ात में जितना ज़्यादा मज़बूत होगा वह उतनी ज़्यादा हिदायत हासिल करेगा और आला से आला कामयाबी हासिल करेगा।

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएं और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

मुत्तक़ीन की **5** सिफ़ातः

1. वह ग़ैब पर ईमान लाते हैं।
2. नमाज़ क़ायम करते हैं।
3. अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं।
4. कुरआन मजीद पर और उस से पहले नाज़िल करदः आसमानी किताबों पर ईमान लाते हैं।
5. और आख़िरत पर ईमान लाते हैं।

इन पाँच सिफ़ात वालों को हिदायत मिलेगी और कामयाबी भी।

दुआः ऐ अल्लाह इन **5** आदात को अपनाने में मेरी मदद फ़रमा! رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं हमेशा अल्लाह के रास्ते में वक़्त सर्फ़ करने का प्लान बनाऊँगा।

अस्मा, अफ़्आलः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आल नीचे दिए गए है।

अफ़्आलः हर फ़ेअ़ल के तहत दिए गए तीन अफ़्आल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआनी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
रिज़्क़ देना	رِزْق	مَرْزُوْق	رَازِق	اُرْزُقْ	يَرْزُقُ	رَزَقَ	ر ز ق / ن	122

अस्मा

मआनी	जमा	वाहिद
नमाज़	صَلَوَات	صَلٰوة
कामयाब	مُفْلِحُوْن، مُفْلِحِيْن	مُفْلِح

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2a काफ़िरीन को हिदायत नहीं (अल-बक़राः 6-7)

اَمۡ لَمۡ تُنۡذِرۡهُمۡ	ءَاَنۡذَرۡتَهُمۡ	سَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ	اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
या आप न डराएँ उन्हें	चाहे आप डराएँ उन्हें	बराबर है उन पर	बे-शक जिन्होंने ने कुफ़्र क्या
وَعَلٰى سَمۡعِهِمۡ	عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ	خَتَمَ اللّٰهُ	لَا يُؤۡمِنُوۡنَ 6
और उन के कानों पर,	उन के दिलों पर	मुहर लगा दी है अल्लाह ने	वह ईमान नहीं लाएँगे।
عَذَابٌ عَظِيۡمٌ 7	وَّلَهُمۡ	غِشَاوَةٌ	وَعَلٰٓى اَبۡصَارِهِمۡ
बड़ा अज़ाब है।	और उन के लिए	पर्दा है,	और उन की आँखों पर

मुख़्तसर शरहः

- اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا...: वह लोग जिन के सामने हक़ पेश किया गया और फिर उन्होंने उसे ठुकरा दिया, या तो तकब्बुर की वजह से या फिर उसमें शक की बुनियाद पर।
- ءَاَنۡذَرۡتَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تُنۡذِرۡهُمۡ...: इस आयत में नबी ﷺ से ख़िताब है जिन्होंने मक्का के लोगों को दीन की दावत देने में अपनी हर मुमकिन कोशिश की। नबी ﷺ से बेहतरीन दाई कोई हो ही नहीं सकता, इस के बावजूद उन्होंने आप ﷺ की बात नहीं मानी!
- मोमिनों के दिलों में तक़्वा होता है, काफ़िरों के दिलों पर मुहर, और मुनाफ़िक़ों के दिलों में बीमारी होती है।
- خَتَمَ اللّٰهُ...: **काफ़िरों के लिए दुनिया में सज़ाः** उन के दिलों और उन के कानों पर मुहर लगा दी जाती है जबकि उन की आँखों पर पर्दा डाल दिया जाता है। अब वह देख सकते हैं, न सुन सकते हैं और न ही उन के दिलों में हिदायत का नूर दाख़िल हो सकता है। दिल मरकज़ है, अगर उस पर मुहर लगा दी जाए तो कोई निशानी या नसीहत फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती।
- غِشَاوَةٌ का मतलब है पर्दा। याद रखें कि वह देख नहीं सकते, तो उनकी आँखों पर क्या है? पर्दा।
- وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ...: **काफ़िरों के लिए आख़िरत की सज़ाः** बड़ा अज़ाब। जब अल्लाह अज़ाब की बात करे तो वह खुद बहुत ही भयानक अज़ाब होगा। उस पर अगर अज़ीम यानी बड़ा अज़ाब कहा जाए तो हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते कि वह कैसा सख़्त अज़ाब होगा, अस्तग़फ़िरुल्लाह।

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- काफ़िरों को हिदायत नहीं मिलेगी।
- दुनिया में सज़ाः उन के दिलों और कानों पर मुहर, और उनकी आँखों पर पर्दा।
- आख़िरत में सज़ाः बड़ा अज़ाब।

दुआ: रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ किया करते थे: اَللّٰهُمَّ إِنِّيٓ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कुफ़्र से, फ़क्र व फ़ाक़ा से और क़ब्र के अज़ाब से।

प्लान: इन्शा अल्लाह! मैं सच सुनूंगा चाहे वह मुझे तकलीफ़ दे, चाहे वह मेरे मुआविन की तरफ़ से हो या किसी मांगने वाले की जानिब से।

अस्मा, अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़्ल के तहत दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ذ	461
मोहर लगाना	خَتْم	مَخْتُوْم	خَاتِم	اِخْتِمْ	يَخْتِمُ	خَتَمَ	خ ت م / ض	6

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाहिद
दिल	قُلُوْب	قَلْب
आँख	أَبْصَار	بَصَر

रसूलुल्लाह ﷺ : خَاتَمَ النَّبِيِّينَ

www.understandquran.com

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2b मुनाफ़िक़ीन को हिदायत नहीं (अल–बक़राः 8-10)

وَمِنَ النَّاسِ	مَنۡ يَّقُوۡلُ	اٰمَنَّا بِاللّٰهِ	وَبِالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ	وَمَا هُمۡ
और लोगों में से	जो कहते हैं	हम ईमान लाए अल्लाह पर	और आख़िरत के दिन पर	और नहीं हैं वह
بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿8﴾	يُخٰدِعُوۡنَ اللّٰهَ	وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۚ	وَمَا يَخۡدَعُوۡنَ	
ईमान वाले।	वह अल्लाह को धोका देते हैं	और उन लोगों को जो ईमान लाए,	और वह नहीं धोका दे रहे हैं	
اِلَّآ اَنۡفُسَهُمۡ	وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿9﴾	فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ	مَّرَضٌ ۙ	فَزَادَهُمُ اللّٰهُ
मगर अपने आप को	और वह शोऊर नहीं रखते।	उन के दिलों में	बीमारी है	पस बढ़ा दिया उन को अल्लाह ने
مَرَضًا ۚ	وَلَهُمۡ	عَذَابٌ اَلِيۡمٌۢ ۙ	بِمَا	كَانُوۡا يَكۡذِبُوۡنَ ﴿10﴾
बीमारी में,	और उन के लिए	दर्दनाक अज़ाब है	क्योंकि	वह झूट बोला करते थे।

मुख़्तसर शरह:

- وَمِنَ النَّاسِ...: तीसरी क़िस्म के लोग (मुनाफ़िक़ीन) बहुत ख़तरनाक हैं, जो ज़बान से तो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाते हैं लेकिन वह दिल से ईमान लाने वाले नहीं।
- يُخَادِعُونَ اللهَ...: मुनाफ़िक़ अल्लाह और अल्लाह के मानने वालों को धोखा देते हैं लेकिन अल्लाह अपने मानने वालों की हिफ़ाज़त करता है। अन्क़रीब मुनाफ़िक़ों को पता चल जाएगा कि वह आग के साथ खेल रहे हैं लेकिन अभी उन्हें इस बात का शोऊर नहीं।
- فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ...: दिलों की बीमारी दो क़िस्म की होती है: **(1)** शक़ की बीमारी यानी इस्लाम के बारे में उनको शक़ है क्योंकि वह क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते और न आख़िरत की फ़िकर करते हैं। **(2)** ख़्वाहिशात की बिमारी यानी ह़राम और ह़लाल की तमीज़ किए बग़ैर हर ख़्वाहिश को पूरा करना। शक़ और ख़्वाहिशात की बीमारियाँ इंसान को निफ़ाक़ की तरफ़ ले जाती हैं।
- فَزَادَهُمُ اللهُ...: मुनाफ़िक़ों की दुनिया में सज़ाः दिल के मर्ज़ में ज़्यादती। आख़िरत में सज़ाः दर्दनाक अज़ाब।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- मुनाफ़िक़ों का बर्ताव मोमिनों ही की तरह़ होता है लेकिन ह़क़ीक़त में वह दूसरों को धोखा देते हैं।
- क्यों? इस लिए कि मुनाफ़िक़ीन के दिलों में मर्ज़ होता है।
- मुनाफ़िक़ों की दुनिया में सज़ाः मर्ज़ में ज़्यादती।
- आख़िरत में सज़ाः दर्दनाक अज़ाब।

www.understandquran.com

दुआ: ऐ अल्लाह! मेरे ईमान में ज़्यादती फ़रमा, निफ़ाक़ से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और शुकूक और बुरी ख़्वाहिशात से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा!

आप ﷺ की अक्सर पढ़ी जाने वाली दुआ: يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ ऐ दिलों को फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर जमा दे!

प्लान: इन्शा अल्लाह! मैं अपने दिल को पाक करूँगा, कुरआन व ह़दीस का मुतालआ़ कर के और अच्छे लोगों के साथ रह कर।

अस्मा, अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
धोका देना	خِدَاع	مَخْدُوْع	خَادِع	اِخْدَعْ	يَخْدَعُ	خَدَعَ	خ د ع / ف	3
महसूस करना	شُعُوْر	مَشْعُوْر	شَاعِر	اُشْعُرْ	يَشْعُرُ	شَعَرَ	ش ع ر / ن	30
झूट बोलना	كَذِب	مَكْذُوْب	كَاذِب	اِكْذِبْ	يَكْذِبُ	كَذَبَ	ك ذ ب / ض	76

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
दिन	أَيَّام	يَوْم
नफ़्स, जान	أَنْفُس	نَفْس
बीमारी	أَمْرَاض	مَرَض

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2c — फ़सादी और बेवकूफ़ (अल-बक़राः 11-13)

اِنَّمَا نَحْنُ	قَالُوْٓا	فِى الْاَرْضِ	لَا تُفْسِدُوْا	لَهُمْ	وَاِذَا قِيْلَ
हम तो बस	(तो) वह कहते हैं	ज़मीन में	फ़साद न फैलाओ	उन से	और जब कहा जाता है

الْمُفْسِدُوْنَ	هُمُ	اِنَّهُمْ	اَلَآ	مُصْلِحُوْنَ (11)
फ़साद मचाने वाले	वही हैं	बे-शक वह	जान लो!	इस्लाह़ करने वाले हैं।

اٰمِنُوْا	لَهُمْ	قِيْلَ	وَاِذَا	لَّا يَشْعُرُوْنَ (12)	وَلٰكِنْ
ईमान लाओ	उन से	कहा जाता है	और जब	वह नहीं समझते।	और लेकिन

اٰمَنَ	كَمَآ	اَنُؤْمِنُ	قَالُوْٓا	اٰمَنَ النَّاسُ	كَمَآ
ईमान लाए	जैसे	क्या हम ईमान लाएँ	(तो) वह कहते हैं	(और) लोग ईमान लाए	जैसे

لَّا يَعْلَمُوْنَ (13)	وَلٰكِنْ	السُّفَهَآءُ	هُمُ	اِنَّهُمْ	اَلَآ	السُّفَهَآءُ
वह नहीं जानते।	और लेकिन	बेवकूफ़	वही हैं	बे-शक	जान लो!	बेवकूफ़ लोग?

मुख़्तसर शरह़:

- لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ...: मुनाफ़िक़ीन अन्दर से तो कुफ़्र पर अ़मल करते थे, मदीना और आसपास के दुश्मनों के वफ़ादार थे और मुसलमानों या इस्लाम के ह़क़ में बिल्कुल भी मुख़लिस नहीं थे, इस लिए वह फ़साद ही फैला रहे थे।
- اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ: जब उनसे कहा गया की फ़साद न फैलाओ। तो वह बात मानने के बजाए उल्टे दावे करने लगे कि हम तो इस्लाह़ कर रहे हैं। चुनान्चः अल्लाह ने बताया कि अस्ल फ़सादी वही हैं।
- जो इस्लाम को नहीं मानता वह अपनी ख़्वाहिशात पर अ़मल करेगा जिसके नतीजे में उसकी बातें और उस के काम फ़साद ही का सबब बनेंगे।
- ऐसा मुस्लिम मुआ़शिरा जहाँ कुरआन व सुन्नत पर अ़मल न हो, वहाँ फ़साद ही होता रहेगा, अगरचः वहाँ के लोग तहज़ीब की बात करें। अगर हम अल्लाह की किताब पर अपनी ज़िंदगी और अपने मुआ़शिरे में अ़मल करें तो सिर्फ़ बिगाड़ ही फैलेगा।
- "اَلنَّاس" से मुराद सहाबाए किराम रज़िअल्लाहु अन्हु अजमईन हैं जो उस वक़्त भी और आज तक के लिए सच्चे मोमिनों के लिए बेहतरीन नमूना हैं। मुनाफ़िक़ों से जब कहा जाता है कि उन के जैसा ईमान लाओ तो कहते हैं कि हम तो बेवकूफ़ों जैसा ईमान नहीं लाना चाहते।
- उन के लिए अपना पैसा और पोज़िशन बहुत अहम थी, उन्हें यक़ीन नहीं था के मदीना के अतराफ़ दुश्मनों के दर्मियान मुसलमान बच सकेंगे, इस लिए वह उस वक़्त के मुश्रिकों और यहूदियों से भी गहरे तअ़ल्लुक़ात रखना चाहते थे। वह इख़्लास के साथ इस्लाम की पैरवी करने वाले मुसलमानों को बेवकूफ़ समझते थे। मगर उन के मरने पर ही उन्हें अपनी बेवकूफ़ी और ह़िमाक़त का एहसास हो गया होगा और कुछ लोगों ने तो अपनी ज़िंदगी ही में देख लिया कि मुसलमानों को कोई नहीं तबाह कर सका।

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- मुनाफ़िक़ीन फ़साद फैलाते हैं और ख़ुद इसलाह़ करने का दावा करते हैं।
- मुनाफ़िक़ीन बेवक़ूफ़ हैं क्योंकि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया को तरजीह़ दी।

दुआः ऐ अल्लाह! मुझे सहाबाए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के नक़्शे कदम पर चलने की तौफ़ीक़ दे!

اَللّٰهُمَّ إِنِّيٓ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْأَخْلَاقِ ऐ अल्लाह! बेशक़ मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बदबख़्ती, निफ़ाक़ और बुरे अख़्लाक़ से।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं क़ुरआन व सुन्नत की रौशनी में अपने आप को बेहतर से बेहतर बनाने का प्लान बनाऊँगा।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
मह़सूस करना	شُعُوْر	مَشْعُوْر	شَاعِر	اُشْعُرْ	يَشْعُرُ	شَعَرَ	ش ع ر ذ	30
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م س	518
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1715

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाहि़द
इस्लाह़ करने वाला	مُصْلِحُوْن، مُصْلِحِيْن	مُصْلِح
फ़साद मचाने वाला	مُفْسِدُوْن، مُفْسِدِيْن	مُفْسِد
बेवक़ूफ़	سُفَهَاء	سَفِيْه

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2d दो रुख़े (अल-बक़रा: 14-16)

اِلٰى	وَاِذَا خَلَوْا	اٰمَنَّا ۚ	قَالُوْٓا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	وَاِذَا لَقُوا
साथ	और जब तन्हा होते हैं	हम ईमान ला चुके,	(तो) वह कहते हैं	ईमान लाए	उन लोगों से जो	और जब वह मिलते हैं

مُسْتَهْزِءُوْنَ (14)	اِنَّمَا نَحْنُ	اِنَّا مَعَكُمْ ۙ	قَالُوْٓا	شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ
मज़ाक़ कर रहे हैं।	हम तो बस	बेशक हम तुम्हारे साथ हैं	(तो) वह कहते हैं	अपने शैतानों के

يَعْمَهُوْنَ (15)	فِيْ طُغْيَانِهِمْ	وَيَمُدُّهُمْ	بِهِمْ	اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ
वह भटकते फिर रहे हैं।	उन की सरकशी में	और ढील देता है उन को	उन के साथ	अल्लाह मज़ाक़ करता है

بِالْهُدٰى ۠	الضَّلٰلَةَ	اشْتَرَوُا	الَّذِيْنَ	اُولٰٓئِكَ
हिदायत के बदले,	गुमराही को	ख़रीद लिया है	जिन्होंने	यही वह लोग हैं

مُهْتَدِيْنَ (16)	وَمَا كَانُوْا	تِّجَارَتُهُمْ	فَمَا رَبِحَتْ
हिदायत पाने वाले।	और न थे वह	उन की तिजारत ने,	पस न फ़ायदा दिया

मुख़्तसर शरह:

- وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا...: मुनाफ़िक़ जब ईमान वालों से मिलते हैं तो अपने ईमान का ऐलान करते हैं और ख़ुद को ईमान वाला, मुसलमानों का वफ़ादार और दोस्त ज़ाहिर करते हैं। वह यह सब मुसलमानों को धोखा देने के लिए करते हैं ताकि मुसलमानों के दर्मियान रह कर जो दुनिया के फ़ायदे मिल सकते हैं वह ले लें।
- وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ...: यानी मुनाफ़िक़ों के सरदार और मदीना के यहूदी जो उस वक़्त इस्लाम के खिलाफ़ बढ़-चढ़ कर काम कर रहे थे, उन से जब यह लोग मिलते हैं तो कहते कि हम तो तुम्हारे साथ हैं।
- اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ...: अल्लाह तआला उन से मज़ाक़ कर रहा है, यानी दुनिया में तो उन्हें पता नहीं चलेगा कि अल्लाह उनसे कैसा सख़्त नाराज़ है, वह समझते रहेंगे कि हम तो चालाक हैं मगर आख़िरत में उन्हें जहन्नम के निचले हिस्से में डाल दिया जाएगा।
- हमें किसी को भी मुनाफ़िक़ कह कर नही पुकारना चाहिए। दिलों का हाल सिर्फ़ अल्लाह जानता है। हम को अपनी फ़िकर करनी चाहिए और दूसरों को समझाते वक़्त अपने आपको बड़ी चीज़ नहीं समझना चाहिए।

अस्बाक़, दुआ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- मुनाफ़िक़ीन दो रुख़े और मज़ाक उड़ाने वाले हैं।
- अल्लाह उनको उनकी सर्कशी में बढ़ाता है।
- वह नुक़सान उठाने वाले हैं, हिदायत याफ़ता नहीं।

दुआ: ऐ अल्लाह! मुझे निफ़ाक़ से बचा और सच्चा मोमिन बना। लोगों के साथ ख़ैर ख़्वाही का मुआमिला करने में मेरी मदद फ़रमा!

प्लान: इन्शा अल्लाह! मैं हरगिज़ किसी का मज़ाक नहीं उड़ाऊँगा।

अस्मा, अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तहत दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
भटकना	عَمَه	–	عَامِه	اِعْمَهْ	يَعْمَهُ	عَمِهَ	ع م ه س	7
तन्हा होना	خُلُوّ	–	خَالٍ	اُخْلُ	يَخْلُوْ	خَلَا	خ ل و دع	26

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाहि़द
शैतान	شَيٰطِيْن	شَيْطٰن
मज़ाक़ करने वाला	مُسْتَهْزِءُوْن، مُسْتَهْزِءِيْن	مُسْتَهْزِئ

www.understandquran.com

www.understandquran.com

आग की मिसाल (अल–बक़राः 17-18)

فَلَمَّآ اَضَآءَتْ	اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ	كَمَثَلِ الَّذِى	مَثَلُهُمْ
फिर जब उस (आग) ने रौशन कर दिया	जलाई आग,	उस शख़्स की तरह़ है जिसने	उन की मिसाल

فِىْ	وَتَرَكَهُمْ	بِنُوْرِهِمْ	ذَهَبَ اللّٰهُ	مَا حَوْلَهٗ
में	और छोड़ दिया उन्हें	उन की रोशनी	(तो) छीन ली अल्लाह ने	जो उस के इर्द-गिर्द था

لَا يَرْجِعُوْنَ 18	فَهُمْ	عُمْىٌ	بُكْمٌ	صُمٌّ	لَّا يُبْصِرُوْنَ 17	ظُلُمٰتٍ
नहीं लौटेंगे।	पस वह	अंधे हैं	गूंगे हैं	बहरे हैं	(कि) वह नहीं देखते।	अंधेरों

मुख़्तसर शरह़ः

- مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى...: मुनाफ़िक़ीन की पहली मिसालः आग और उस से निकलने वाली रौशनी। यह मिसाल इस तरह़ समझी जा सकती हैः जब ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ हिदायत की रोशनी लेकर आए तो अच्छे लोगों ने उसे क़ुबूल कर लिया। मुनाफ़िक़ीन ने अपनी बुरी ख़्वाहिशात की बिना पर उसे कबूल नहीं किया, तो अल्लाह ने उनकी रोशनी छीन ली यानी उनकी समझदारी और अक़्ल को छीन लिया और उन्हें गुमराही के अंधेरों में भटकता छोड़ दिया।
- صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ...: न वह ह़क़ सुनते हैं, न ह़क़ बोलते हैं, न ह़क़ देखते हैं। यह पक्के मुनाफ़िक़ है इनके वापस आने की कोई उम्मीद नहीं।
- صُمٌّ और بُكْمٌ के माअ़ना याद रखने के लिए आसान तरीक़ाः صُمٌّ (जो सुन नहीं सकता), بُكْمٌ (जो बोल नहीं सकता)
- जो जान बूझ कर बहरा, गूंगा, और अंधा बना रहे तो ऐसे इंसान से कोई उम्मीद नहीं कि ह़क़ की तरफ़ लौट आए।
- कभी किसी को हरगिज़ मुनाफ़िक़ न कहिए क्योंकि दिलों के ह़ाल को सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है। अपनी फ़िकर कीजिए और खुद की गलतियों की इस्लाह कीजिए। दूसरों को मशकवरा ज़रूर दीजिए मगर इस ख़्याल के साथ नहीं कि आप उनसे बेहतर या अच्छे हैं।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

मिसालः आग और उस से निकलने वाली रोशनी

- मुनाफ़िक़ीन ने इस्लाम की रोशनी को देखा लेकिन उन्होंने उसे क़ुबूल नहीं किया,
- अल्लाह ने उनकी रोशनी (बसीरत) को छीन लिया,
- गूंगा, बहरा, और अंधा इंसान कभी भी ह़क़ की तरफ़ नहीं लौट सकता।

www.understandquran.com

दुआ: اَللّٰهُمَّ أَرِنَا الْحَقَّ حقًّا وَّارْزُقْنَا اتِّبَاعَهٗ وَأَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلًا وَّارْزُقْنَا اجْتِنَابَهٗ ऐ अल्लाह! हमें ह़क़ को ह़क़ के तौर पर दिखा और हमें उसकी पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और हमें बातिल को बातिल के तौर पर दिखा और हमें उस से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

प्लान: मैं हमेशा अपने कान ज़बान और आँखों को ह़क़ बात सुनने, बोलने और देखने के लिए इस्तेमाल करूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
जाना	ذَهَاب	–	ذَاهِب	اِذْهَبْ	يَذْهَبُ	ذَهَبَ	ذ ه ب ف	37
छोड़ना	تَرْك	مَتْرُوْك	تَارِك	اُتْرُكْ	يَتْرُكُ	تَرَكَ	ت ر ك ن	41
लौटना	رُجُوْع	مَرْجُوْع	رَاجِع	اِرْجِعْ	يَرْجِعُ	رَجَعَ	ر ج ع ض	86

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
मिसाल	أَمْثَال	مَثَل
रोशनी	أَنْوَار	نُوْر
तारीकी	ظُلُمَات	ظُلْمَة

www.understandquran.com

क़ुरआन सफ़्हा 3b — बारिश की मिसाल (अल-बक़राः 19-20)

يَجْعَلُوْنَ	وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ	فِيْهِ ظُلُمٰتٌ	مِّنَ السَّمَآءِ	كَصَيِّبٍ	اَوْ
वह डालते हैं	और गरज और चमक	जिस में अंधेरे हों	आसमान से	जैसे बारिश	या

بِالْكٰفِرِيْنَ (19)	وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ	حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ	مِّنَ الصَّوَاعِقِ	فِيْٓ اٰذَانِهِمْ	اَصَابِعَهُمْ
काफ़िरों को।	और अल्लाह घेरे हुए है	मौत के डर से,	कड़क की वजह से	अपने कानों में	अपनी उंगलियाँ

لَهُمْ	اَضَآءَ	كُلَّمَآ	اَبْصَارَهُمْ ؕ	يَخْطَفُ	يَكَادُ الْبَرْقُ
उन पर	चमकती है	जब भी	उन की आंखों को,	उचक ले	क़रीब है कि बिजली

شَآءَ اللّٰهُ	وَلَوْ	قَامُوْا ؕ	عَلَيْهِمْ	وَاِذَآ اَظْلَمَ	مَّشَوْا فِيْهِ ۙ
चाहता अल्लाह	और अगर	(तो) खड़े रह जाते हैं,	उन पर	और जब अंधेरा छा जाता है	(तो) वह चलने लगते हैं उस (की रोशनी) में

قَدِيْرٌ ۧ (20)	عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ	اِنَّ اللّٰهَ	وَاَبْصَارِهِمْ ؕ	بِسَمْعِهِمْ	لَذَهَبَ
क़ादिर है।	हर चीज़ पर	बेशक अल्लाह	और उन की बसारत को,	उन की समाअत को	तो ज़रूर छीन लेता

मुख़्तसर शरह़ः

- اَوْ كَصَيِّبٍ...: मुनाफ़िक़ीन की दूसरी मिसालः अंधेरी रात में बारिश, साथ में गरज, बिजलियाँ, और ज़बरदस्त कड़ाके।
  - यह मिसाल इस तरीके से समझी जा सकती हैः इस्लाम बारिश के मानिन्द है, और इस्लाम के दुश्मनों की तरफ़ से होने वाली सख़्त मुख़ालिफ़त तारीक़ी, गरज और चमक की तरह़ है। मुनाफ़िक़ीन आज़माईशो से बचने की कोशिशें करते हैं हालांकि वह उनसे बच नहीं सकते। वह ह़क़ पर अ़मल करने से डरते हैं क्योंकि उसमें उन्हें मुश्किल ह़ालात का मुकाबला करना होता है।
- كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ...: वह इस्लाम पर सिर्फ़ उसी वक़्त अ़मल करते हैं जब कोई बात उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ हो। लेकिन जब किसी आज़माईश या इम्तिहान का सामना हो या कोई क़ुर्बानी देना हो तो वह पीछे हट जाते हैं।
- وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ...: अगर अल्लाह चाहता तो उनकी देखने और सुनने की सलाह़ियतों को ख़त्म कर देता, क्योंकि उन्होंने ह़क़ को जान लेने के बाद उस पर अ़मल नहीं किया। अल्लाह तआ़ला उनको मोहलत देना चाहता है कि वह अपने शुकूक व शुबहात को दूर कर ले और अपनी ख़्वाहिशों से किनारा कर लें; चुनांचः अल्लाह तआ़ला ने उनकी देखने और सुनने की ताकतों को बाक़ी रखा।

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

मुनाफ़िक़ीन की दूसरी मिसालः अंधेरी रात में बारिश, साथ में गरज, बिजलियाँ, और ज़बरदस्त कड़क।

- मुनाफ़िक़ीन हर उस चीज़ से पीछा छुड़ाना चाहते हैं जो उन के लिए मुश्किल हो।
- वह सिर्फ़ आसान बातों पर अ़मल करते हैं।
- अल्लाह उन लोगों को ह़क़ की तरफ़ वापस लौटने का मौक़ा दे रहा है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! चाहे कितने भी चैलेंजेस या मुश्किलें हों, मुझे हर ह़ाल में इस्लाम की पैरवी करने वाला बनाईए

प्लानः इन्शा अल्लाह मैं आजमाईशों में सबर से काम लूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़्ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
बनाना	جَعْل	مَجْعُوْل	جَاعِل	اِجْعَلْ	يَجْعَلُ	جَعَلَ	ج ع ل / ف	346
डरना	حَذَر	مَحْذُوْر	حَاذِر	اِحْذَرْ	يَحْذَرُ	حَذِرَ	ح ذ ر / س	10
उचक लेना	خَطْف	مَخْطُوْف	خاطِف	اِخْطَفْ	يَخْطَفُ	خَطِفَ	خ ط ف / س	3
जाना	ذَهَاب	–	ذَاهِب	اِذْهَبْ	يَذْهَبُ	ذَهَبَ	ذ ه ب / ف	37
मरना	مَوْت	–	مَيِّت	مُتْ	يَمُوْتُ	مَاتَ	م و ت / قا	89
चलना	مَشْي	–	مَاشٍ	اِمْشِ	يَمْشِيْ	مَشٰى	م ش ي / هد	22
खड़ा होना	قِيَام	–	قَاٸِم	قُمْ	يَقُوْمُ	قَامَ	ق و م / قا	55

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
आसमान	سَمَاوَات	سَمَاء
अंधेरा	ظُلُمَات	ظُلْمَة
उंगली	أَصَابِع	أُصْبُع
कान	اٰذَان	أُذُن
बिजली की कडक	صَوَاعِق	صَاعِقَة
बसारत	أَبْصَار	بَصَر
चीज़	أَشْيَاء	شَيْء

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 3c

कुरआन की दावत (अल–बक़रा: 21-22)

وَالَّذِيْنَ	خَلَقَكُمْ	الَّذِىْ	اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ	النَّاسُ	يٰٓاَيُّهَا
और उन लोगों को जो	पैदा किया तुम्हें	जिसने	इबादत करो अपने रब की	लोगो!	ऐ

وَّالسَّمَآءَ	فِرَاشًا	الْاَرْضَ	جَعَلَ لَكُمُ	الَّذِىْ	تَتَّقُوْنَ (21)	لَعَلَّكُمْ	مِنْ قَبْلِكُمْ
और आसमान को	फ़र्श	ज़मीन को	बनाया तुम्हारे लिए	जिसने	तुम परहेज़गार बन जाओ!	ताकि तुम	तुम से पहले थे,

مِنَ الثَّمَرٰتِ	فَاَخْرَجَ بِهٖ	مَآءً	مِنَ السَّمَآءِ	وَّاَنْزَلَ	بِنَآءً
फलों से	फिर निकाला उस के ज़रिए	पानी	आसमान से	और नाज़िल किया	छत,

وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (22)	اَنْدَادًا	لِلّٰهِ	فَلَا تَجْعَلُوْا	رِزْقًا لَّكُمْ
जबकि तुम जानते हो।	कोई शरीक	अल्लाह के लिए	पस न ठहराव	रिज़्क़ तुम्हारे लिए

मुख़्तसर शरह:

- يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ...: कुरआन सारी इंसानियत के लिए है, इस लिए अल्लाह ने यह नहीं कहा कि ऐ अ़रब या ऐ एशिया वालों! बल्कि कहा, ऐ लोगो!
- اُعْبُدُوا رَبَّكُمْ...: तख़लीक़ का मक़सद: सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत यानी मोहब्बत और ख़ुलूस के साथ सच्चे बन्दे और गुलाम की तरह़ अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करना क्यों? इस लिए कि उसी ने हम सबको बेहतरीन अन्दाज़ में पैदा किया है। हमारा वुजूद ही उस के होने का सबूत है!
- इबादत का नतीजा? لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ताकि तुम गुमराह होने से बच सको, अल्लाह की नाराज़ी से बच सको, और आख़िरत में आग से बच सको। जितने ख़ुलूस के साथ हम अल्लाह की इबादत करेंगे, अल्लाह तआ़ला उतना ही ज़्यादा तक़्वा हमको अ़ता करेगा।
- الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمْ...: अपने नीचे बिछी हुई ज़मीन को और ऊपर फैले हुए आसमान को देखिए। ऊपर से बरसती बारिश को देखिए, फलों को देखिए जो ख़ास तौर पर हमारे लिए बनाए गए हैं। अगर आम, जाम, केला, सेब और संतरे राई के दाने जैसे होते तो हम क्या करते? अल्लाह ने उनको ऐसे बनाया है कि हमारे हाथ में आ जाएं! उनकी जिल्द इतनी साफ़ रखी है कि हम उस को पकड़ सके, उनमें ख़ुशबू रखी कि हमें खाने में तकलीफ न हो, उन फलों में ज़बान के लिए मज़ा रखा है कि हम मज़े से खाएं, इतने नर्म बनाएं कि हम उस को चबा सके! हर चीज़ अल्लाह ने ख़ास हमारे लिए बनाई है!
- जब सिर्फ़ अल्लाह ने सब कुछ मोह़ब्बत के साथ और हमारा खूब ख़्याल रख कर बनाया है तो हमें अल्लाह के इलावा किसी और की इबादत हरगिज़ नहीं करनी चाहिए।

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- कुरआन ने तमाम लोगों को दावत दी है क्योंकि कुरआन तमाम लोगों के लिए है।
- अल्लाह की इबादत करो ताकि तक़्वा हासिल हो और दुनिया और आख़िरत के नुक़्सान से बचो।
- ईमान में ज़्यादती के लिए कायनात में गौर व फ़िकर।
- शिर्क मत करो क्योंकि रिज़्क़ सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! मुझे तेरे पसन्दीदा तरीक़े पर इबादत करने की तौफीक़ दे और हर तरह़ के शिर्क से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा.!

प्लानः इन्शा अल्लाह मैं कुछ औक़ात कायनात में ग़ौर व फ़िकर पर गुज़ारूँगा और साइंस की किताबों का मुतालआ़ करूँगा ताकि मेरे ईमान में ज़्यादाती हो।

अस्मा, अफ्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
इबादत करना	عِبَادَة	مَعْبُوْد	عَابِد	اُعْبُدْ	يَعْبُدُ	عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
पैदा करना	خَلْق	مَخْلُوْق	خَالِق	اُخْلُقْ	يَخْلُقُ	خَلَقَ	خ ل ق / ذ	248
बनाना	جَعْل	مَجْعُوْل	جَاعِل	اِجْعَلْ	يَجْعَلُ	جَعَلَ	ج ع ل / ف	346
रिज़्क़ देना	رِزْق	مَرْزُوْق	رَازِق	اُرْزُقْ	يَرْزُقُ	رَزَقَ	ر ز ق / ذ	122
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م / س	518

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
आसमान	سَمَاوَات	سَمَاء
फल	ثَمَرَات	ثَمَرَة
शरीक	أَنْدَاد	نِدّ

www.understandquran.com

कुरआन का चैलेंज (अल-बक़रा: 23)

بِسُوْرَةٍ	فَاْتُوْا	عَلٰى عَبْدِنَا	نَزَّلْنَا	مِّمَّا	فِيْ رَيْبٍ	وَاِنْ كُنْتُمْ
एक सूरत	तो ले आओ	अपने बंदे पर	हमने उतारा	उस से जो	शक में	और अगर तुम हो

صٰدِقِيْنَ (23)	اِنْ كُنْتُمْ	مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ	شُهَدَآءَكُمْ	وَادْعُوْا	مِّنْ مِّثْلِهٖ
सच्चे।	अगर तुम हो	अल्लाह के इलावा	अपने मददगारों को	और बुला लो	इस जैसी,

मुख़्तसर शरह़:

- कुरआन के बारे में शुरू में ही अल्लाह ने कहा لَا رَيْبَ فِيْهِ यानी कोई शक नहीं है इस में। अब उसी رَيْبَ (शक व शुबहा) का ज़िक्र हो रहा है के अगर तुमको शक हो तो अल्लाह के इलावा अपने गवाहों और अपने मददगारों, सबको बुलालो और कुरआन के जैसी सूरत लेकर आओ।
- نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا...: यह रिसालत का ज़िक्र है कि हमने हमारे बंदे पर (यानी रसूल पर) नाज़िल किया है। पिछली आयत में तौहीद का ज़िक्र था।

कुरआन एक ज़िन्दा मौजज़ा

- कुरआन में कई साइंसी ह़क़ायक़ पेश किए गए हैं जो हाल ही में दरयाफ़्त किए गए हैं। कुरआन की तारीख़ी पेशेनगोईयाँ सह़ीह़ साबित हुई है। इसमें हैरतअंगेज़ अ़ददी मौजज़ात हैं।
- कुरआन हर क़िस्म की अ़रबी ग्रामर की ग़लतियों से पाक है, अ़रबी ग्रामर में यह इतनी मज़बूत किताब है कि सारे अ़रबी क़वायद इसी को देख कर बनाए गए हैं। अ़रबी ग्रामर में सिर्फ़ ज़बर, ज़ेर, पेश के फ़र्क़ से माअ़ना में बहुत फ़र्क़ आ जाता है। कुछ सूरतों में अ़रबी के यह क़वायद इतने बारीक होते हैं के अ़रबी के बहुत सारे पढ़े लिखे लोग भी तक़रीरों में ग्रामर की गलतियाँ कर देते हैं। जबकि ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ न पढ़ सकते थे और न ही लिख सकते थे, यानी आपको मज़मून तैयार कर के उसे दोहराने का बिल्कुल मौक़ा नहीं था।
- हम किसी मौज़ू पर एक मिनट बगैर रुके और बग़ैर आआआ, हममम कहे बात नहीं कर सकते, किसी उनवान पर कुछ लिखना हो तो बार-बार उसकी इस्लाह़ करते हैं। जबकि कुरआन मजीद का ह़ाल यह है कि कुछ वक़्त कुरआन की कई बड़ी सूरह या कई आयात एक ही बार में नाज़िल हुई है। यह कैसे हो सकता हो की एक शख़्स जिसको पढ़ना लिखना न आता हो, वह बिल्कुल परफेक्ट मज़मून ब्यान करें, और वह भी कई सफ़्हात का!
- कुरआन हमें जिंदगी का मुकम्मल निज़ाम सिखाता है जिसमें इबादत, हुक़ूक़ और क़वानीन वग़ैरह सब कुछ शामिल है।
- जब आप कुरआन की तिलावत करते हैं तो यह आपको बहुत गहराई में लेकर जाता है इन्सानी वजूद के हर पहलू पर रोशनी डालता है। दिल और दिमाग़, एह़सासात और जज़्बात वग़ैरह सब को अपील करता है।
- **23** साल की मुद्दत तक कुरआन नाज़िल होता रहा मगर इसमें कहीं भी कोई तज़ाद नहीं, यानी इसके मज़ामीन में कोई टकराव नहीं।
- यही एक मज़हबी किताब है जो तकरीबन **14** सौ साल से अपनी असली ह़ालत में महफ़ूज़ है। यह वह वाह़िद किताब है जिसकी करोड़ों लोग तिलावत करते हैं और लाखों लोग इसको ज़बानी याद करते हैं।

www.understandquran.com

अगर आप समझ कर कुरआन की तिलावत करेंगे तो क्या होगा!

- जिस इंसान ने इस पर सबसे पहले अ़मल किया (ह़ज़रत मोह़म्मद صلى الله عليه وسلم) वह तमाम मज़हबी शख्सियात में सबसे ज़्यादा कामयाब इंसान बन गए। यह बात मुसलमानों ने नहीं बल्कि ग़ैर मुस्लिमों के इल्मी इदारो ने कही है, जैसे इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका (**11**वाँ एडिशन कुरआन के मौजू पर)
- जिन लोगों ने इस पर अ़मल किया वह **50** साल के अन्दर अन्दर सारी दुनिया के क़ायद बन गए और तक़रीबन हज़ार साल तक उनकी क़ियादत बाकी रही।
- कुरआन आपको नेकियो की तरग़ीब देता है, आप में हिम्मत और ह़ौसला पैदा करता है, उम्मीदों को जगाता है और अच्छे अख़्लाक़, सह़ीह़ समझ और रूहानियत की बुलन्दियों तक ले जाता है।
- कुरआन आपको एक मुफ़क्किर बनाता है। दुनिया में आप की हैसियत और आपके आने के मक़सद को समझने में मदद करता है। ज़िंदगी का मक़सद खोल कर बताता है और उसे किस तरह़ गुज़ारना है उस के तरीक़े बताता है। आपको ह़क़ीक़ी खुशी और सुकून बख़्शता है।
- कुरआन सबसे बेहतरीन किताब है। और सबसे ह़ैरतअंगेज़ बात यह है कि जिस नबी पर कुरआन नाज़िल हुआ वह न तो लिखना जानते थे और न पढ़ना, जिस मुक़ाम पर आप की परवरिश हुई वह इक़्तेसादी या सियासी तौर पर दूसरे इलाकों से कटा हुआ था, और तालीमी तौर पर बहुत पिछड़ा हुआ था। वहाँ न कोई स्कूल था न ही कोई कालेज या यूनिवर्सिटी। इस वजह से इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन मजीद सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- कुरआन का चैलेंजः इस की तरह़ कोई एक सूरह लाओ! अगर तुम चाहो तो उस के लिए अपने तमाम मददगारों, तह़क़ीक़ करने वालों और फ़लसफ़ियों को जमा कर लो।
- नुबुवत का सबूत (نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا) : यानी अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह कुरआन हम ने हमारे बंदे (मोह़म्मद صلى الله عليه وسلم) पर नाज़िल किया है।
- عَبْدِنَا में नबी صلى الله عليه وسلم से अल्लाह तआ़ला की मोह़ब्बत का इज़हार भी है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! कुरआन के तअल्लुक़ से मेरे ईमान में ज़्यादाती फ़रमा और अपनी ज़िंदगी को कुरआन की रोशनी में गुज़ारने में मेरी मदद फ़रमा!

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं अल्लाह तआ़ला के इस पैग़ाम को दूसरों तक पहुंचाऊँगा।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़्ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
सच बोलना	صِدْق	مَصْدُوْق	صَادِق	اُصْدُقْ	يَصْدُقُ	صَدَقَ	ص د ق ذ	89
होना	كَوْن	–	كَاىِٕن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن قا	1358
आना	إِتْيَان	مَأْتِيّ	اٰتٍ	اِيْتِ	يَأْتِيْ	أَتٰى	أ ت ي هد	264
बुलाना	دُعَاء	مَدْعُوّ	دَاعٍ	اُدْعُ	يَدْعُوْ	دَعَا	د ع و دع	199

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
बन्दा	عِبَاد	عَبْد
सूरह	سُوَر	سُوْرَة
गवाह	شُهَدَاء	شَهِيْد
सच्चा	صَادِقُوْن، صَادِقِيْن	صَادِق

www.understandquran.com

वईद और बशारत (अल-बक़रा: 24-25)

النَّاسُ	الَّتِىۡ وَقُوۡدُهَا	فَاتَّقُوا النَّارَ	وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا	لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا	فَاِنۡ
इंसान	जो इंधन होगा उस का	तो डरो आग से,	और तुम हरगिज़ न कर सकोगे	तुम न कर सको	पस अगर

وَعَمِلُوا	الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا	وَبَشِّرِ	لِلۡكٰفِرِيۡنَ (24)	اُعِدَّتۡ	وَالۡحِجَارَةُ ۚ
और अ़मल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	और आप खुशखबरी दें	काफ़िरों के लिए।	(जो) तैयार की गई है	और पत्थर,

الۡاَنۡهٰرُ ؕ	مِنۡ تَحۡتِهَا	تَجۡرِىۡ	جَنّٰتٍ	اَنَّ لَهُمۡ	الصّٰلِحٰتِ
नहरें,	उन के नीचे से	बहती है	बाग़ात हैं,	कि उन के लिए	नेक

هٰذَا الَّذِىۡ	قَالُوۡا	رِّزۡقًا ۙ	مِنۡ ثَمَرَةٍ	رُزِقُوۡا مِنۡهَا	كُلَّمَا
यह वही है जो	(तो) वह कहेंगे	खाने के लिए,	कोई फल	वह दिए जाएंगे उन (बाग़ात) में से	जब कभी

فِيۡهَآ	وَلَهُمۡ	مُتَشَابِهًا ؕ	وَاُتُوۡا بِهٖ	مِنۡ قَبۡلُ	رُزِقۡنَا
उस में	और उन के लिए	मिलता जुलता,	हालांकि उन्हें दिया गया उस से	इस से पहले	हम दिए गए थे

خٰلِدُوۡنَ (25)	فِيۡهَا	وَّهُمۡ	اَزۡوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ
हमेशा रहेंगे।	उस में	और वह	पाकीज़ा बीवियाँ (होंगी)

मुख़्तसर शरह:

- **1400** साल से यानी जब कुरआन नाज़िल हुआ उस वक़्त से आज तक कोई कुरआन के इस चैलेंज का जवाब नहीं दे सका।
- فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا: हज़रत मोहम्मद ﷺ के ज़माने में अ़रब के लोग अ़रबी लुग़त की गहराई के माहिर जाने जाते थे। इस्लाम की दावत को रोकने के लिए उन्होंने जन्गें तक कीं मगर वह कुरआन के मुक़ाबले में कोई एक सूरह भी न ला सके। अगर वह कर सकते थे तो उसी वक़्त कर लेते और उन्हें जन्गों में अपनी जानें पेश करना न पड़ता, इतनी मुश्किलात से गुजरना न पड़ता!
- وَقُوۡدُهَا النَّاسُ...: आग लकड़ी वग़ैरह से जलाई जाती है मगर जहन्नम की आग में इंसान खुद इंधन होगा यानी उस के जिस्म का ज़र्रा ज़र्रा जल उठेगा जिससे तकलीफ़ बहुत बढ़ जाएगी। वहाँ पर पत्थर भी इंधन होंगे। यहाँ पर जिन पत्थरों का ज़िक्र है शायद उस से मुराद बुत हैं। उन बुतों को देखकर इंसान को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होगी कि इन झूठे बुतों की इबादत ही की वजह से मैं इस आग में जल रहा हूँ।
- وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ...: खुशख़बरी उन के लिए जो ईमान लाए और नेक काम किए। यह दोनों बहुत अहम है ईमान और नेक अ़मल वालों को अल्लाह बहुत सी नेअ़मतों से नवाज़ेगा। उन्हें इज़्ज़त दे कर जन्नत अ़ता करेगा। जन्नत में उन के लिए महल और नहरें, हर क़िस्म के खाने होंगे।

www.understandquran.com

- ➢ كُلَّمَا رُزِقُوْا...: अल्लाह तआ़ला हर खाने के वक़्त उनको सरप्राइज़ देगा! जब भी उनको कोई फल दिया जाएगा तो वह कहेंगे कि अभी-अभी हमें यह फल दिया गया था जबकि वह उस से मिलता जुलता होगा, लेकिन हर वक़्त उसका मज़ा अलग होता जाएगा।
- ➢ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ: उन के लिए पाक साफ बीवीयाँ होंगी और वह वहाँ हमेशा हमेशा ख़ुश रहेंगे।
- ➢ यह बेहद बेवक़ूफ़ी होगी कि हम दुनिया की इस छोटी ज़िंदगी में अल्लाह की नाफ़रमानी कर के आख़िरत की हमेशा की ख़ुशी को खो दें।
- ➢ इन आयात और पहले की आयात के **3** अहम उनवानः
  (1) तौह़ीदः اُعْبُدُوْا رَبَّكُمْ (2) रिसालतः نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا (3) आख़िरतः اَلنَّار، جَنّٰت

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- ➢ वईदः इंकार करने वालों के लिए आग की धमकी
- ➢ ईमान लाने वालों और नेक अ़मल करने वालों के लिए ख़ुशख़बरी
- ➢ जन्नत में नेअमतें: नहरें, फल, पाकीज़ा बीवीयाँ और हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी

दुआ़ः اَللّٰهُمَّ أَجِرْنَا مِنَ النَّارِ ऐ अल्लाह! आग से हमें मह़फ़ूज़ फ़रमा। नेक काम करने में हमारी मदद फ़रमा और हमें जन्नत अ़ता फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं क़ुरआन और सुन्नत का मोतालआ़ कर के अपने ईमान को मज़बूत बनाऊँगा और अल्लाह को ख़ुश करने की नियत से काम करूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
करना	فِعْل	مَفْعُوْل	فَاعِل	اِفْعَلْ	يَفْعَلُ	فَعَلَ	ف ع ل / ف	105
इंकार करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ذ	461
अ़मल करना	عَمَل	مَعْمُوْل	عَامِل	اِعْمَلْ	يَعْمَلُ	عَمِلَ	ع م ل / س	318
रिज़्क़ देना	رِزْق	مَرْزُوْق	رَازِق	اُرْزُقْ	يَرْزُقُ	رَزَقَ	ر ز ق / ذ	122
हमेशा रहना	خُلُوْد	–	خَالِد	اُخْلُدْ	يَخْلُدُ	خَلَدَ	خ ل د / ذ	83
बहना	جَرَيَان	–	جَارٍ	اِجْرِ	يَجْرِيْ	جَرٰى	ج ر ي / هد	60
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَابِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1715
आना	إِتْيَان	مَأْتِيّ	اٰتٍ	اِئْتِ	يَأْتِيْ	أَتٰى	أ ت ي / هد	264

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाहिद
आदमी	نَاس	إِنْسَان
पत्थर	حِجَارَة	حَجَر
बाग़	جَنَّات	جَنَّة
नहर	أَنْهَار	نَهَر
फल	ثَمَرَات	ثَمَرَة
जोड़े/बीवी	أَزْوَاج	زَوْج

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 4b मच्छर की मिसाल (अल-बक़राः 26)

اِنَّ اللّٰهَ	لَا يَسْتَحْيٖٓ	اَنْ يَّضْرِبَ	مَثَلًا مَّا	بَعُوْضَةً	فَمَا	فَوْقَهَا
बेशक अल्लाह	नहीं शर्माता	(इस से) कि वह ब्यान करे	कोई मिसाल	मच्छर की	या उस चीज़ की जो	उस से बढ़ कर हो,

فَاَمَّا	الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا	فَيَعْلَمُوْنَ	اَنَّهُ الْحَقُّ	مِنْ رَّبِّهِمْ	وَاَمَّا
पस रहे	वह लोग जो ईमान लाए	तो वह जानते हैं	कि वह हक़ है	उन के रब की तरफ़ से	और रहे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا	فَيَقُوْلُوْنَ	مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ	بِهٰذَا	مَثَلًا	يُضِلُّ
वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया	तो वह कहते हैं की	क्या इरादा किया है अल्लाह ने	साथ इस	मिसाल के	वह गुमराह करता है

بِهٖ	كَثِيْرًا	وَّيَهْدِيْ بِهٖ	كَثِيْرًا	وَمَا يُضِلُّ	بِهٖٓ	اِلَّا	الْفٰسِقِيْنَ 26
उस से	बहुतों को	और वह हिदायत देता है उस से	बहुतों को,	और वह नहीं गुमराह करता	उस से	मगर	फ़ासिक़ लोगों को।

मुख़्तसर शरहः

- बात के समझाने के लिए मिसाल दी जाती और इससे लोग बा-आसानी पैग़ाम को समझ लेते हैं।
- اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا...: अल्लाह तआला कुरआन मजीद में मक्खी, मकड़ी वग़ैरह की मिसालें दी हैं। एक दिलचस्प बात यह भी है के मच्छर बज़ाहिर छोटा सा जानदार नज़र आता है लेकिन उस के अन्दर परवाज़ का एक पूरा निज़ाम मौजूद है। आज की साइंस इससे सीखने की कोशिश कर रही है। (Nanotechnology)
- فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا...: ईमान वाले जानते हैं कि हर आयत और हर मिसाल उन के रब की तरफ़ से हक़ है क्योंकि अल्लाह तआला बग़ैर मक़सद के कोई मिसाल ब्यान नहीं फ़रमाता।
- وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا...: काफ़िर मिसालों को बग़ैर समझे एतराज़ात करते हैं। अगर वह मिसालों पर ग़ौर करते तो हिदायत हासिल कर चुके होते।
- अरबी ज़बान में जब दो ग्रुप्स का ज़िक्र हो तो उसकी तरकीब इस तरह़ होती हैः पहला ग्रुपः فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَـ... दूसरा ग्रुपः وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَـ...
- وَمَا يُضِلُّ...: फ़ासिक़ वह है जो अल्लाह की नाफ़रमानी करे। अगली आयत में फ़ासिक़ की मज़ीद तफ़सीलात दी जा रही है। ऐसे लोग कुरआन पढ़ कर भी गुमराह रहते हैं और उनको हिदायत नहीं मिलती। आप ने बहुत से मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम साइंटिस्ट और डॉक्टरों को देखा होगा जो कुरआन के मोजज़ात देखते हैं लेकिन हिदायत हासिल नहीं करते। ऐसा क्यों है? फ़िस्क़ की वजह से है। हिदायत के न मिलने को फ़िस्क़ ही की एक अलामत कहा जा सकता है।

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला मिसाले ब्यान करता है ताकि हमें समझने में आसानी हो।
- ईमान वाले जानते हैं कि अल्लाह की तरफ़ से ह़क़ है।
- सिर्फ़ नाफ़रमान लोग ही गुमराह होते हैं।

दुआः اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْإِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِيْ قُلُوْبِنَا، وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ، وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ

ऐ अल्लाह! आप ईमान को हमारे लिए मह़बूब बना दीजिए और उसे हमारे दिलों में मुज़ैय्यन फ़रमा दीजिए, और कुफ़्र, गुनाह और नाफ़रमानी को हमारे लिए न पसन्दीदा बना दीजिए, और हिदायत पाने वालों में से बना दीजिए।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं हमेशा अल्लाह तआ़ला की ब्यान की गई मिसाल पर ग़ौर करने की कोशिश करूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
मारना	ضَرْب	مَضْرُوْب	ضَارِب	اِضْرِبْ	يَضْرِبُ	ضَرَبَ	ض ر ب ضہ	58
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م سہ	518
इंकार करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر ذ	461
गुनाह करना	فِسْق	–	فَاسِق	اُفْسُقْ	يَفْسُقُ	فَسَقَ	ف س ق ذ	54
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1715
हिदायत देना	هُدًى	مَهْدِيّ	هَادٍ	اِهْدِ	يَهْدِيْ	هَدٰى	ه د ي هد	161

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
मिसाल	أَمْثَال	مَثَل
रब, पालने वाला	أَرْبَاب	رَبّ
फ़ासिक़/ गुनाहगार	فَاسِقُوْن، فَاسِقِيْن	فَاسِق

कुरआन सफ़्हा 4c — गुमराह कौन? (अल-बक़रा: 27)

الَّذِيۡنَ	يَنۡقُضُوۡنَ	عَهۡدَ اللّٰهِ	مِنۡۢ بَعۡدِ مِيۡثَاقِهٖ	وَيَقۡطَعُوۡنَ	مَآ	اَمَرَ اللّٰهُ
वह लोग जो	तोड़ते हैं	अल्लाह के अ़हद को	उस को मज़बूत करने के बाद,	और वह काटते हैं	जो	अल्लाह ने हुक्म दिया

بِهٖۤ	اَنۡ يُّوۡصَلَ	وَيُفۡسِدُوۡنَ	فِى الۡاَرۡضِ	اُولٰٓـئِكَ	هُمُ	الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿27﴾
उस का	कि (उसे) मिलाया जाए	और वह फ़साद करते हैं	ज़मीन में,	वही लोग	वह	नुक़सान उठाने वाले (हैं)।

मुख़्तसर शरह:

- عَهۡدَ الله...: अल्लाह तआ़ला के अ़हद से मूराद अल्लाह का हुक्म है कि उसी की इबादत और उसी की इताअ़त की जाए।
- यहाँ उस अ़हद की तरफ़ भी इशारा हो सकता है जब अल्लाह ने ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सामने हम सब की रूहों को इकट्ठा किया और यह अ़हद लिया। जब भी इंसान कुरआन और ह़दीस की बात को सुनकर दिल में यह मह़सूस करता है की यह बात सच है तो यह उस अ़हद का असर है। ह़क़ जानने के बाद ठुकराना अस्ल में अल्लाह से वादे को तोड़ना है। क़्यामत के दिन अल्लाह बता देगा के कब-कब किस इंसान ने ह़क़ बात को जानने के बावजूद उसका इंकार किया।
- وَيَقۡطَعُوۡنَ...: अल्लाह के अ़हद को तोड़ने के इलावा वह ख़ानदान के तअ़ल्लुक़ात को बरक़रार रखने का भी ख़्याल नहीं रखते।
- हमें अपने आपसी तअल्लुक़ात को बरक़रार रखना चाहिए ताकि हम हिदायत ह़ासिल कर के कामयाब हो सके और नाकामी से बच सकें।
- وَيُفۡسِدُوۡنَ...: जब कोई इंसान अल्लाह का (जिसने उस को पैदा किया) या अपने क़रीबतरीन रिश्तेदारों का (जो उसकी परवरिश में ह़िस्सेदार रहे हो, उनका) भी ख़्याल नहीं रखता तो उसकी बातें और उस के काम उसे फ़साद ही की तरफ़ ले जाएंगे।
- هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ...: फ़ासिक़ीन नुक़सान उठाने वाले हैं। उनको दिल और दिमाग़ का ह़क़ीक़ी सुकून नहीं मिलेगा, रिश्तेदारों और दूसरे इन्सानों की मोह़ब्बत नहीं मिलेगी, और सब से अहम यह कि वह जन्नत की हमेशा की ख़ुशी से मह़रूम होंगे।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

फ़ासिक़ीन को कुरआन से हिदायत नहीं मिलेगी क्योंकि वह लोग
- अल्लाह से किए हुए अ़हद को तोड़ते हैं।
- रिश्तो और तअ़ल्लुक़ात को तोड़ते हैं।
- ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं।

www.understandquran.com

www.understandquran.com

दुआ: ऐ अल्लाह! ज़िंदगी के तमाम हिस्सों में हमें तेरी इताअ़त करने की तौफ़ीक़ दे, रिश्तेदारी को बरक़रार रखने में हमारी मदद फ़रमा, हमें इस्लाह करने वाला बना और दुनिया और आख़िरत में हमें कामयाबी दे।

प्लान: इन्शा अल्लाह! मैं अल्लाह तआ़ला की बेहतर अन्दाज़ में इताअ़त और इबादत करने की हर मुमकिन कोशिश करूँगा। मैं अपने रिश्तेदारों से मोहब्बत और एहतेराम के साथ पेश आने और उनकी मदद करने की कोशिश करूँगा। मैं हमारे आस पास के अ़ाम लोगों की ख़िदमत करने वाला बनने की कोशिश करूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तहत दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
तोड़ने वाला	نَقْض	مَنْقُوْض	نَاقِض	اُنْقُضْ	يَنْقُضُ	نَقَضَ	ن ق ض ذ	8
काटना	قَطْع	مَقْطُوْع	قَاطِع	اِقْطَعْ	يَقْطَعُ	قَطَعَ	ق ط ع ف	15
हुक्म देना	أَمْر	مَأْمُوْر	اٰمِر	مُرْ	يَأْمُرُ	أَمَرَ	أ م ر ذ	244
नुक़सान उठाना	خُسْر	–	خَاسِر	اِخْسَرْ	يَخْسَرُ	خَسِرَ	خ س ر س	51
जोड़ना	وُصُوْل	مَوْصُوْل	وَاصِل	صِلْ	يَصِلُ	وَصَلَ	و ص ل وء	10

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाहिद
अ़हद व पैमान	عُهُوْد	عَهْد
मज़बूती	مَوَاثِيْق	مِيْثَاق
ज़मीन	أَرَاضِي	أَرْض
नुक़सान उठाने वाला	خَاسِرُوْن، خَاسِرِيْن	خَاسِر

www.understandquran.com

कुफ़्र कैसे ? (अल-बक़रा: 28-29)

ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ	فَاَحْيَاكُمْ	اَمْوَاتًا	وَكُنْتُمْ	بِاللّٰهِ	كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ
फिर वह मौत देगा तुम्हें	फिर उस ने ज़िन्दा किया तुम्हें	बेजान	हालांकि तुम थे	अल्लाह का	कैसे तुम इंकार करते हो

مَّا فِى الْاَرْضِ	خَلَقَ لَكُمْ	هُوَ الَّذِىْ	تُرْجَعُوْنَ (28)	ثُمَّ اِلَيْهِ	ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ
जो ज़मीन में है	पैदा किया तुम्हारे लिए	वही है जिस ने	तुम लौटाए जाओगे।	फिर उसी की तरफ़	फिर (दोबारा) ज़िन्दा करेगा तुम्हें

فَسَوّٰىهُنَّ	السَّمَآءِ	اِلَى	ثُمَّ اسْتَوٰى	جَمِيْعًا
पस उस ने बराबर कर दिया उन्हें	आसमान की	तरफ़	फिर मुतवज्जह हुआ	सब कुछ

عَلِيْمٌ (29)	بِكُلِّ شَىْءٍ	وَهُوَ	سَبْعَ سَمٰوٰتٍ
जानने वाला है।	हर चीज़ को	और वह	सात आसमान,

मुख़्तसर शरह़:

- كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ...: हम ख़ाक़ थे, अल्लाह ने हमें ज़िंदगी अ़ता की। सिर्फ़ अल्लाह जानता है की हम कब और कैसे मरेंगे। हम अल्लाह का इंकार नहीं कर सकते क्योंकि उसी ने हमें ज़िन्दा किया है और हमारा मरना उसी के हाथ में है।
- ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ...: हमें अल्लाह के पास वापस लौटना है, हम लापरवाही नहीं कर सकते। वहाँ जवाब देना पड़ेगा।
- هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ لَكُمْ...: यह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और करम है कि उस ने हमारे लिए ज़मीन को बनाया और फिर उस पर हमारी ज़रूरत की हर चीज़ पैदा की। हमें खूब मोह़ब्बत के साथ उसका शुक्र करना चाहिए।
- فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ...: अल्लाह तआ़ला वसीअ़ आसमान बनाया जिसमें करोड़ों सितारे हैं, और उस के ऊपर **6** आसमान।
- وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ...: अल्लाह तआ़ला तमाम मख़्लूक़ात की हर तफ़सील से वाक़िफ़ है यहाँ तक की वह उन के ख़्यालात को भी जानता है। ऐसी आयात को पढ़ने के बाद हमारे दिल में अल्लाह की अज़्मत और हैबत बैठनी चाहिए।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- हम अल्लाह तआ़ला का इंकार नहीं कर सकते क्योंकि उसी ने हमें ज़िंदगी दी है और हमारा मरना और दोबारा जी उठना सब कुछ अल्लाह ही के हाथ में है।
- हमें अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है।
- आराम-देह ज़िंदगी गुज़ारने के लिए ज़रूरत की तमाम चीज़ें अल्लाह तआ़ला ही ने अ़ता की है।
- अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ का इल्म है यहाँ तक की हमारे ख़्यालात और सोच को और हमारे आ़माल को वह अच्छी तरह़ जानता है।

www.understandquran.com

दुआः ऐ अल्लाह! हमें अपने ईमान में ज़्यादती की नियत से तेरी मख़लूकात में ग़ौर करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, हमारे दिलों को अपनी अ़ज़्मत से भर दे और गुनाहों से दूर रहने में हमारी मदद फ़रमा!
प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं आसमानों और ज़मीन के पैदा किए जाने पर ग़ौर और फ़िकर करूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तहत दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
इंकार करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ذ	461
लौटना	رُجُوْع	–	رَاجِع	اِرْجِعْ	يَرْجِعُ	رَجَعَ	ر ج ع / ض	86
पैदा करना	خَلْق	مَخْلُوْق	خَالِق	اُخْلُقْ	يَخْلُقُ	خَلَقَ	خ ل ق / ذ	248
होना	كَوْن	–	كَائِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن / قا	1358

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाहि़द
मुर्दार	أَمْوَات	مَيِّت
ज़मीन	أَرَاضِي	أَرْض
आसमान	سَمَاوَات	سَمَاء
चीज़	أَشْيَاء	شَيْئ

www.understandquran.com

कुरआन सफ्हा 5a खलीफ़ा पर सवाल? (अल-बक़रा: 30)

خَلِيْفَةً ؕ	فِى الۡاَرۡضِ	اِنِّىۡ جَاعِلٌ	لِلۡمَلٰٓئِكَةِ	رَبُّكَ	وَاِذۡ قَالَ
एक ख़लीफ़ा	ज़मीन में	(कि) बेशक मैं बनाने वाला हूँ	फ़रिश्तों से	तेरे रब ने	और जब फ़रमाया
وَيَسۡفِكُ	فِيۡهَا	مَنۡ يُّفۡسِدُ	فِيۡهَا	اَتَجۡعَلُ	قَالُوۡٓا
और बहाएगा	उस में	उसे जो फ़साद करेगा	इस (ज़मीन) में	क्या तू बनाता है	उन्होंने कहा:

وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ	بِحَمۡدِكَ	وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ	الدِّمَآءَ ۚ
और हम पाकी ब्यान करते हैं तेरी,	तेरी तारीफ़ के साथ	और हम तस्बीह़ करते हैं	खून,
لَا تَعۡلَمُوۡنَ (30)	مَا	اِنِّىۡٓ اَعۡلَمُ	قَالَ
तुम नहीं जानते।	जो कुछ	बेशक मैं जानता हूँ	फ़रमाया:

मुख़्तसर शरह़:

- وَاِذۡ قَالَ رَبُّكَ...: अल्लाह ने फ़रमाया कि वह आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाएगा। हम ज़मीन पर इस वजह से नहीं है की आदम अलैहिस्सलाम ने कोई फल खा लिया था। बल्कि अल्लाह तआ़ला की एक ख़ास ह़िकमत के तह़त हैं।
- اِنِّىۡ جَاعِلٌ...: ख़लीफ़ा के दो माअ़ना होते हैं: (1) जो अल्लाह के अह़कामात को नाफ़िज़ करता है। (2) जो किसी के बाद ज़िम्मेदार बन कर आता है।
- अल्लाह तआ़ला ने फरिश्तों को सवाल करने का मौक़ा इनायत किया और उन पर नाराज़गी का इज़हार नहीं किया। सुब्हान अल्लाह! अगर कोई हमसे कुछ पूछे या सवाल करें और हमें उसका जवाब मालूम हो तो हमें जवाब देना चाहिए।
- قَالُوۡٓا اَتَجۡعَلُ فِيۡهَا...: फ़रिश्ते इस बात पर हैरान थे कि इंसान खून बहाएगा, और वह भी अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई ज़मीन में! यही वजह थी कि उन्होंने इंसानों की तख़्लीक़ के पीछे छुपी ह़िकमत को जानने के लिए सवाल किया, न कि ऐतराज़ करने के लिय।
- **ह़दीस:** ह़ज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हू से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया कि कौन सा कलाम अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिसको अल्लाह तआ़ला ने अपने फरिश्तों के लिए या बन्दों के लिए चुना है: سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ (मुस्लिम:2731)" तस्बीह़ और ह़म्द बेहतरीन ज़िक्र है। इस बात का ऐलान है कि अल्लाह तआ़ला तमाम नुक़्स से पाक है। उस के काम में या उस के कलाम में किसी क़िस्म की कोई भी कमी नहीं है। और ह़म्द इस बात का ऐलान हैं अल्लाह तआ़ला तमाम अच्छी सिफ़ात और खूबियों का मालिक है।
- कुछ लोग कहते हैं के यहाँ दुनिया में जगह जगह खून ख़राबे हो रहे हैं तो अल्लाह क्या कर रहा है? इस बात को दलील बनाकर वह मज़हब ही का इंकार कर बैठते हैं। ज़रा इस बात को सोचिए किस ज़मीन में फ़साद और खून ख़राबे के बारे में तो फ़रिश्तों ने पहले ही पूछा था। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने यह नहीं फ़रमाया था कि ज़मीन पर खून खराबा नहीं होगा, बल्कि यह फ़रमाया था कि मैं जो जानता हूँ वह तुम नहीं जानते।
- اِنِّىۡٓ اَعۡلَمُ...: इस दुनिया में जो कुछ हो रहा है उस के पीछे छुपी ह़िकमत को हम नहीं जानते हैं और न ही समझ सकते हैं, जबकि अल्लाह बेहतर जानता है और हर वह चीज़ से हर एतबार से बाख़बर है। वह ज़मीन पर होने वाले हर अच्छे और बुरे कामों से खूब वाक़िफ़ है।

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाएंगे।
- फ़रिश्तों के सवाल पर अल्लाह तआ़ला ने नाराज़गी का इज़्हार नहीं किया।
- अल्लाह तआ़ला को पहले ही से इल्म था कि ज़मीन पर खून ख़राबा होगा।
- अल्लाह तआ़ला हर चीज़ जानता है, उसे मालूम है की ज़मीन पर कौन से अच्छे काम किए जाएंगे और कौन से ख़राब काम।

दुआः ऐ अल्लाह! हमें बिगाड़ और फ़साद फैलाने से बचा, हमें ज़मीन पर अमन और सलामती फैलाने की तौफ़ीक़ दे और हमें तेरी ह़म्द व तस्बीह़ ब्यान करने की तौफ़ीक़ दे!

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं अल्लाह तआ़ला की खूब तस्बीह़ और ह़म्द करूँगा। मैं अच्छाईयों और सलामती को फैलाने के लिए आसपास के आम लोगों की ख़िदमत करने वाला बनने की कोशिश करूँगा और इन्सानों की ख़िदमत करूँगा, चाहे वह मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
बनाना	جَعْل	مَجْعُوْل	جَاعِل	اِجْعَلْ	يَجْعَلُ	جَعَلَ	ج ع ل ف	346
खून बहाना	سَفْك	مَسْفُوْك	سَافِك	اِسْفِكْ	يَسْفِكُ	سَفَكَ	س ف ك ض	2
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م س	518
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1715

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
फ़रिश्ता	مَلَائِكَة	مَلَك
ख़लीफ़ा	خَلَائِف	خَلِيْفَة
खून	دِمَاء	دَم

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 5b अस्मा की तालीम (अल-बक़राः 31-33)

وَعَلَّمَ	اٰدَمَ	الْاَسْمَآءَ	كُلَّهَا	ثُمَّ عَرَضَهُمْ	عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ
और उस ने सिखाए	आदम को	नाम	सब के सब	फिर पेश किया उन को	फ़रिश्तों पर,

فَقَالَ	اَنْۢبِـُٔوْنِىْ	بِاَسْمَآءِ	هٰٓؤُلَآءِ	اِنْ كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ (31)
फिर फ़रमायाः	बताओ मुझे	नाम	इन सब के	अगर तुम हो	सच्चे।

قَالُوْا	سُبْحٰنَكَ	لَا عِلْمَ	لَنَآ	اِلَّا	مَا عَلَّمْتَنَا	اِنَّكَ اَنْتَ
उन्होंने कहा	पाक है तू,	नहीं कोई इल्म	हमें	मगर	जितना तू ने सिखाया है हमें	बेशक तू ही

الْعَلِيْمُ	الْحَكِيْمُ (32)	قَالَ	يٰٓاٰدَمُ	اَنْۢبِئْهُمْ	بِاَسْمَآئِهِمْ	فَلَمَّآ
जानने वाला	हिकमत वाला है।	फ़रमायाः	ऐ आदम!	बता दे इन को	नाम उन के	पस जब

اَنْۢبَاَهُمْ	بِاَسْمَآئِهِمْ	قَالَ	اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ	اِنِّىْٓ اَعْلَمُ
उस ने बताया उन को	उन के नाम	(तो) फ़रमायाः	क्या मैं ने नहीं कहा था तुम से	(की) बेशक मैं जानता हूँ

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ	وَاَعْلَمُ	مَا تُبْدُوْنَ	وَمَا	كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ (33)
छुपी हुई चीज़ें आसमानों और ज़मीन की	और मैं जानता हूँ	जो तुम ज़ाहिर करते हो	और जो	तुम छुपाते थे।

मुख़्तसर शरह़ः

- وَعَلَّمَ اٰدَمَ...: यहाँ नामों से तमाम चीज़ों के नाम मूराद हो सकते हैं चाहे वह छोटी चीज़ हो या बड़ी, जैसे चाँद, सूरज, सितारे, दरख़्त, फ़ल या मुख़्तलिफ़ चीज़ें। अल्लाह तआ़ला ने हमारे वालिद ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम को खुसूसी हैसियत बख़्शी और फिर उन्हें इल्म से नवाज़ा। दर ह़क़ीक़त इसमें हम इन्सानों के लिए एक बड़ा ऐजाज़ है क्योंकि आदम अलैहिस्सलाम हमारे बाप है। लिहाज़ा अल्लाह का शुक्र करते हुए हमें सिर्फ़ उसी की इबादत करनी चाहिए।
- قَالُوْا سُبْحٰنَكَ...: अगर हमें किसी चीज़ का इल्म न हो तो फ़रिश्तों की मिसाल अपने सामने रखें और "सुब्हान अल्लाह'' कहें। हमारा इल्म बहुत मह़दूद है और हम इस दुनिया में हर चीज़ के पीछे पोशीदा ह़िकमत को नहीं जानते हैं, जैसे ज़ल्ज़ले, मौत, बीमारी वग़ैरह। अल्लाह तआ़ला न हर चीज़ को जानता है बल्कि ज़मीन और आसमान के हर राज़ और ह़िकमत को भी जानता है।
- يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ...: अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों के सामने आदम अलैहिस्सलाम का तआ़रूफ़ उन के बेहतरीन वस्फ़ यानी इल्म के ज़रिए कराया। इससे पता चलता है कि हमारे पास सीखने की सलाह़ियत है, तो "رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا'' के ज़रिए दुआ़ मांगिए और अपनी सलाह़ियत के लिहाज़ से खूब इल्म ह़ासिल कीजिए।
- قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ...: अल्लाह तआ़ला ने न सिर्फ़ यह वाज़ेह फ़रमा दिया कि ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों से ज़्यादा जानते हैं बल्कि उन्हें ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने का हुक्म भी दिया।
- अल्लाह तआ़ला ने हमें जो इ़ज़्ज़त बख्शी है उस के लिए हमें अल्लाह तआ़ला का शुकर अदा करना चाहिए और हमें सीखने की जो सलाह़ियत दी गई है उसे कुरआन और ह़दीस और दूसरी मुफ़ीद चीज़ों के सीखने में इस्तेमाल करनी चाहिए।

- ➢ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ...: कुछ उलमा का कहना है कि यहाँ अल्लाह तआ़ला का इशारा इब्लीस की जानिब है जो अपने ह़सद और तकब्बुर को छुपा रहा था। दर ह़क़ीक़त यह इब्लीस के लिए एक तंबीह थी लेकिन फिर भी वह नामुराद रहा जैसा कि अगली आयत में आप पढ़ेंगे। एक और क़ौल यह है कि फ़रिश्तों ने सिर्फ़ इंसानों की ख़ून बहाने के पहलू को ज़िक्र किया और इन्सानों में अच्छे लोगों के पाए जाने के इम्कानात के बारे में कुछ नहीं कहा।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- ➢ अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम को नाम सिखाए।
- ➢ अगर कोई बात मालूम न हो तो "سُبْحٰنَ اللّٰهِ" कह सकते हैं।
- ➢ फ़रिश्ते समझ गए इंसानों के पास इल्म रहेगा जिसकी वजह से वह दूसरे काम भी कर सकते हैं।
- ➢ अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का ग़ैब जानता है

दुआ़ः ऐ अल्लाह! मेरे दिल में इज़ाफ़ा फ़रमा, इख़्लास के साथ तेरी इबादत करने में मेरी मदद फ़रमा और इस बात को याद रखने में मेरी मदद फ़रमा कि हर चीज़ के और हर बात के पीछे तेरी ह़िकमत छुपी होती है।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं हमेशा तवाज़ो इख़्तियार करूँगा और जो चीज़ मुझे न आती हो उसे सीखने के लिए तैयार रहूँगा।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
पेश करना	عَرْض	مَعْرُوْض	عَارِض	اِعْرِضْ	يَعْرِضُ	عَرَضَ	ع ر ض / ض	13
सच कहना	صِدْق	مَصْدُوْق	صَادِق	اُصْدُقْ	يَصْدُقُ	صَدَقَ	ص د ق / ذ	89
छुपाना	كِتْمَان	مَكْتُوْم	كَاتِم	اُكْتُمْ	يَكْتُمُ	كَتَمَ	ك ت م / ذ	21
ग़ायब होना	غَيْب	مَغِيْب	غَائِب	غِبْ	يَغِيْبُ	غَابَ	غ ي ب / زا	53

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
नाम	أَسْمَاء	اِسْم
फ़रिश्ता	مَلَائِكَة	مَلَك
पोशीदा चीज़	غُيُوب	غَيْب
आसमान	سَمَاوَات	سَمَاء
ज़मीन	أَرَاضِي	أَرْض

www.understandquran.com

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 5c सजदा और इब्लीस (अल-बक़राः 34-35)

اَبٰى	اِلَّآ اِبۡلِيۡسَ	فَسَجَدُوۡٓا	اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ	لِلۡمَلٰٓٮِٕكَةِ	وَاِذۡ قُلۡنَا
उस ने इंकार किया	सिवाए इब्लीस के,	तो उन्होंने सजदा किया	सजदा करो आदम को	फ़रिश्तों से	और जब हम ने कहा

اسۡكُنۡ اَنۡتَ	يٰٓاٰدَمُ	وَقُلۡنَا	مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ 34	وَكَانَ	وَاسۡتَكۡبَرَ
रहो तुम	ऐ आदम!	और हम ने कहा	काफ़िरों में से।	और वह हो गया	और तकब्बुर किया

حَيۡثُ شِئۡتُمَا	رَغَدًا	وَكُلَا مِنۡهَا	الۡجَنَّةَ	وَزَوۡجُكَ
जहाँ से तुम दोनों चाहो,	बा-फ़रागत	और खाओ तुम दोनों उस में से	जन्नत में	और तुम्हारी बीवी

مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ 35	فَتَكُوۡنَا	هٰذِهِ الشَّجَرَةَ	وَلَا تَقۡرَبَا
जुल्म करने वालों में से।	वर्ना हो जाओगे तुम दोनों	उस दरख़्त के	और तुम दोनों क़रीब न जाओ

मुख़्तसर शरहः

- وَاِذۡ قُلۡنَا لِلۡمَلٰٓٮِٕكَةِ...: सजदा सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, यहाँ जिस सजदे का ज़िक्र है वह आदम अलैहिस्सलाम की ताज़ीम के लिए था न कि उनकी इबादत के तौर पर। फ़रिश्तों ने अल्लाह के हुक्म की इताअ़त की तो गोया उन्होंने अल्लाह के हुक्म को मानकर अल्लाह की इबादत की न कि आदम अलैहिस्सलाम की।
- अल्लाह तआ़ला ने यहाँ अपने लिए ''हम'' का लफ़्ज़ इस्तिमाल किया है। दुनिया के बादशाह अपनी अ़ज़मत बताने के लिए हम का इस्तिमाल करते हैं। अल्लाह तो ह़क़ीक़ी बादशाह है, और उस ने यहाँ अपनी अ़ज़मत बताने के लिए हम का लफ़्ज़ इस्मिाल किया है। लफ़्ज़ ''हम'' का मतलब यह नहीं है कि अल्लाह के साथ कोई और इलाह भी है।
- اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ...: हमारे वालिद ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम का कितना बड़ा इकराम है! तसव्वुर करें कि क्या ही खूबसूरत मन्ज़र रहा होगा जब सारे फ़रिश्ते आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा कर रहे थे। क्या हमारे बाप की इस इज़्ज़त और इकराम के लिए हमें अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करना चाहिए?
- اَبٰى وَاسۡتَكۡبَرَ...: शैतान ने इंकार किया तकब्बुर किया। क्यों? इस लिए कि शैतान ने आदम अलैहिस्सलाम से ह़सद किया। और फिर जब उससे सजदा न करने की वजह पूछी गई तो यह नहीं कहा किस सज्दे का हुक्म तो फरिश्तों को दिया गया था और मैं तो फरिश्ता नहीं हूँ। बल्कि उस ने कहा कि मैं (आदम) से बेहतर हूँ। यानी की उस ने तकब्बुर और सरकशी का इज़्हार किया और नाफ़रमानों में से हो गया।
- وَقُلۡنَا يٰٓاٰدَمُ...: अल्लाह तआ़ला ने हमारे वालिद ह़ज़रत आदम और माँ ह़व्वा अलैहिमस्सलाम को यह इज़्ज़त अ़ता की कि उन्हें जन्नत में रखा और उन के आराम की सारी सहूलतें उन्हें अ़ता की। आदम अलैहिस्सलाम को तो ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाने के लिए पैदा किया गया था, लेकिन तरबियत और आज़माइश की गरज़ से शुरू में उन्हें जन्नत में रखा गया। इसमें ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम के लिए और तमाम इन्सानों के लिए यह इशारा था कि उनका असल ठिकाना जन्नत है, इस लिए शैतान की पैरवी कर के अपने इस ठिकाने को ज़ाया मत कर दो।
- وَلَا تَقۡرَبَا...: दरख़्त के क़रीब न जाओ, यानी खाना तो दूर की बात है उस के क़रीब भी मत जाओ।
- जन्नत में सिर्फ़ एक ही दरख़्त था जिस से रोका गया था। आज हमारे लिए मीडिया, इंटरनेट, टीवी, मैगज़ीन, गुनाहों के माहौल वग़ैरह जैसे बहुत से ऐसे दरख़्त है जिन के क़रीब जाने से ''रोका गया'' है। दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला बुराइयों से दूर रहने में हमारी मदद फ़रमाए। आमीन

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इज़्ज़त और इकराम का ब्यान है कि अल्लाह ने फ़रिश्तों को सजदे का हुक्म दिया।
- तकब्बुर और हसद शैतानी सिफ़ात है।
- अल्लाह तआला की नाफ़रमानी कुफ़्र करने की तरफ़ और अपने आप पर ज़ुल्म करने की तरफ़ ले जाती है।
- गुनाह की जगह के क़रीब भी मत जाओ!

दुआः ऐ अल्लाह! जन्नत को मेरी आख़िरी मन्ज़िल बना दे और मुझे हर तरह की बुराई से बचने की तौफ़ीक़ दे!
प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं बुरी चीज़ों और बुरी जगह से बचने की हर मुमकिन कोशिश करूँगा।

अस्मा, अफ़्आलः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आल नीचे दिए गए है।

अफ़्आलः हर फ़ेअ़ल के तहत दिए गए तीन अफ़्आल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआनी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
सजदा करना	سُجُوْد	مَسْجُوْد	سَاجِد	اُسْجُدْ	يَسْجُدُ	سَجَدَ	س ج د ذ	64
रहना	سَكَن	–	سَاكِن	اُسْكُنْ	يَسْكُنُ	سَكَنَ	س ك ن ذ	17
क़रीब होना	قُرْب	مَقْرُوْب	قَرِيْب	اِقْرَبْ	يَقْرَبُ	قَرِبَ	ق ر ب سـ	37
ज़ुल्म करना	ظُلْم	مَظْلُوْم	ظَالِم	اِظْلِمْ	يَظْلِمُ	ظَلَمَ	ظ ل م ضـ	266
इंकार करना	إِبَاء	–	اٰبٍ	اِيْبَ	يَأْبٰى	أَبٰى	أ ب ي سعـ	13
खाना	أَكْل	مَأْكُوْل	اٰكِل	كُلْ	يَأْكُلُ	أَكَلَ	أ ك ل ذ	101
चाहना	مَشِيْئَة	مَشِيْء	شَاءٍ	شَأْ	يَشَاءُ	شَاءَ	ش ي ء خا	236

अस्मा		
मआनी	जमा	वाहिद
जोड़ा	أَزْوَاج	زَوْج
बाग़	جَنَّات	جَنَّة
दरख़्त	أَشْجَار	شَجَرَة

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 5d फिसलाना और तौबा (अल–बक़रा: 36-37)

كَانَا فِيْهِ ص	مِمَّا	فَاَخْرَجَهُمَا	عَنْهَا	فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ
वह दोनों थे उस में	उस से जो	पस निकाल दिया उन दोनों को	उस से	फिर फिसला दिया उन दोनों को शैतान ने

فِى الْاَرْضِ	وَلَكُمْ	عَدُوٌّ ج	لِبَعْضٍ	بَعْضُكُمْ	اهْبِطُوْا	وَقُلْنَا
ज़मीन में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन हैं	बाज़ के	तुम में से बाज़	तुम सब उतर जाओ	और हम ने कहा

مِنْ رَّبِّهٖ	اٰدَمُ	فَتَلَقّٰٓى	اِلٰى حِيْنٍ 36	وَّمَتَاعٌ	مُسْتَقَرٌّ
अपने रब से	आदम ने	फिर सीख लिए	एक वक़्त तक।	और सामाने (ज़िन्दगी) है	ठिकाना

الرَّحِيْمُ 37	التَّوَّابُ	اِنَّهٗ هُوَ	فَتَابَ عَلَيْهِ ط	كَلِمٰتٍ
रह़म करने वाला।	तौबा क़बूल करने वाला	बेशक वही है	तो तौबा क़बूल की उस (अल्लाह) ने उस की,	कुछ कलिमात

मुख़्तसर शरह़:

- فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ...: लोगों को बहकाने और फिसलाने के मामले में शैतान से ज़्यादा चालाक कोई नहीं हो सकता। इस बात का इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है कि जन्नत में रहते हुए शैतान ने ह़ज़रत आदम और ह़ज़रत ह़व्वा अलैहिमस्सलाम को फिसला दिया। क्या कोई ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम से ज़्यादा समझदार हो सकता है?
- हमेशा शैतान से अल्लाह की पनाह तलब कीजिए और उसकी चालों से ख़बरदार रहिए। वह हमें आहिस्ता आहिस्ता बुराई की तरफ़ ले जाता है। बहुत मुमकिन है कि ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फिसलाने में भी उसे काफी वक़्त लगा हो कई साल लगे हों।
- शैतान हमारा सबसे बड़ा, सबसे बदतरीन, बहुत ख़तरनाक और तजर्बेकार दुश्मन है, इस लिए ख़ुद की अ़क़्लमंदी पर या अपने प्लान पर या फिर अपनी इबादात पर भरोसा न कीजिए। इसका सबसे अहम और मुअस्सिर ह़ल यह है कि अल्लाह से ह़िफ़ाज़त की भीख मांगी जाए इस लिए कि सिर्फ़ अल्लाह ही हमें शैतान के जाल से मह़फ़ूज़ रख सकता है।
- فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ...: अल्लाह की रह़मत का अन्दाज़ा लगाईए कि ख़ुद अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को तौबा का तरीक़ा भी सिखाया।
- इससे पहले आप ने पढ़ा के अल्लाह तआ़ला ने आदम अलैहिस्सलाम को ''अस्मा'' सिखाए, यहाँ यह है कि अल्लाह तआ़ला ने आदम को "कलिमात" सिखाए। गोया अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम को तमाम चीज़ें सिखाईं। क्या हम भी सीखने के लिए तैयार हैं जबकि अल्लाह तआ़ला सिखाने के लिए तैयार हैं!
- اِنَّهٗ هُوَ...: जब भी हम अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात का ज़िक्र सुने (चाहे वह कोई भी सिफ़त हो) तो फ़ौरन उस सिफ़त के लिहाज़ से दुआ़ करें। यहाँ अल्लाह हमें बता रहा है कि उस ने आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़ुबूल फ़रमाई, और यह फ़रमाया के वह तौबा क़ुबूल करने वाला है तो हमें भी फ़ौरन अल्लाह तआ़ला से मुआ़फी तलब करना चाहिए ताकि वह हमारी भी तौबा क़ुबूल फ़रमाए।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- हमेशा शैतान से अल्लाह की पनाह मांगिए और उसकी चालों से ख़बरदार रहिए।
- शैतान हमारा सबसे बड़ा, सबसे बदतरीन, बहुत ख़तरनाक और तजर्बकार दुश्मन है।
- ज़िंदगी बहुत मुख़्तसर है, शैतान की पैरवी कर के उसे बर्बाद मत कीजिए।
- जब भी कोई ग़लती हो जाए तो फ़ौरन अल्लाह तआ़ला से मुआ़फ़ी मांगिए।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! मैं हमेशा तेरी पनाह चाहता हूँ ताकि शैतान मुझे फिसला न दे।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं कभी अपने आप को मह़फ़ूज़ नहीं समझूँगा ताकि शैतान मुझे फिसला न दे।

अस्मा, अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
उतरना	هُبُوْط	مَهْبُوْط	هَابِط	اِهْبِطْ	يَهْبِطُ	هَبَطَ	ه ب ط ض	8
तौबा करना	تَوْبَة	–	تَائِب	تُبْ	يَتُوْبُ	تَابَ	ت و ب قا	72

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
शैतान	شَيَاطِيْن	شَيْطَان
दुश्मन	أَعْدَاء	عَدُوّ
सामान	أَمْتِعَة	مَتَاع
कलिमा	كَلِمَات	كَلِمَة

www.understandquran.com

www.understandquran.com

अ़रबी ग्रामर
और
अ़रबी बोल-चाल

www.understandquran.com

कम्ज़ोर अफ्आल का तआरूफ़

अल्फ़ाज़ की तीन क़िस्में हैंः इस्म, फ़ेअ्ल, ह़र्फ़। कुरआन की हर सतर में औसतन **9** अल्फ़ाज़ हैं, जिनमें से **4** इस्म, **3** फ़ेअ्ल और **2** हुरूफ़ आते हैं।

1. **हुरूफ़ (Particle):** बहुत आसान हैं और उनकी अस्ल तादाद भी बहुत कम है। इनमें कोई तब्दीली नहीं होती। कोर्स–**1** के बाद अगर आप सिर्फ़ **20** हुरूफ़ सीख लें तो तक़रीबन **95%** हुरूफ़ आप सीख लेंगे। इनमें से कई हुरूफ़ इन्शा अल्लाह इस कोर्स में आप सीख लेंगे।
2. **इस्मः** यह हर लाइन में **4** मर्तबा आते हैं। इनमें सिर्फ़ जमा और वाहि़द की तब्दीली होती है। इस की जमा बनाने का एक तरीक़ा आप ने सीखाः जैसे مُسْلِم ـ مُسْلِمُون، مُسْلِمِين इसके कुछ और तरीक़े भी हम बाद में सीखेंगे जैसे كِتَاب ـ كُتُب، نَفْس– أَنْفُس वग़ैरह।
3. **अफ़्आलः** हुरूफ़ और इस्म के बाद रह जाते हैं अफ़्आ़ल, जो कुरआन की हर लाइन में **3** मर्तबा आते हैं। तीन के इस अ़दद में वह अस्मा भी शामिल है जो हम फ़ेअ्ल के तहत सीखते हैं जैसे फाइल, मफउल, काम का नाम वग़ैरह। कुरआन को समझने के लिए एक अहम काम मुख़्तलिफ़ अफ़्आ़ल के फ़ेअ्ल माज़ी, मुज़ारे, अम्र व नह्य की मुख़्तलिफ़ शक्लों (सेग़ों) को सीखना है।

कोर्स–1: में हमने सुलासी (**3** हुरूफ़ वाले) अफ़्आ़ल सीखें, जैसे فَتَحَ، نَصَرَ، ضَرَبَ، سَمِعَ. अगर इन **3** हुरूफ़ में से कोई कम्ज़ोर हर्फ़ (و ي ا) आए जैसेः وَهَبَ، قَالَ، كَانَ، دَعَا वग़ैरह तो उस को कम्ज़ोर फ़ेअ्ल कहा जाता है। किसी शख़्स का हाथ कम्ज़ोर है तो वह शख़्स भी कम्ज़ोर हो जाता है, इसी तरह़ तीन हुरूफ़ में से एक हर्फ़ भी कम्ज़ोर हो तो उस फ़ेअ्ल को कम्ज़ोर फ़ेअ्ल कहा जाता है।

इस तरह़ से सुलासी अफ़्आ़ल दो तरह़ के होते हैंः

1. **सह़ीह़ः** यानी सेह़त वाले अफ़्आ़ल। याद रहे लफ़्ज़ सह़ीह़ सेह़त से बना है। सह़ीह़ अफ़्आ़ल यानी जिसमें सेह़त वाले **3** हुरूफ़ हो जैसेः فَتَحَ، نَصَرَ، ضَرَبَ، سَمِعَ. इस क़िस्म के अफ़्आ़ल कुरआन में तक़रीबन **9000** बार आते हैं यानी हर लाइन में एक बार।
2. **कमज़ोरः 3** हुरूफ़ में से एक कम्ज़ोर हो, जैसे وَهَبَ، قَالَ، كَانَ، دَعَا. ऐसे अफ़्आ़ल कुरआन में तक़रीबन **9000** बार आते हैं। यानी हर लाईन में एक बार।

बाज़ अफ़्आ़ल में दो हुरूफ़ यक्साँ होते हैं जैसेः ضَلَّ، وَدَّ, ऐसे अफ़्आ़ल कुरआन में तक़रीबन **1300** बार आए हैं।
अफ़्आ़ल की एक और क़िस्मः मज़ीद फ़ीः (ज़्यादा है इस में, यानी **3** हुरूफ़ में) की है। जैसे عَلِمَ से عَلَّمَ (इसमें लाम ज़्यादा है) और تَعَلَّمَ (इसमें (ت) ता और लाम (ل) ज़्यादा है)। इनको आप अगले कोर्स में सीखेंगे।

ग्रामर बराए सफ़्हा 1b कम्ज़ोर अफ़्आलः وَهَبَ

अगर किसी का हाथ कम्ज़ोर हो तो वह इंसान भी कम्ज़ोर होता है। इसी तरह़ जिस में कम्ज़ोर हुरूफ़ हो, वह फ़ेअ़ल कम्ज़ोर कहलाता है। कम्ज़ोर हर्फ़ वाले कम्ज़ोर की तीन क़िस्में अहम हैः

जिनके शुरू में कम्ज़ोर ह़र्फ़ होः وَهَبَ، وَجَدَ، وَلَدَ...

जिनके बीच में कम्ज़ोर ह़र्फ़ होः قَالَ، كَانَ، تَابَ...

जिनके आख़िर में कम्ज़ोर ह़र्फ़ होः دَعَا،هَدٰى، رَضِيَ...

ऐसे कम्ज़ोर कुरआन में कुल तक़रीबन **9000** बार आए हैं यानी तक़रीबन हर लाईन में एक बार! इस लिए इनको शौक़ से सीखिए।

कम्ज़ोर हुरूफ़ क्यों? क्योंकि इन 3 हुरूफ़ की आवाज़ ऐसे निकलती है जैसे बहुत ही कम्ज़ोर और बीमार आदमी की!! (اووو،آآآ،ای ی ی!!)

कम्ज़ोर हुरूफ़ थक जाते हैं, इस लिए ग़ायब हो जाते हैं या आराम करने चले जाते हैं!!! मगर इन की ख़ूबसूरती यह है कि यह एक टीम में काम करते हैं यह बदलते रहते हैं एक दूसरे से! यह सब इस लिए करते हैं ताकि आपको पढ़ने में आसानी हो!!

आईए अब हम ऐसे कम्ज़ोर फेअ़ल को सीखते हैं जिसके शुरू में कम्ज़ोर ह़र्फ़ है जैसे وَهَبَ.

इसके सेग़े बनाते वक़्त यह ख़्याल रखिए!

- **माज़ी की चाबीः** وَهَبَ. इसके सेग़े वैसे ही बनेंगे जैसे فَتَحَ فَتَحُوْا वग़ैरह। इसमें कोई नई चीज़ नहीं है।
- **मुज़ारे की चाबीः** فَتَحَ يَفْتَحُ के जैसा وَهَبَ يَوْهَبُ बनेगा। लेकिन यहाँ बोलने में आसानी करने के लिए अ़रबों ने वाव (و) को निकाल कर उस को يَهَبُ बना दिया! गोया वाव थक (و) कर ग़ायब हो गया। अब आप يَوْهَبُ के बजाए आसानी से يَهَبُ कहिए! अब इस चाबी से बक़िया सेग़े आप बना सकते हैं!
- **अम्र की चाबीः** يَهَبُ का या (ي) गिराईए और आख़िर ह़र्फ़ को साकिन कीजिए। هَبْ! अब इस चाबी से दूसरे सेग़े आप बना सकते हैं!
- فَاعِل और مَفْعُول की तरह़ وَاهِب और مَوْهُوْب बनेंगे। यहाँ कोई तब्दीली नहीं अल्ह़म्दुलिल्लाह।

www.understandquran.com

www.understandquran.com

19 وَهَبَ : उस ने अ़ता किया

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में **3** अफ़आ़ल की चाबियाँ हैं और **3** अस्मा की चाबियाँ)

فعل ماضٍ		فعل مضارع	
وَهَبَ	उस ने अ़ता किया	يَهَبُ	वह अ़ता करता है
وَهَبُوْا	उन सब ने अ़ता किया	يَهَبُوْنَ	वह सब अ़ता करते हैं
وَهَبْتَ	आप ने अ़ता किया	تَهَبُ	आप अ़ता करते हैं
وَهَبْتُ	मैं ने अ़ता किया	أَهَبُ	मैं अ़ता करता हूँ
وَهَبْتُمْ	आप सब ने अ़ता किया	تَهَبُوْنَ	आप सब अ़ता करते हैं
وَهَبْنَا	हम सब ने अ़ता किया	نَهَبُ	हम सब अ़ता करते हैं
وَهَبَتْ	उस औ़रत ने अ़ता किया	تَهَبُ	वह औ़रत अ़ता करती है

فعل أمر، نهی اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम	
هَبْ	अ़ता कर!
هَبُوْا	अ़ता करो!
لَا تَهَبْ	मत अ़ता कर!
لَا تَهَبُوْا	मत अ़ता करो
وَاهِب	अ़ता करने वाला
مَوْهُوْب	जिसको अ़ता किया गया
وَهْب	अ़ता करना

✵✵✵✵ अ़रबी बोलचाल ✵✵✵✵

هَلْ وَهَبَ؟	نَعَمْ، وَهَبَ.
هَلْ وَهَبُوْا؟	نَعَمْ، وَهَبُوْا.
هَلْ وَهَبْتَ؟	نَعَمْ، وَهَبْتُ.
هَلْ وَهَبْتُمْ؟	نَعَمْ، وَهَبْنَا.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل مضارع: هَلْ يَهَبُوْنَ زَيْدًا؟ نَعَمْ، يَهَبُوْنَ زَيْدًا.
- فعل أمر: هَبْ زَيْدًا! سَوْفَ أَهَبُ زَيْدًا.
- اسم فاعل/اسم مفعول: هَلِ اللّٰهُ وَاهِبٌ؟ نَعَمْ، اَللّٰهُ وَاهِبٌ.

وَهَبَ की तरह़ وَضَعَ (उस ने रखा) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 1c कम्ज़ोर अफ़्आल: وَعَدَ

وَعَدَ से सेग़े बनाते वक़्त यह ख़्याल रखिए:

- **माज़ी की चाबी:** وَعَدَ इसके सेग़े वैसे ही बनेंगे जैसे ضَرَبَ ضَرَبُوا वग़ैरह। इसमें कोई नई चीज़ नहीं है।
- **मुज़ारे की चाबी:** ضَرَبَ يَضْرِبُ के जैसा وَعَدَ يَوْعِدُ बनेगा। लेकिन यहाँ बोलने में आसानी करने के लिए अ़रबों ने वाव (و) को निकाल कर उस को يَعِدُ बना दिया! गोया वाव (و) थक कर ग़ायब हो गया। अब आप يَوْعِدُ के बजाए आसानी से يَعِدُ कहिए! अब इस चाबी से दूसरे सेग़े आप बना सकते हैं!
- **अम्र की चाबी:** يَعِدُ का या (ي) गिराईए और आख़िर ह़र्फ़ को साकिन कीजिए: عِدْ! अब इस चाबी से दूसरे सेग़े आप बना सकते हैं!
- فَاعِل और مَفْعُول की तरह़ وَاعِد और مَوْعُوْد बनेंगे। यहाँ कोई तब्दीली नहीं अल्ह़म्दुलिल्लाह।

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ) 93وَعَدَ: उस ने वादा किया

فعل أمر، نهى काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول		فعل مضارع		فعل ماضٍ	
वादा कर!	عِدْ	वह वादा करता है	يَعِدُ	उस ने वादा किया	وَعَدَ
वादा करो!	عِدُوْا	वह सब वादा करते हैं	يَعِدُوْنَ	उन सब ने वादा किया	وَعَدُوْا
मत वादा कर!	لَا تَعِدْ	आप वादा करते हैं	تَعِدُ	आप ने वादा किया	وَعَدْتَّ
मत वादा करो!	لَا تَعِدُوْا	मैं वादा करता हूँ	أَعِدُ	मैं ने वादा किया	وَعَدْتُّ
वादा करने वाला	وَاعِد	आप सब वादा करते हैं	تَعِدُوْنَ	आप सब ने वादा किया	وَعَدْتُّمْ
जिस से वादा किया गया	مَوْعُوْد	हम सब वादा करते हैं	نَعِدُ	हम सब ने वादा किया	وَعَدْنَا
वादा करना	وَعْد	वह औ़रत वादा करती है	تَعِدُ	उस औ़रत ने वादा किया	وَعَدَتْ

www.understandquran.com

۞۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞۞

هَلْ يَعِدُ زَيْدًا؟	نَعَمْ، يَعِدُ زَيْدًا.
هَلْ يَعِدُوْنَ زَيْدًا؟	نَعَمْ، يَعِدُوْنَ زَيْدًا.
هَلْ تَعِدُ زَيْدًا؟	نَعَمْ، أَعِدُ زَيْدًا.
هَلْ تَعِدُوْنَ زَيْدًا؟	نَعَمْ، نَعِدُ زَيْدًا.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل ماض: هَلْ وَعَدْتُّمْ سَعْدًا؟ نَعَمْ، وَعَدْنَا سَعْدًا.
- فعل أمر: عِدْ سَعْدًا! سَوْفَ أَعِدُ سَعْدًا.
- اسم فاعل/اسم مفعول: هَلْ أَنْتَ وَاعِدٌ؟ نَعَمْ، أَنَا وَاعِدٌ.

وَعَدَ की तरह़ وَجَدَ (उस ने पाया) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

ग्रामर बराए सफ़्हा 1d — कम्ज़ोर अफ़्आलः قَالَ

अब हम बीच में कम्ज़ोर वाले फ़ेअ्ल को सीखेंगेः قَالَ. इस तरह् के अफ़्आल कुरआन करीम में तक़्रीबन **4000** बार आते हैं।

- **माज़ी की चाबीः** قَالَ इस की जमा होगी قَالُوا। मगर इसके बाद قَالْتَ के बजाए قُلْتَ कहना है। कम्ज़ोर ह़र्फ़ (الف) आराम करने चला गया। आप भी के قَالْتَ बजाए आराम से कहिए قُلْتَ! बक़िया सेग़े से इस तरह् होंगे।
- **मुज़ारे की चाबीः**يَقُوْلُ अलिफ़ (ا) वाव (و) से बदल गया यानी يَقَالُ के बजाए की يَقُوْلُ. इस चाबी से बक़िया सेग़े आप बना सकते हैं।
- **अम्र की चाबीः** قُلْ. يَقُوْلُ का या(ي) गिराईए और आख़िरी ह़र्फ़ को साकिन कीजिए। قُوْلْ. कम्ज़ोर ह़र्फ़ (و) हुक्म सुनते ही डर कर भाग गया तो रह गया قُلْ!

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में **3** अफ़्आल की चाबियाँ हैं और **3** अस्मा की चाबियाँ) 　　　　उस ने कहा :قَالَ **1636**

فعل أمر، نهى काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول		فعل مضارع		فعل ماضٍ	
कह!	قُلْ	वह कहता है	يَقُوْلُ	उस ने कहा	قَالَ
कहो!	قُوْلُوْا	वह सब कहते हैं	يَقُوْلُوْنَ	उन सब ने कहा	قَالُوْا
मत कह!	لَا تَقُلْ	आप कहते हैं	تَقُوْلُ	आप ने कहा	قُلْتَ
मत कहो!	لَا تَقُوْلُوْا	मैं कहता हूँ	أَقُوْلُ	मैं ने कहा	قُلْتُ
कहने वाला	قَايِل	आप सब कहते हैं	تَقُوْلُوْنَ	आप सब ने कहा	قُلْتُمْ
जिस से कहा गया	مَقُوْل	हम सब कहते हैं	نَقُوْلُ	हम सब ने कहा	قُلْنَا
कहना	قَوْل	वह औरत कहती है	تَقُوْلُ	उस औरत ने कहा	قَالَتْ

अ़रबी बोलचाल

هَلْ قَالَ خَيْرًا؟ 　 نَعَمْ، قَالَ خَيْرًا.

هَلْ قَالُوْا خَيْرًا؟ 　 نَعَمْ، قَالُوْا خَيْرًا.

هَلْ قُلْتَ خَيْرًا؟ 　 نَعَمْ، قُلْتُ خَيْرًا.

هَلْ قُلْتُمْ خَيْرًا؟ 　 نَعَمْ، قُلْنَا خَيْرًا.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिएः

- فعل مضارع: 　 هَلْ تَقُوْلُوْنَ خَيْرًا؟ 　 نَعَمْ، نَقُوْلُ خَيْرًا.
- فعل أمر: 　 قُلْ خَيْرًا! 　 سَوْفَ أَقُوْلُ خَيْرًا.
- اسم فاعل/اسم مفعول: 　 هَلْ أَنْتُمْ قَايِلُوْنَ؟ 　 نَعَمْ، نَحْنُ قَايِلُوْنَ.

قَالَ की तरह् تَابَ (उस ने तौबा की) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह् कुछ और अफ़्आल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

www.understandquran.com

कम्ज़ोर अफ़्आलः كَانَ

قَالَ ही की तरह كَانَ है यानी उस के बीच में कम्ज़ोर ह़र्फ़ है। इसके सेगे़ قَالَ ही की तरह बनेंगे।

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आ़ल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

944 كَانَ: वह था

فعل أمر، نهى اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम		فعل مضارع		فعل ماضٍ	
तू हो!	كُنْ	वह होता है	يَكُوْنُ	वह था	كَانَ
तुम सब हो!	كُوْنُوْا	वह सब होते हैं	يَكُوْنُوْنَ	वह सब थे	كَانُوْا
तू मत हो!	لَا تَكُنْ	आप होते हैं	تَكُوْنُ	आप थे	كُنْتَ
तुम सब मत हो!	لَا تَكُوْنُوْا	मैं होता हूँ	أَكُوْنُ	मैं था	كُنْتُ
होने वाला	كَائِن	आप सब होते हैं	تَكُوْنُوْنَ	आप सब थे	كُنْتُمْ
--	-	हम सब होते हैं	نَكُوْنُ	हम सब थे	كُنَّا
होना	كَوْن	वह औ़रत होती हैं	تَكُوْنُ	वह औ़रत थी	كَانَتْ

अहम नोटः गुज़रे हुए ज़माने में जो काम हो रहा था, उस के लिए भी लफ़्ज़ كَانَ और उस के माज़ी के अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल होता है। नीचे इस की मिसालें दी गई है।

मिसालें			فعل مضارع			فعل ماضٍ	
वह अ़मल करता था	كَانَ يَعْمَلُ	=	वह अ़मल करता है	يَعْمَلُ	+	वह था	كَانَ
वह सब अ़मल करते थे	كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ		वह सब अ़मल करते हैं	يَعْمَلُوْنَ		वह सब थे	كَانُوْا
आप अ़मल करते थे	كُنْتَ تَعْمَلُ		आप अ़मल करते हैं	تَعْمَلُ		आप थे	كُنْتَ
मैं अ़मल करता था	كُنْتُ أَعْمَلُ		मैं अ़मल करता हूँ	أَعْمَلُ		मैं था	كُنْتُ
आप सब अ़मल करते थे	كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ		आप सब अ़मल करते हैं	تَعْمَلُوْنَ		आप सब थे	كُنْتُمْ
हम सब अ़मल करते थे	كُنَّا نَعْمَلُ		हम सब अ़मल करते हैं	نَعْمَلُ		हम सब थे	كُنَّا
वह औ़रत अ़मल करती थी	كَانَتْ تَعْمَلُ		वह औ़रत अ़मल करती है	تَعْمَلُ		वह औ़रत थी	كَانَتْ

www.understandquran.com

✡✡✡✡अ़रबी बोलचाल✡✡✡✡

هَلْ كَانَ يَعْمَلُ؟	نَعَمْ، كَانَ يَعْمَلُ.
هَلْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ؟	نَعَمْ، كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.
هَلْ كُنْتَ تَعْمَلُ؟	نَعَمْ، كُنْتُ أَعْمَلُ.
هَلْ كُنْتُمْ تَعْمَلُوْن؟	نَعَمْ، كُنَّا نَعْمَلُ.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل ماض: هَلْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ خَيْرًا.
- فعل أمر: كُنْ صَادِقًا! سَوْفَ أَكُوْنُ صَادِقًا.

كَانَ की तरह़ ذَاقَ (उस ने चखा) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और भी अफ़आ़ल जैसे قَالَ، قَامَ भी इसी स्टाइल पर आते हैं ।

www.understandquran.com

कम्ज़ोर अफ़्आलः زَادَ

अब हम बीच में कम्ज़ोर हर्फ़ वाले एक और फ़ेअ्ल के स्टाइल को सीखेंगेः زَادَ

- **माज़ी की चाबीः** زَادَ इस की जमा होगी زَادُوا. मगर इसके बाद زَادَتَ के बजाए زِدْتَّ कहना है। कम्ज़ोर हर्फ़ अलिफ़ (ا) आराम करने चला गया। आप भी زَادَتَ के बजाए आराम से कहिए زِدْتَّ! बक़िया सेग़े इसी तरह़ होंगे।
- **मुज़ारे की चाबीः** ضَرَبَ يَضْرِبُ की तरह़ زَادَ يَزِيْدُ. अलिफ़ (ا) या (ي) से बदल गया। अब इस चाबी से बक़िया सेग़े आप बना सकते हैं।
- **अम्र की चाबीः** يَزِيْدُ का या (ي) गिराईए और आख़िर हर्फ़ को साकिन कीजिए। زِيْدْ कम्ज़ोर हर्फ़ हुकम सुनते ही डर कर भाग गया तो रह गया زِدْ. इस चाबी से बक़िया सेग़े आप बना सकते हैं!

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

51 زَادَ: उस ने बढ़ाया

फ़ेअ्ल माज़ी (فعل ماضٍ)		फ़ेअ्ल मुज़ारे (فعل مضارع)	
زَادَ	उस ने बढ़ाया	يَزِيْدُ	वह बढ़ाता है
زَادُوْا	उन सब ने बढ़ाया	يَزِيْدُوْنَ	वह सब बढ़ाते हैं
زِدْتَّ	आप ने बढ़ाया	تَزِيْدُ	आप बढ़ाते हैं
زِدْتُّ	मैं ने बढ़ाया	أَزِيْدُ	मैं बढ़ाता हूँ
زِدْتُّمْ	आप सब ने बढ़ाया	تَزِيْدُوْنَ	आप सब बढ़ाते हैं
زِدْنَا	हम सब ने बढ़ाया	نَزِيْدُ	हम सब बढ़ाते हैं
زَادَتْ	उस औ़रत ने बढ़ाया	تَزِيْدُ	वह औ़रत बढ़ाती है

فعل أمر، نهی / اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम	
زِدْ	बढ़ा!
زِيْدُوْا	बढ़ाओ!
لَا تَزِدْ	मत बढ़ा!
لَا تَزِيْدُوْا	मत बढ़ाओ!
زَابِد	बढ़ाने वाला
مَزِيْد	जो बढ़ाया गया
زِيَادَة	बढ़ाना

www.understandquran.com

۞۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞۞

هَلْ يَزِيْدُ؟	نَعَمْ، يَزِيْدُ.
هَلْ يَزِيْدُوْنَ؟	نَعَمْ، يَزِيْدُوْنَ.
هَلْ تَزِيْدُ؟	نَعَمْ، أَزِيْدُ.
هَلْ تَزِيْدُوْنَ؟	نَعَمْ، نَزِيْدُ.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل ماض: هَلْ زِدْتُّمْ شَيْـًٔا؟ مَا زِدْنَا شَيْـًٔا.
- فعل أمر: زِدْ عِلْمًا! سَوْفَ أَزِيْدُ عِلْمًا.

زَادَ की तरह़ كَادَ (उस ने खुफ़िया तदबीर की) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

कम्ज़ोर अफ़्आ़लः دَعَا

अब हम आख़िर में कम्ज़ोर ह़र्फ़ वाले फ़ेअ़ल को सीखेंगेः دَعَا

- **माज़ी की चाबीः** دَعَا इस की जमा دَعَاوْ के बजाए होगी دَعَوْا. कम्ज़ोर ह़र्फ़ (ا) आराम करने चला गया। आप भी دَعَاوْ के बजाए आराम से कहिए دَعَوْا! बक़िया सेग़े इस तरह़ होंगे। (ـَاوْ←ـَوْ)
- **मुज़ारे की चाबीः** نَصَرَ يَنْصُرُ की तरह़ دَعَا يَدْعُوْ. अलिफ़ (ا) वाव (و) से बदल गया। इस चाबी से बक़िया सेग़े आप बना सकते हैं!
- **अम्र की चाबीः** يَدْعُوْ का या (ي) गिराईए और आख़िर ह़र्फ़ कम्ज़ोर है तो वह हुक्म सुनते ही डर कर भागेगा तो रह जाता है دْعُ. क्योंकि अ़रबी अल्फ़ाज़ के शुरू में साकिन अल्फ़ाज़ नहीं पढ़ा जाता इस लिए सामने हम्ज़ा लगाना पड़ेगा اُدْعُ. अब इस चाबी से बक़िया सेग़े आप बना सकते हैं।
- هُوَ دَعَا – هِيَ دَعَتْ यानी دَعَاتْ को खींचने के बजाए आसानी से कहिए دَعَتْ (ـَاتْ←ـَتْ)

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आ़ल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

189 دَعَا: उस ने दुआ़ की/ उस ने पुकारा

फ़ेअ़ल माज़ी (فعل ماضٍ)		फ़ेअ़ल मुज़ारे (فعل مضارع)		فعل أمر، نهی / اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम	
دَعَا	उस ने पुकारा	يَدْعُوْ	वह पुकारता है	اُدْعُ	पुकार!
دَعَوْا	उन सब ने पुकारा	يَدْعُوْنَ	वह सब पुकारते हैं	اُدْعُوْا	पुकारो!
دَعَوْتَ	आप ने पुकारा	تَدْعُوْ	आप करते हैं	لَاتَدْعُ	मत पुकार!
دَعَوْتُ	मैं ने पुकारा	أَدْعُوْ	मैं पुकारता हूँ	لَاتَدْعُوْا	मत पुकारो!
دَعَوْتُمْ	आप सब ने पुकारा	تَدْعُوْنَ	आप सब पुकारते हैं	دَاعٍ	पुकारने वाला
دَعَوْنَا	हम सब ने पुकारा	نَدْعُوْ	हम सब पुकारते हैं	مَدْعُوٌّ	जिस को पुकारा गया
دَعَتْ	उस औ़रत ने पुकारा	تَدْعُوْ	वह औ़रत पुकारती है	دُعَاء	पुकारना

www.understandquran.com

۞۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞۞

هَلْ دَعَا اللهَ؟	نَعَمْ، دَعَا اللهَ.
هَلْ دَعَوُا اللهَ؟	نَعَمْ، دَعَوُا اللهَ.
هَلْ دَعَوْتَ اللهَ؟	نَعَمْ، دَعَوْتُ اللهَ.
هَلْ دَعَوْتُمُ اللهَ؟	نَعَمْ، دَعَوْنَا اللهَ.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل مضارع: هَلْ تَدْعُوْنَ اللهَ؟ نَعَمْ، نَدْعُو اللهَ.
- فعل أمر: أُدْعُ رَبَّكَ! سَوْفَ أَدْعُوْ رَبِّيْ.
- اسم فاعل/اسم مفعول: هَلْ أَنْتُمْ دَاعُوْنَ؟ نَعَمْ، نَحْنُ دَاعُوْنَ.

دَعَا की तरह़ تَلَا (उस ने तिलावत की) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 2d कम्ज़ोर अफ़्आल: هَدٰى

अब हम ऐसे एक और फ़ेअ़्ल को सीखते हैं जिस के आख़िर में कम्ज़ोर ह़र्फ़ हैं: هَدٰى. इसके सेग़े बनाते वक़्त यह ख़्याल रखिए।

- **माज़ी की चाबी:** هَدٰى इस की जमा هَدَوْا जैसे دَعَا की जमा دَعَوْا आप ने बनाई थी। बक़िया सेग़े هَدَيْتَ और इसके तर्ज़ पर होंगे।
- **मुज़ारे की चाबी:** ضَرَبَ يَضْرِبُ की तरह् هَدٰى يَهْدِيْ. अलिफ़ (ا) या (ي) से बदल गया। यानी يَهْدٰى के बजाए يَهْدِيْ.
- يَهْدِيْ की जमा يَهْدُوْنَ होगी ताकि आप आराम से कह सकें: يَهْدُوْنَ
- **अम्र की चाबी:** يَهْدِيْ का या (ي) गिराईए और आख़िरी ह़र्फ़ कम्ज़ोर है तो वह हुक्म सुनते ही डर कर भागेगा तो रह जाता है هْدِ. चुंकि अ़रबी अल्फ़ाज़ के शुरू में साकिन अल्फ़ाज नहीं पढ़ा जाता इस लिए सामने हम्ज़ा लगाना पड़ेगा اِهْدِ. अब इस चाबी से बक़िया सेग़े आप बना सकते हैं।
- هُوَ هَدٰى – هِيَ هَدَتْ: यानी هَدَاتْ को खींचने के बजाए आसानी से कहिए هَدَتْ (ـَاتْ ← ـَتْ)

243 هَدٰى: उस ने हिदायत दी

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

فعل ماضٍ		فعل مضارع		فعل أمر، نهى / اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम	
هَدٰى	उस ने हिदायत दी	يَهْدِيْ	वह हिदायत देता है	اِهْدِ	हिदायत दे!
هَدَوْا	उन सब ने हिदायत दी	يَهْدُوْنَ	वह सब हिदायत देते हैं	اِهْدُوْا	हिदायत दो!
هَدَيْتَ	आप ने हिदायत दी	تَهْدِيْ	आप हिदायत देते हैं	لَاتَهْدِ	मत हिदायत दे!
هَدَيْتُ	मैं ने हिदायत दी	أَهْدِيْ	मैं हिदायत देता हूँ	لَاتَهْدُوْا	मत हिदायत दो!
هَدَيْتُمْ	आप सब ने हिदायत दी	تَهْدُوْنَ	आप सब हिदायत देते हैं	هَادٍ	हिदायत देने वाला
هَدَيْنَا	हम सब ने हिदायत दी	نَهْدِيْ	हम सब हिदायत देते हैं	مَهْدِيّ	जिसे हिदायत दी गई
هَدَتْ	उस औ़रत ने हिदायत दी	تَهْدِيْ	वह औ़रत हिदायत देती है	هُدًى/ هِدَايَة	हिदायत देना

www.understandquran.com

۞۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞۞

هَلْ يَهْدِيْ أَحَدًا؟	لَا يَهْدِيْ أَحَدًا (सिर्फ़ अल्लाह हिदायत देता है)
هَلْ يَهْدُوْنَ أَحَدًا؟	لَا يَهْدُوْنَ أَحَدًا.
هَلْ تَهْدِيْ أَحَدًا؟	لَا أَهْدِيْ أَحَدًا.
هَلْ تَهْدُوْنَ أَحَدًا؟	لَا نَهْدِيْ أَحَدًا.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل ماض: هَلْ هَدَوْا أَحَدًا؟ مَا هَدَوْا أَحَدًا.
- اسم فاعل/اسم مفعول: هَلِ اللّٰهُ هَادٍ؟ نَعَمْ، اَللّٰهُ هَادٍ.

هَدٰى की तरह़ جَزٰى (उस ने बदला दिया) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़्आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

हम्ज़ा वाले अफ़्आलः أَمَرَ

अब हम ऐसे फ़ेअल को सीखते हैं जिसमें हम्ज़ा है: أَمَرَ. इसका टेबल نَصَرَ يَنْصُرُ की तरह़ बनेगा। इसके सेग़े बनाते वक़्त यह ख़्याल रखिए।

- बाज़ वक़्त हम्ज़ा कम्ज़ोर ह़र्फ़ की तरह़ काम करता है। जैसे अम्र के सग़े में हम्ज़ा डर कर भाग जाएगा: مُرْ
- दो हम्ज़ा मिलते हैं तो आसानी के लिए दूसरा हम्ज़ा मद्द बन जाता है: أَأْمُرُ→اٰمُرُ

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ) 199 أَمَرَ : उस ने हुकम दिया

فعل أمر, نهی / اسم فاعل، اسم مفعول, काम का नाम		فعل مضارع		فعل ماض	
हुकम दें!	مُرْ	वह हुकम देता है	يَأْمُرُ	उस ने हुकम दिया	أَمَرَ
हुकम दो!	مُرُوْا	वह सब हुकम देते हैं	يَأْمُرُوْنَ	उन सब ने हुकम दिया	أَمَرُوْا
मत हुकम दे!	لَا تَأْمُرْ	आप हुकम देते हैं	تَأْمُرُ	आप ने हुकम दिया	أَمَرْتَ
मत हुकम दो!	لَا تَأْمُرُوْا	मैं हुकम देता हूँ	اٰمُرُ	मैं ने हुकम दिया	أَمَرْتُ
हुकुम देने वाला	اٰمِر	आप सब हुकम देते हैं	تَأْمُرُوْنَ	आप सब ने हुकम दिया	أَمَرْتُمْ
जिसको हुकम दिया गया	مَأْمُوْر	हम सब हुकम देते हैं	نَأْمُرُ	हम सब ने हुम दिया	أَمَرْنَا
हुकम देना	أَمْر	वह औ़रत हुकम देती है	تَأْمُرُ	उस औ़रत ने हुकम दिया	أَمَرَتْ

अ़रबी बोलचाल

هَلْ يَأْمُرُ بِالصَّلَاةِ؟	نَعَمْ، يَأْمُرُ بِالصَّلَاةِ.
هَلْ يَأْمُرُوْنَ بِالصَّلَاةِ؟	نَعَمْ، يَأْمُرُوْنَ بِالصَّلَاةِ.
هَلْ تَأْمُرُ بِالصَّلَاةِ؟	نَعَمْ، اٰمُرُ بِالصَّلَاةِ.
هَلْ تَأْمُرُوْنَ بِالصَّلَاةِ؟	نَعَمْ، نَأْمُرُ بِالصَّلَاةِ.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل ماض: هَلْ أَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ؟ نَعَمْ، أَمَرْتُ بِالْمَعْرُوْفِ.
- فعل أمر: مُرْ بِالْمَعْرُوْفِ! سَوْفَ اٰمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ.
- اسم فاعل/اسم مفعول: هَلْ أَنْتَ اٰمِرٌ بِالْمَعْرُوْفِ؟ نَعَمْ، أَنَا اٰمِرٌ بِالْمَعْرُوْفِ.

أَمَرَ की तरह़ أَخَذَ (उस ने पकड़ा) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़्आल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 3b यकसाँ हुरूफ़ वाले अफ़्आ़ल: ظَنَّ

अब हम ऐसे फ़ेअ़ल सीखते हैं जिसके माद्दे में दो हुरूफ़ (यकसाँ) एक जैसे हैं: ظَنَّ. इसके सेग़े बनाना बहुत आसान है।

- जहाँ कहने में मुश्किल हो, वहाँ हुरूफ़ को खोल देना है जैसे ظَنّتَ (सुकून वाली तशदीद के साथ) के बजाए ظَنَنْتَ (इस लिए के अ़रबी में एक साथ दो सुकून नहीं आते)। याद रखिए कि इस फ़ेअ़ल के सेग़े نَصَرَ يَنْصُرُ की तरह यानी ظَنَّ يَظُنُّ बनेंगे।
- **अम्र की चाबी:** يَظُنُّ का या (ي) गिराईए और आख़िरी तशदीद पर से पेश निकालिए तो रह जाता है ظُنّ. आख़िर में ज़बर को लगाना पड़ेगा क्योंकि सिर्फ़ तशदीद अ़रबी में नहीं पढ़ी जाती। इस लिए यह होगा: ظُنَّ

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में **3** अफ़्आ़ल की चाबियाँ हैं और **3** अस्मा की चाबियाँ) उस ने गुमान किया :ظَنَّ **69**

فعل أمر، نهى काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول	
ظُنَّ	गुमान कर!
ظُنُّوْا	गुमान करो!
لَا تَظُنَّ	मत गुमान कर!
لَا تَظُنُّوْا	मत गुमान करो!
ظَانٌّ	गुमान करने वाला
مَظْنُوْن	जिसका गुमान किया जाए
ظَنّ	गुमान करना

فعل ماضٍ		فعل مضارع	
ظَنَّ	उस ने गुमान किया	يَظُنُّ	वह गुमान करता है
ظَنُّوْا	उन सब ने गुमान किया	يَظُنُّوْنَ	वह सब गुमान करते हैं
ظَنَنْتَ	आप ने गुमान किया	تَظُنُّ	आप गुमान करते हैं
ظَنَنْتُ	मैं ने गुमान किया	أَظُنُّ	मैं गुमान करता हूँ
ظَنَنْتُمْ	आप सब ने गुमान किया	تَظُنُّوْنَ	आप सब गुमान करते हैं
ظَنَنَّا	हम सब ने गुमान किया	نَظُنُّ	हम सब गुमान करते हैं
ظَنَّتْ	उस औ़रत ने गुमान किया	تَظُنُّ	वह औ़रत गुमान करती है

अ़रबी बोलचाल

هَلْ ظَنَّ خَيْرًا؟ — نَعَمْ، ظَنَّ خَيْرًا.

هَلْ ظَنُّوْا خَيْرًا؟ — نَعَمْ، ظَنُّوْا خَيْرًا.

هَلْ ظَنَنْتَ خَيْرًا؟ — نَعَمْ، ظَنَنْتُ خَيْرًا.

هَلْ ظَنَنْتُمْ خَيْرًا؟ — نَعَمْ، ظَنَنَّا خَيْرًا.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل مضارع: هَلْ تَظُنُّوْنَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، نَظُنُّ خَيْرًا.
- فعل أمر: ظُنُّوْا خَيْرًا! سَوْفَ نَظُنُّ خَيْرًا.

ظَنَّ की तरह رَدَّ (उस ने वापस किया) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह कुछ और अफ़्आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 3c) यकसाँ हुरूफ़ वाले अफ़्आ़ल: ضَلَّ

पिछले सबक़ की तरह़ इस सबक़ में भी हम ऐसा फ़ेअ़ल सीखेंगे जिसके माद्दे में दो हुरूफ़ एक जैसे हैं: ضَلَّ.

- जहाँ कहने में मुश्किल हो, वहाँ हुरूफ़ को खोल देना है जैसे ضَلَّتَ (सुकून वाली तशदीद के साथ) के बजाए ضَلَلْتَ.
- इसका टेबल ضَرَبَ يَضْرِبُ की तरह़ बनेगा: ضَلَّ يَضِلُّ.
- **अम्र की चाबी:** يَضِلُّ या (ي) गिराईए और आख़िरी तशदीद पर से पेश निकालिए तो रह जाता है ضِلّ. आख़िर में ज़बर को लगाना पड़ेगा चुंकि सिर्फ़ तशदीद अ़रबी में नहीं पड़ी जाती। इस लिए यह होगा: ضِلَّ.

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आ़ल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ) वह गुमराह हुआ :ضَلَّ 112

फ़अल أمر، نهی / اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम		فعل مضارع		فعل ماضٍ	
तू गुमराह हो!	ضِلَّ	वह गुमराह होता है	يَضِلُّ	वह गुमराह हुआ	ضَلَّ
तुम सब गुमराह हो!	ضِلُّوْا	वह सब गुमराह होते हैं	يَضِلُّوْنَ	वह सब गुमराह हुए	ضَلُّوْا
तू मत गुमराह हो!	لَاتَضِلَّ	आप गुमराह होते हैं	تَضِلُّ	आप गुमराह हुए	ضَلَلْتَ
तुम सब मत गुमराह हो!	لَاتَضِلُّوْا	मैं गुमराह होता हूँ	أَضِلُّ	मैं गुमराह हुआ	ضَلَلْتُ
गुमराह होने वाला	ضَالٌّ	आप सब गुमराह होते हैं	تَضِلُّوْنَ	आप सब गुमराह हुए	ضَلَلْتُمْ
--	-	हम सब गुमराह होते हैं	نَضِلُّ	हम सब गुमराह हुए	ضَلَلْنَا
गुमराह होना	ضَلَالَة	वह औ़रत गुमराह होती है	تَضِلُّ	वह औ़रत गुमराह हुई	ضَلَّتْ

अ़रबी बोलचाल

هَلْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ؟ لَا يَضِلُّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ.

هَلْ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ؟ لَا يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ.

هَلْ تَضِلُّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ؟ لَا أَضِلُّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ.

هَلْ تَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ؟ لَا نَضِلُّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل مضارع: هَلْ يَضِلُّ عَنِ الطَّرِيْقِ؟ لَا يَضِلُّ عَنِ الطَّرِيْقِ.

ضَلَّ की तरह़ خَرَّ (वह गिरा) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़्आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 3d कम्ज़ोर हुरूफ़ और हम्ज़ा वाले अफ़्आलः شَاءَ

इस सबक़ में हम ऐसा फ़ेअ्ल सीखेंगे जिसमें हम्ज़ा भी है और कम्ज़ोर ह़र्फ़ भी, और वह हैः شَاءَ इसके सेग़े बनाते वक़्त यह ख़्याल रखिएः

- **माज़ी की चाबीः** شَاءَ. आगे شَاءَتَ के बजाय आराम से कहिए شِئْتَ. बक़िया सेग़े इसी तर्ज़ पर होंगे।
- क़ुरआने करीम में شَاءَ सिर्फ़ माज़ी और मुज़ारे की शक्ल में आया है। इस लिए हम इन्हीं सेग़ो को सीख रहे हैं।

235 **شَاءَ:** उस ने चाहा (ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

شَاءَ	उस ने चाहा	يَشَاءُ	वह चाहता है
شَاءُوْا	उन सब ने चाहा	يَشَاءُوْنَ	वह सब चाहते हैं
شِئْتَ	आप ने चाहा	تَشَاءُ	आप चाहते हैं
شِئْتُ	मैं ने चाहा	أَشَاءُ	मैं चाहता हूँ
شِئْتُمْ	आप सब ने चाहा	تَشَاءُوْنَ	आप सब चाहते हैं
شِئْنَا	हम सब ने चाहा	نَشَاءُ	हम सब चाहते हैं
شَاءَتْ	उस औ़रत ने चाहा	تَشَاءُ	वह औ़रत चाहती है

अ़रबी बोलचाल

هَلْ شَاءَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، شَاءَ خَيْرًا.

هَلْ شَاءُوْا خَيْرًا؟ نَعَمْ، شَاءُوْا خَيْرًا.

هَلْ شِئْتَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، شِئْتُ خَيْرًا.

هَلْ شِئْتُمْ خَيْرًا؟ نَعَمْ، شِئْنَا خَيْرًا.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिएः

- فعل مضارع: هَلْ تَشَاءُوْنَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، نَشَاءُ خَيْراً.

شَاءَ ही की तरह جَاءَ (वह आया) है। جَاءَ بِـ (आया साथ, यानी लाया)। यह फ़ेअ्ल सिर्फ़ माज़ी की ह़ालत में आया है। हम यहाँ सिर्फ़ माज़ी की प्रैक्टिस करेंगे, इन्शा अल्लाह!

جَاءَ، جَاءُوا، جِئْتَ، جَئْتُ، جِئْتُمْ، جِئْنَا، جَاءَتْ

شَاءَ और جَاءَ की तरह़ خَافَ (वह डरा) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़्आल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

فَتَحَ يَفْتَحُ के जैसे अफ़्आल का इआ़दा

इस सबक़ में हम उन अफ़्आ़ल को लेंगे जो इस कोर्स और पिछले कोर्स “आओ कुरआन समझें नमाज़ के ज़रिए” में فَتَحَ बाब से आए हैं।

नीचे हर फ़ेअ़्ल के साथ उसका कोड (ف: فَتَحَ), माद्दे के हुरूफ़, कुरआन के अंदर तकरार की तादाद, 6 चाबियाँ और कुरआनी मिसाल दी गई है।

कुरआनी फ़ेक़रे	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمر	فعل مضارع	فعل ماض	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ	فَتْح	مَفْتُوْح	فَاتِح	اِفْتَحْ	يَفْتَحُ	فَتَحَ	29	ف ت ح	ف	1
اَتَجْعَلُ فِيْهَا	جَعْل	مَجْعُوْل	جَاعِل	اِجْعَلْ	يَجْعَلُ	جَعَلَ	346	ج ع ل	ف	2
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا	فِعْل	مَفْعُوْل	فَاعِل	اِفْعَلْ	يَفْعَلُ	فَعَلَ	105	ف ع ل	ف	3
وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ	خِدَاع	مَخْدُوْع	خَادِع	اِخْدَعْ	يَخْدَعُ	خَدَعَ	3	خ د ع	ف	4
ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ	ذَهَاب	–	ذَاهِب	اِذْهَبْ	يَذْهَبُ	ذَهَبَ	37	ذ ه ب	ف	5
وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ	قَطْع	مَقْطُوْع	قَاطِع	اِقْطَعْ	يَقْطَعُ	قَطَعَ	15	ق ط ع	ف	6

✡✡✡ अ़रबी बोलचाल ✡✡✡

فَتَحَ		
نَعَمْ، فَتَحْتُ	←	هَلْ فَتَحْتَ؟
نَعَمْ، فَتَحْنَا	←	هَلْ فَتَحْتُمْ؟
نَعَمْ، أَفْتَحُ	←	هَلْ تَفْتَحُ؟
نَعَمْ، نَفْتَحُ	←	هَلْ تَفْتَحُونَ؟
أَفْتَحُ	←	اِفْتَحْ!
نَفْتَحُ	←	اِفْتَحُوا!

جَعَلَ		
نَعَمْ، جَعَلْتُ	←	هَلْ جَعَلْتَ؟
نَعَمْ، جَعَلْنَا	←	هَلْ جَعَلْتُمْ؟
نَعَمْ، أَجْعَلُ	←	هَلْ تَجْعَلُ؟
نَعَمْ، نَجْعَلُ	←	هَلْ تَجْعَلُوْنَ؟
أَجْعَلُ	←	اِجْعَلْ!
نَجْعَلُ	←	اِجْعَلُوْا!

فَعَلَ		
نَعَمْ، فَعَلْتُ	←	هَلْ فَعَلْتَ؟
نَعَمْ، فَعَلْنَا	←	هَلْ فَعَلْتُمْ؟
نَعَمْ، أَفْعَلُ	←	هَلْ تَفْعَلُ؟
نَعَمْ، نَفْعَلُ	←	هَلْ تَفْعَلُوْنَ؟
أَفْعَلُ	←	اِفْعَلْ!
نَفْعَلُ	←	اِفْعَلُوْا!

✡✡✡ अ़रबी बोलचाल ✡✡✡

خَدَعَ		
مَا خَدَعْتُ.	←	هَلْ خَدَعْتَ؟
مَا خَدَعْنَا.	←	هَلْ خَدَعْتُمْ؟
لَا أَخْدَعُ.	←	هَلْ تَخْدَعُ؟
لَا نَخْدَعُ.	←	هَلْ تَخْدَعُوْنَ؟
لَا أَخْدَعُ.	←	لَا تَخْدَعْ!
لَا نَخْدَعُ.	←	لَا تَخْدَعُوْا!

ذَهَبَ		
نَعَمْ، ذَهَبْتُ.	←	هَلْ ذَهَبْتَ؟
نَعَمْ، ذَهَبْنَا.	←	هَلْ ذَهَبْتُمْ؟
نَعَمْ، أَذْهَبُ.	←	هَلْ تَذْهَبُ؟
نَعَمْ، نَذْهَبُ.	←	هَلْ تَذْهَبُوْنَ؟
أَذْهَبُ.	←	اِذْهَبْ!
نَذْهَبُ.	←	اِذْهَبُوْا!

قَطَعَ		
مَا قَطَعْتُ.	←	هَلْ قَطَعْتَ؟
مَا قَطَعْنَا.	←	هَلْ قَطَعْتُمْ؟
لَا أَقْطَعُ.	←	هَلْ تَقْطَعُ؟
لَا نَقْطَعُ.	←	هَلْ تَقْطَعُوْنَ؟
لَا أَقْطَعُ.	←	لَا تَقْطَعْ!
لَا نَقْطَعُ.	←	لَا تَقْطَعُوْا!

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 4b — نَصَرَ يَنْصُرُ के जैसे अफ़्आ़ल का इआ़दा

इस सबक़ में हम उन अफ़्आ़ल को लेंगे जो इस कोर्स और पिछले कोर्स “आओ कुरआन समझें नमाज़ के ज़रिए” में نَصَرَ बाब से आए हैं।

नीचे हर फ़ेअ़्ल के साथ उसका कोड (نـ: نَصَرَ), माद्दे के हुरूफ़, कुरआन के अंदर तकरार की तादाद, 6 चाबियाँ और कुरआनी मिसाल दी गई है।

कुरआ़नी फ़ेक़रे	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ	نَصْر	مَنْصُوْر	نَاصِر	اُنْصُرْ	يَنْصُرُ	نَصَرَ	94	ن ص ر	نـ	1
مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ	خَلْق	مَخْلُوْق	خَالِق	اُخْلُقْ	يَخْلُقُ	خَلَقَ	248	خ ل ق	نـ	2
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ	عِبَادَة	مَعْبُوْد	عَابِد	اُعْبُدْ	يَعْبُدُ	عَبَدَ	143	ع ب د	نـ	3
أَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ	ذِكْر	مَذْكُوْر	ذَاكِر	اُذْكُرْ	يَذْكُرُ	ذَكَرَ	187	ذ ك ر	نـ	4
أَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ	شُكْر	مَشْكُوْر	شَاكِر	اُشْكُرْ	يَشْكُرُ	شَكَرَ	65	ش ك ر	نـ	5
وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللهِ اَفْوَاجًا	دُخُوْل	مَدْخُوْل	دَاخِل	اُدْخُلْ	يَدْخُلُ	دَخَلَ	78	د خ ل	نـ	6
وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ	حَسَد	مَحْسُوْد	حَاسِد	اُحْسُدْ	يَحْسُدُ	حَسَدَ	5	ح س د	نـ	7
وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا	أَكْل	مَأْكُوْل	اٰكِل	كُلْ	يَأْكُلُ	أَكَلَ	101	أ ك ل	نـ	8
وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ	أَمْر	مَأْمُوْر	اٰمِر	مُرْ	يَأْمُرُ	أَمَرَ	244	أ م ر	نـ	9
لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ	أَخْذ	مَأْخُوْذ	اٰخِذ	خُذْ	يَأْخُذُ	أَخَذَ	135	أ خ ذ	نـ	10
وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ	تَرْك	مَتْرُوْك	تَارِك	اُتْرُكْ	يَتْرُكُ	تَرَكَ	41	ت ر ك	نـ	11
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ	خُلْد، خُلُوْد		خَالِد	اُخْلُدْ	يَخْلُدُ	خَلَدَ	83	خ ل د	نـ	12
وَاللهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ	رِزْق	مَرْزُوْق	رَازِق	اُرْزُقْ	يَرْزُقُ	رَزَقَ	122	ر ز ق	نـ	13
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ	سُجُوْد	مَسْجُوْد	سَاجِد	اُسْجُدْ	يَسْجُدُ	سَجَدَ	64	س ج د	نـ	14
يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ	سَكَن		سَاكِن	اُسْكُنْ	يَسْكُنُ	سَكَنَ	17	س ك ن	نـ	15

www.understandquran.com

❁❁❁अ़रबी बोलचाल❁❁❁

شَكَرَ		
هَلْ شَكَرْتَ اللهَ؟	←	نَعَمْ، شَكَرْتُ اللهَ.
هَلْ شَكَرْتُمُ اللهَ؟	←	نَعَمْ، شَكَرْنَا اللهَ.
هَلْ تَشْكُرُ اللهَ؟	←	نَعَمْ، أَشْكُرُ اللهَ.
هَلْ تَشْكُرُوْنَ اللهَ؟	←	نَعَمْ، نَشْكُرُ اللهَ.
أُشْكُرِ اللهَ!	←	أَشْكُرُ اللهَ.
أُشْكُرُوا اللهَ!	←	نَشْكُرُ اللهَ.

دَخَلَ		
هَلْ دَخَلْتَ؟	←	نَعَمْ، دَخَلْتُ.
هَلْ دَخَلْتُمْ؟	←	نَعَمْ، دَخَلْنَا.
هَلْ تَدْخُلُ؟	←	نَعَمْ، أَدْخُلُ.
هَلْ تَدْخُلُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَدْخُلُ.
أُدْخُلْ!	←	أَدْخُلُ
أُدْخُلُوْا!	←	نَدْخُلُ.

❁❁❁अ़रबी बोलचाल❁❁❁

أَكَلَ		
هَلْ أَكَلْتَ؟	←	نَعَمْ، أَكَلْتُ.
هَلْ أَكَلْتُمْ؟	←	نَعَمْ، أَكَلْنَا.
هَلْ تَأْكُلُ؟	←	نَعَمْ، اٰكُلُ.
هَلْ تَأْكُلُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَأْكُلُ.
كُلْ!	←	اٰكُلُ.
كُلُوْا!	←	نَأْكُلُ.

أَخَذَ		
هَلْ أَخَذْتَ؟	←	نَعَمْ، أَخَذْتُ.
هَلْ أَخَذْتُمْ؟	←	نَعَمْ، أَخَذْنَا.
هَلْ تَأْخُذُ؟	←	نَعَمْ، اٰخُذُ.
هَلْ تَأْخُذُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَأْخُذُ.
خُذْ!	←	اٰخُذُ.
خُذُوْا!	←	نَأْخُذُ.

❁❁❁अ़रबी बोलचाल❁❁❁

تَرَكَ		
هَلْ تَرَكْتَ؟	←	نَعَمْ، تَرَكْتُ.
هَلْ تَرَكْتُمْ؟	←	نَعَمْ، تَرَكْنَا.

سَجَدَ		
هَلْ تَسْجُدُ لِلّٰهِ؟	←	نَعَمْ، أَسْجُدُ لِلّٰهِ.
هَلْ تَسْجُدُوْنَ لِلّٰهِ؟	←	نَعَمْ، نَسْجُدُ لِلّٰهِ.

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 4c — ضَرَبَ ،نَصَرَ के जैसे अफ़्आ़ल का इआ़दा

इस सबक़ में हम उन अफ़्आ़ल को लेंगे जो इस कोर्स और पिछले कोर्स “आओ क़ुरआन समझें नमाज़ के ज़रिए” में نَصَرَ बाब से आए हैं।

नीचे हर फ़ेअ़्ल के साथ उसका कोड (نـ: نَصَرَ, ضـ: ضَرَبَ), माद्दे के हुरूफ़, क़ुरआन के अंदर तकरार की तादाद, 6 चाबियाँ और क़ुरआनी मिसाल दी गई है।

क़ुरआनी फ़ेक़रे	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ	نَصْر	مَنْصُوْر	نَاصِر	اُنْصُرْ	يَنْصُرُ	نَصَرَ	94	ن ص ر	نـ	1
قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	461	ك ف ر	نـ	2
وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ	شُعُوْر	مَشْعُوْر	شَاعِر	اُشْعُرْ	يَشْعُرُ	شَعَرَ	30	ش ع ر	نـ	3
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	صِدْق	مَصْدُوْق	صَادِق	اُصْدُقْ	يَصْدُقُ	صَدَقَ	89	ص د ق	نـ	4
وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ	فِسْق	–	فَاسِق	اُفْسُقْ	يَفْسُقُ	فَسَقَ	54	ف س ق	نـ	5
وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ	كِتْمَان	مَكْتُوْم	كَاتِم	اُكْتُمْ	يَكْتُمُ	كَتَمَ	21	ك ت م	نـ	6
اِنَّ اللهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا	ضَرْب	مَضْرُوْب	ضَارِب	اِضْرِبْ	يَضْرِبُ	ضَرَبَ	58	ض ر ب	ضـ	7
صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ	رُجُوْع	–	رَاجِع	اِرْجِعْ	يَرْجِعُ	رَجَعَ	86	ر ج ع	ضـ	8
وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ	ظُلْم	مَظْلُوْم	ظَالِم	اِظْلِمْ	يَظْلِمُ	ظَلَمَ	266	ظ ل م	ضـ	9
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ	مِلْك	مَمْلُوْك	مَالِك	اِمْلِكْ	يَمْلِكُ	مَلَكَ	48	م ل ك	ضـ	10
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ	كَذِب	مَكْذُوْب	كَاذِب	اِكْذِبْ	يَكْذِبُ	كَذَبَ	77	ك ذ ب	ضـ	11

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

كَفَرَ		
هَلْ كَفَرْتَ؟	←	مَا كَفَرْتُ.
هَلْ كَفَرْتُمْ؟	←	مَا كَفَرْنَا.
هَلْ تَكْفُرُ؟	←	لَا أَكْفُرُ.
هَلْ تَكْفُرُوْنَ؟	←	لَا نَكْفُرُ.
لَا تَكْفُرْ!	←	لَا أَكْفُرُ.
لَا تَكْفُرُوْا!	←	لَا نَكْفُرُ.

دَخَلَ		
هَلْ صَدَقْتَ؟	←	نَعَمْ، صَدَقْتُ.
هَلْ صَدَقْتُمْ؟	←	نَعَمْ، صَدَقْنَا.
هَلْ تَصْدُقُ؟	←	نَعَمْ، أَصْدُقُ.
هَلْ تَصْدُقُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَصْدُقُ.
اُصْدُقْ!	←	أَصْدُقُ.
اُصْدُقُوْا!	←	نَصْدُقُ.

www.understandquran.com

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

فَسَق		
نَعَمْ، فَسَقُوْا	←	هَلْ فَسَقُوْا؟
نَعَمْ، يَفْسُقُوْنَ	←	هَلْ يَفْسُقُوْنَ؟

شَعَرَ		
نَعَمْ، أَشْعُرُ.	←	هَلْ تَشْعُرُ؟
نَعَمْ، نَشْعُرُ.	←	هَلْ تَشْعُرُوْنَ؟

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

كَذَبَ		
مَا كَذَبْتُ.	←	هَلْ كَذَبْتَ؟
مَا كَذَبْنَا.	←	هَلْ كَذَبْتُمْ؟
لَا أَكْذِبُ.	←	هَلْ تَكْذِبُ؟
لَا نَكْذِبُ.	←	هَلْ تَكْذِبُوْنَ؟
لَا أَكْذِبُ.	←	لَا تَكْذِبْ!
لَا نَكْذِبُ.	←	لَا تَكْذِبُوْا!

ظَلَمَ		
مَا ظَلَمْتُ.	←	هَلْ ظَلَمْتَ؟
مَا ظَلَمْنَا.	←	هَلْ ظَلَمْتُمْ؟
لَا أَظْلِمُ.	←	هَلْ تَظْلِمُ؟
لَا نَظْلِمُ.	←	هَلْ تَظْلِمُوْنَ؟
لَا أَظْلِمُ.	←	لَا تَظْلِمْ!
لَا نَظْلِمُ.	←	لَا تَظْلِمُوْا!

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

رَجَعَ		
نَعَمْ، أَرْجِعُ إِلَى اللهِ.	←	هَلْ تَرْجِعُ إِلَى اللهِ؟
نَعَمْ، نَرْجِعُ إِلَى اللهِ.	←	هَلْ تَرْجِعُوْنَ إِلَى اللهِ؟

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 4d سَمِعَ يَسْمَعُ، وَهَبَ يَهَبُ، وَعَدَ يَعِدُ के जैसे अफ़्आ़ल का इआ़दा

इस सबक़ में हम उन अफ़्आ़ल को लेंगे जो इस कोर्स और पिछले कोर्स “आओ क़ुरआन समझें नमाज़ के ज़रिए” में سَمِعَ، وَهَبَ، وَعَدَ बाब से आए हैं।

नीचे हर फ़ेअ़्ल के साथ उसका कोड (سـ: سَمِعَ، وھـ: وَهَبَ، وعـ: وَعَدَ), माद्दे के हुरूफ़, क़ुरआन के अंदर तकरार की तादाद, 6 चाबियाँ और क़ुरआनी मिसाल दी गई है।

क़ुरआनी फ़ेक़रे	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ	سَمَاعَة، سَمْع	مَسْمُوْع	سَامِع	اِسْمَعْ	يَسْمَعُ	سَمِعَ	147	س م ع	سـ	1
اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	518	ع ل م	سـ	2
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ	عَمَل	مَعْمُوْل	عَامِل	اِعْمَلْ	يَعْمَلُ	عَمِلَ	318	ع م ل	سـ	3
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ	حَمْد	مَحْمُوْد	حَامِد	اِحْمَدْ	يَحْمَدُ	حَمِدَ	46	ح م د	سـ	4
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ	خُسْر،خُسْرَان	مَخْسُوْر	خَاسِر	اِخْسَرْ	يَخْسَرُ	خَسِرَ	51	خ س ر	سـ	5
أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ	شَهَادَة، شُهُوْد	مَشْهُوْد	شَاهِد	اِشْهَدْ	يَشْهَدُ	شَهِدَ	90	ش ہ د	سـ	6
يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ	عَهْد	مَعْهُوْد	عَاهِد	اِعْهَدْ	يَعْهَدُ	عَهِدَ	35	ع ہ د	سـ	7
وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً	وَهْب	مَوْهُوْب	وَاهِب	هَبْ	يَهَبُ	وَهَبَ	22	و ہ ب	وھـ	8
اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ	وُقُوْع	مَوْقُوْع	وَاقِع	قَعْ	يَقَعُ	وَقَعَ	20	و ق ع	وھـ	9
اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ	وَعْد	مَوْعُوْد	وَاعِد	عِدْ	يَعِدُ	وَعَدَ	139	و ع د	وعـ	10
وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى	وُجُوْد	مَوْجُوْد	وَاجِد	جِدْ	يَجِدُ	وَجَدَ	107	و ج د	وعـ	11
وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ	وُصُوْل	مَوْصُوْل	وَاصِل	صِلْ	يَصِلُ	وَصَلَ	10	و ص ل	وعـ	12
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ	وِلَادَة	مَوْلُوْد	وَالِد	لِدْ	يَلِدُ	وَلَدَ	29	و ل د	وعـ	13
وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ	وِقَايَة	مَوْقِيّ	وَاقٍ	قِ	يَقِيْ	وَقٰى	19	و ق ى	وعـ	14

www.understandquran.com

✡✡✡अ़रबी बोलचाल✡✡✡

شَهِدَ		
هَلْ شَهِدْتَّ؟	←	نَعَمْ، شَهِدْتُّ.
هَلْ شَهِدْتُّمْ؟	←	نَعَمْ، شَهِدْنَا.
هَلْ تَشْهَدُ؟	←	نَعَمْ، أَشْهَدُ.
هَلْ تَشْهَدُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَشْهَدُ.

وَعَدَ		
هَلْ وَعَدْتَّ؟	←	نَعَمْ، وَعَدْتُّ.
هَلْ وَعَدْتُّمْ؟	←	نَعَمْ، وَعَدْنَا.
هَلْ تَعِدُ؟	←	نَعَمْ، أَعِدُ.
هَلْ تَعِدُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَعِدُ.
عِدْ!	←	أَعِدُ.
عِدُوْا!	←	نَعِدُ.

✡✡✡अ़रबी बोलचाल✡✡✡

وَجَدَ		
هَلْ وَجَدْتَّ؟	←	نَعَمْ، وَجَدْتُّ.
هَلْ وَجَدْتُّمْ؟	←	نَعَمْ، وَجَدْنَا.
هَلْ تَجِدُ؟	←	نَعَمْ، أَجِدُ.
هَلْ تَجِدُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَجِدُ.
جِدْ!	←	أَجِدُ.
جِدُوْا!	←	نَجِدُ

وَصَلَ		
هَلْ وَصَلْتَ؟	←	نَعَمْ، وَصَلْتُ.
هَلْ وَصَلْتُمْ؟	←	نَعَمْ، وَصَلْنَا.
هَلْ تَصِلُ؟	←	نَعَمْ، أَصِلُ.
هَلْ تَصِلُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَصِلُ.

ग्रामर बराए सफ़्हा 5a — قَالَ، زَادَ، شَاءَ के जैसे अफ़्आल का इआदा

इस सबक़ में हम उन अफ़्आल को लेंगे जो इस कोर्स और पिछले कोर्स “आओ क़ुरआन समझें नमाज़ के ज़रिए” में قَالَ، زَادَ، شَاءَ बाब से आए हैं।

नीचे हर फ़ेअ़्ल के साथ उसका कोड (قا: قَالَ، زا: زَادَ، شا: شَاءَ), माद्दे के हुरूफ़, क़ुरआन के अंदर तकरार की तादाद, 6 चाबियाँ और क़ुरआनी मिसाल दी गई है।

क़ुरआनी फ़ेक़रे	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	1715	ق و ل	قا	1
كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ	ذَوْق	مَذُوْق	ذَايِق	ذُقْ	يَذُوْقُ	ذَاقَ	41	ذ و ق	قا	2
فَتَابَ عَلَيْهِ	تَوْبَة		تَايِب	تُبْ	يَتُوْبُ	تَابَ	72	ت و ب	قا	3
فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ	كَوْن	–	كَايِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	1358	ك و ن	قا	4
قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ	قِيَام، قَوْمَة	–	قَايِم	قُمْ	يَقُوْمُ	قَامَ	55	ق و م	قا	5
رَبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا	زِيَادَة	مَزِيْد	زَايِد	زِدْ	يَزِيْدُ	زَادَ	53	ز ي د	زا	6
اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا	كَيْد	مَكِيْد	كَايِد	كِدْ	يَكِيْدُ	كَادَ	35	ك ي د	زا	7
إِنْ شَاءَ اللّٰهُ	مَشِيْئَة	مَشِيْء	شَاءٍ	شَأْ	يَشَاءُ	شَاءَ	236	ش ي ئ	شا	8
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ	خَوْف، خِيْفَة	مَخُوْف	خَايِف	خَفْ	يَخَافُ	خَافَ	118	خ و ف	شا	9

अ़रबी बोलचाल

تَابَ		
هَلْ تُبْتَ؟	←	نَعَمْ، تُبْتُ.
هَلْ تُبْتُمْ؟	←	نَعَمْ، تُبْنَا.
هَلْ تَتُوْبُ؟	←	نَعَمْ، أَتُوْبُ.
هَلْ تَتُوْبُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَتُوْبُ.
تُبْ!	←	أَتُوْبُ.
تُوْبُوْا!	←	نَتُوْبُ.

قَامَ		
قُمْ!	←	أَقُوْمُ.
قُوْمُوْا!	←	نَقُوْمُ.

www.understandquran.com

www.understandquran.com

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

زَادَ		
هَلْ زِدْتَّ؟	←	نَعَمْ، زِدْتُّ.
هَلْ زِدْتُّمْ؟	←	نَعَمْ، زِدْنَا.
هَلْ تَزِيْدُ؟	←	نَعَمْ، أَزِيْدُ.
هَلْ تَزِيْدُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَزِيْدُ.
زِدْ!	←	أَزِيْدُ.
زِيْدُوْا!	←	نَزِيْدُ.

خَافَ		
هَلْ خِفْتَ؟	←	مَا خِفْتُ.
هَلْ خِفْتُمْ؟	←	مَا خِفْنَا.
هَلْ تَخَافُ؟	←	لَا أَخَافُ.
هَلْ تَخَافُوْنَ؟	←	لَا نَخَافُ.
لَا تَخَفْ!	←	لَا أَخَافُ.
لَا تَخَافُوْا!	←	لَا نَخَافُ.

ग्रामर बराए सफ़्हा 5b   ضَلَّ، ظَنَّ، هَدٰى، دَعَا के जैसे अफ़्आल का इआदा

इस सबक़ में हम उन अफ़्आल को लेंगे जो इस कोर्स और पिछले कोर्स "आओ कुरआन समझें नमाज़ के ज़रिए" में ضَلَّ، ظَنَّ، هَدٰى، دَعَا बाब से आए हैं।

नीचे हर फ़ेअ़्ल के साथ उसका कोड (دع: دَعَا، هد: هَدٰى، ظن: ظَنَّ، ضل: ضَلَّ), माद्दे के हुरूफ़, कुरआन के अंदर तकरार की तादाद, 6 चाबियाँ और कुरआनी मिसाल दी गई है।

कुरआनी फ़ेक़रे	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ	دُعَاء، دَعْوَة	مَدْعُوّ	دَاعٍ	أُدْعُ	يَدْعُوْ	دَعَا	199	د ع و	دع	1
اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللهِ	تِلَاوَة	مَتْلُوّ	تَالٍ	أُتْلُ	يَتْلُوْ	تَلَا	63	ت ل ا	دع	2
وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ	خُلُوّ	–	خَالٍ	أُخْلُ	يَخْلُوْ	خَلَا	26	خ ل و	دع	3
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ	هُدًى/هِدَايَة	مَهْدِيّ	هَادٍ	اِهْدِ	يَهْدِيْ	هَدٰى	161	ه د ي	هد	4
جَزَاكَ اللهُ	جَزَاء	مَجْزِيّ	جَازٍ	اِجْزِ	يَجْزِيْ	جَزٰى	116	ج ز ى	هد	5
فَأْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ	إِتْيَان	مَأْتِيّ	اٰتٍ	اِئْتِ	يَأْتِيْ	أَتٰى	264	أ ت ي	هد	6
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ	جَرَيَان	–	جَارٍ	اِجْرِ	يَجْرِيْ	جَرٰى	60	ج ر ي	هد	7
كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ	مَشْي	مَمْشِيّ	مَاشٍ	اِمْشِ	يَمْشِيْ	مَشٰى	22	م ش ي	هد	8
اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ	ظَنّ	مَظْنُوْن	ظَانّ	ظُنَّ	يَظُنُّ	ظَنَّ	68	ظ ن ن	ظن	9
اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ	رَدّ	مَرْدُوْد	رَادّ	رُدَّ	يَرُدُّ	رَدَّ	44	ر د د	ظن	10
وَيَمُدُّهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ	مَدّ	مَمْدُوْد	مَادّ	مُدَّ	يَمُدُّ	مَدَّ	17	م د د	ظن	11
وَلَا الضَّآلِّيْنَ	ضَلَالَة، ضَلَال	مَضْلُوْل	ضَالّ	ضِلَّ	يَضِلُّ	ضَلَّ	113	ض ل ل	ضل	12
وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا	خَرّ	–	خَارّ	اِخْرِرْ	يَخِرُّ	خَرَّ	12	خ ر ر	ضل	13
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ	حَقّ	–	حَقِيق	اِحْقِقْ	يَحِقُّ	حَقَّ	270	ح ق ق	ضل	14

www.understandquran.com

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

تَلَا		
هَلْ تَلَوْتَ الْقُرْاٰنَ؟	←	نَعَمْ، تَلَوْتُ الْقُرْاٰنَ.
هَلْ تَلَوْتُمُ الْقُرْاٰنَ؟	←	نَعَمْ، تَلَوْنَا الْقُرْاٰنَ.
هَلْ تَتْلُو الْقُرْاٰنَ؟	←	نَعَمْ، أَتْلُو الْقُرْاٰنَ.
هَلْ تَتْلُوْنَ الْقُرْاٰنَ؟	←	نَعَمْ، نَتْلُو الْقُرْاٰنَ.
أُتْلُ الْقُرْاٰنَ!	←	أَتْلُو الْقُرْاٰنَ.
أُتْلُوا الْقُرْاٰنَ!	←	نَتْلُو الْقُرْاٰنَ.

أَتٰى		
هَلْ أَتَيتَ؟	←	نَعَمْ، أَتَيْتُ.
هَلْ أَتَيْتُمْ؟	←	نَعَمْ، أَتَيْنَا.
هَلْ تَأْتِيْ؟	←	نَعَمْ، اٰتِيْ.
هَلْ تَأْتُوْنَ؟	←	نَعَمْ، نَأْتِيْ.

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

مَشٰى		
اِمْشِ!	←	أَمْشِيْ.
اِمْشُوْا!	←	نَمْشِيْ.

ضَلَّ		
هَلْ ضَلَلْتَ؟	←	مَا ضَلَلْتُ.
هَلْ ضَلَلْتُمْ؟	←	مَا ضَلَلْنَا.
هَلْ تَضِلُّ؟	←	لَا أَضِلُّ.
هَلْ تَضِلُّوْنَ؟	←	لَا نَضِلُّ.

ग्रामर बराए सफ़्हा	5c	कम्ज़ोर अफ़्आल: رَضِيَ، نَسِيَ

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़्आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

64 رَضِيَ: वह राज़ी हुआ

फ़ेल अम्र, नही काम का नाम, इस्म फ़ाइल, इस्म मफ़ऊल / فعل أمر، نهى / اسم فاعل، اسم مفعول		فعل مضارع		فعل ماضٍ	
राज़ी हो!	اِرْضَ	वह राज़ी होता है	يَرْضٰى	वह राज़ी हुआ	رَضِيَ
राज़ी हो!	اِرْضَوْا	वह सब राज़ी होते हैं	يَرْضَوْنَ	वह सब राज़ी हुए	رَضُوْا
मत राज़ी हो!	لَا تَرْضَ	आप राज़ी होते हैं	تَرْضٰى	आप राज़ी हुए	رَضِيْتَ
मत राज़ी हो	لَا تَرْضَوْا	मैं राज़ी होता हूँ	أَرْضٰى	मैं राज़ी हुआ	رَضِيْتُ
राज़ी होने वाला	رَاضٍ	आप सब राज़ी होते हैं	تَرْضَوْنَ	आप सब राज़ी हुए	رَضِيْتُمْ
जिस से राज़ी हुआ जाए	مَرْضِيّ	हम सब राज़ी होते हैं	نَرْضٰى	हम सब राज़ी हुए	رَضِيْنَا
राज़ी होना!	رِضَاء	वह औरत राज़ी होती है	تَرْضٰى	वह औरत राज़ी हुई	رَضِيَتْ

۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞

رَضِيَ

نَعَمْ، يَرْضٰى.	←	هَلْ يَرْضٰى؟	نَعَمْ، رَضِيَ.	←	هَلْ رَضِيَ؟
نَعَمْ، يَرْضَوْنَ.	←	هَلْ يَرْضَوْنَ؟	نَعَمْ، رَضُوْا.	←	هَلْ رَضُوْا؟
نَعَمْ، أَرْضٰى.	←	هَلْ تَرْضٰى؟	نَعَمْ، رَضِيْتُ.	←	هَلْ رَضِيْتَ؟
نَعَمْ، نَرْضٰى.	←	هَلْ تَرْضَوْنَ؟	نَعَمْ، رَضِيْنَا.	←	هَلْ رَضِيْتُمْ؟

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل مضارع: هَلْ تَرْضَوْنَ؟ نَعَمْ، نَرْضٰى.
- فعل أمر: اِرْضَ! سَوْفَ أَرْضٰى.
- اسم فاعل/اسم مفعول: هَلْ أَنْتُمْ رَاضُوْنَ؟ نَعَمْ، نَحْنُ رَاضُوْنَ.

www.understandquran.com

www.understandquran.com

36 نَسِيَ: वह भूल गया

(ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

فعل ماضٍ		فعل مضارع		فعل أمر، نهى / اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम	
نَسِيَ	वह भूल गया	يَنْسٰى	वह भूलता है	اِنْسَ	भूल जा!
نَسُوْا	वह भूल गए	يَنْسَوْنَ	वह सब भूलते हैं	اِنْسَوْا	भूल जाओ!
نَسِيْتَ	आप भूल गए	تَنْسٰى	आप भूलते हैं	لَا تَنْسَ	मत भूल जा!
نَسِيْتُ	मैं भूल गया	أَنْسٰى	मैं भूलता हूँ	لَا تَنْسَوْا	मत भूल जाओ!
نَسِيْتُمْ	आप सब भूल गए	تَنْسَوْنَ	आप सब भूलते हैं	نَاسٍ	भूलने वाला
نَسِيْنَا	हम सब भूल गए	نَنْسٰى	हम सब भूलते हैं	مَنْسِيّ	जिस को भुला दिया जाए
نَسِيَتْ	वह औ़रत भूल गई	تَنْسٰى	वह औ़रत भूलती है	نِسْيَان	भूलना

۞۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞۞

هَلْ يَنْسٰى اللهَ؟	لَا يَنْسٰى اللهَ.
هَلْ يَنْسَوْنَ اللهَ؟	لَا يَنْسَوْنَ اللهَ.
هَلْ تَنْسٰى اللهَ؟	لَا أَنْسٰى اللهَ.
هَلْ تَنْسَوْنَ اللهَ؟	لَا نَنْسٰى اللهَ.

क्लास के बाद आपस में सवालात व जवाबात कीजिए:

- فعل ماض: هَلْ نَسِيْتُمُ اللهَ؟ مَا نَسِيْنَا اللهَ.

شَاءَ और جَاءَ की तरह़ خَشِيَ (वह डरा) का पूरा टेबल बनाया जा सकता है। इसी तरह़ कुछ और अफ़आ़ल भी इसी स्टाइल पर आते हैं।

www.understandquran.com

इआ़दाः टूटी हुई जमा

यह आप जान चुके हैं की अ़रबी में अल्फ़ाज़ की तीन क़िस्में होती हैः इस्म, फ़ेअ़ल, ह़र्फ़।

- ह़र्फ़ की कोई जमा नहीं आती और न यह बदलता है।
- अफ़्आ़ल के बारे में आप पढ़ते आ रहे हैं।
- अब हम इस्म को लेते हैं। इस्म कभी वाह़िद होता है तो कभी जमा। अ़रबी में इस्म की जमा दो तरह़ की होती है,
    - **जमा सालिम** (साबित जमा) जैसे مُسْلِم से مُسْلِمُوْن،مُسْلِمِيْن, या, مُؤْمِن से, مُؤْمِنُوْن،مُؤْمِنِيْن वग़ैरह।
    - या مُسْلِمَة से مُسْلِمَات या مُؤْمِنَة से مُؤْمِنَات वग़ैरह।
    - जमा मुकस्सर (टूटी हुई जमा)। इसके कई तरीके या कई वज़न है, जैसे عَمَل से أَعْمَال, قَلْب से قُلُوْب, वग़ैरह।

नीचे जमा मुकस्सर की मुख़्तलिफ़ मिसाले दी जा रही हैं। अल्फ़ाज़ वही है जो हमारे पहले कोर्स में और कुरआन मजीद के इब्तिदाई 5 सफ़्ह़ात में आए हैं।

मिसालें	तर्जमा	जमा	वाह़िद	वज़न नंबर
إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَات	अ़मल, काम	أَعْمَال	عَمَل	1
وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ	आँख	أَبْصَار	بَصَر	1
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا	मिसाल	أَمْثَال	مَثَل	1
ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ	रोशनी, नूर	أَنْوَار	نُوْر	1
يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ	कान	اٰذَان	أُذُن	1
فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا	शरीक	أَنْدَاد	نِدّ	1
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ	नहर	أَنْهَار	نَهَر	1
وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ	जोड़ा	أَزْوَاج	زَوْج	1
لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ	अक़्ल	أَلْبَاب	لُبّ	1
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ	रब	أَرْبَاب	رَبّ	1
اَلَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ	क़लम	أَقْلَام	قَلَم	1
وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا	फ़ौज	أَفْوَاج	فَوْج	1
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ	दिन	أَيَّام	يَوْم	1
وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ	मुर्दा	أَمْوَات	مَيِّت	1
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ	चीज़	أَشْيَاء	شَيْء	1
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	नाम	أَسْمَاء	اِسْم	1
بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ	दुश्मन	أَعْدَاء	عَدُوّ	1

www.understandquran.com

मिसालें	तर्जमा	जमा	वाहिद	वज़न नंबर
اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِيْنَ	बन्दा	عِبَاد	عَبْد	2
وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ	ख़ून	دِمَاء	دَم	2
خَتَمَ اللهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ	दिल	قُلُوْب	قَلْب	3
الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ	सीना	صُدُوْر	صَدْر	3
مَلِكِ النَّاسِ	बादशाह	مُلُوْك	مَلِك	3
وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	गवाह	شُهَدَاء	شَهِيْد	4
بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	रहम करने वाला	رُحَمَاء	رَحِيْم	4
وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَلَهُ	शरीक	شُرَكَاء	شَرِيْك	4
قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ	बेवक़ूफ़	سُفَهَاء	سَفِيْه	4
وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ	नफ़्स, जान	أَنْفُس	نَفْس	5
يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ	कड़क (बिजली)	صَوَاعِق	صَاعِقَة	6
اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ	पैग़म्बर	أَنْبِيَاء	نَبِيّ	7
وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ	गिरह	عُقَد	عُقْدَة	8
فَأْتُوْا بِسُوْرَةٍمِّنْ مِّثْلِهٖ	सूरह	سُوَر	سُوْرَة	8
اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً	ख़लीफ़ा	خَلَائِف	خَلِيْفَة	9
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِىْ خُسْرٍ	इन्सान	أَنَاسِيّ،أُنَاس	إِنْسَان	10
وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ	पत्थर	حِجَارَة	حَجَر	11

www.understandquran.com

फ़ेअ़ले मजहूल

अब तक आप ने जितने अफ़आ़ल पढ़ें उनमें काम के करने वाले का पता चल जाता था, जैसे نَصَرَ زَيْدٌ خَالِدًا। (मदद की ज़ैद ने ख़ालिद की), यहाँ बात बिल्कुल वाज़ेह है की ज़ैद मदद करने वाला है और ख़ालिद की मदद की जा रही है। ऐसे फ़ेअ़ल को अ़रबी में 'फ़ेअ़ले मारूफ़' कहते हैं।

अ़रबी में भी फ़ेअ़ल कि एक क़िस्म वह होती है जिसमें काम करने वाले का पता नहीं चलता, जैसे نُصِرَ زَيْدٌ (ज़ैद कि मदद की गई)। इस जुमले से यह बात तो समझ में आ रही है की ज़ैद की मदद की गई है लेकिन किसने ज़ैद की मदद की वह मालूम नहीं है। ऐसे फ़ेअ़ल को 'फ़ेअ़ल मजहूल' (**PASSIVE VOICE**) कहते हैं। मजहूल यानी जो मालूम न हो। कुरआने मजीद के हर सफ़्हे पर फ़ेअ़ले मजहूल तकरीबन **2** मर्तबा आया है, यानी पूरे कुरआन मजीद में तक़रीबन **1200** मर्तबा!

3 ह़र्फ़ के फ़ेअ़ल को फ़ेअ़ल मजहूल बनाना बहुत आसान है।

- **फ़ेअ़ल माज़ीः** पहले ह़र्फ़ को पेश और दूसरे ह़र्फ़ को ज़ेर लगाईए जैसेः ''نَصَرَ'' से ''نُصِرَ'', ''ضَرَبَ'' से ''ضُرِبَ'' वग़ैरह।
- **फ़ेअ़ल मुजारेः** पहले ह़र्फ़ को पेश और तीसरे ह़र्फ़ को ज़बर, जैसेः ''يَنْصُرُ'' से ''يُنْصَرُ'', ''يَضْرِبُ'' से ''يُضْرَبُ'' वग़ैरह।

मज़ीद तफ़सीलात इन्शा अल्लाह हमारे अगले कोर्सेज़ में सिखाई जाएंगी।

फ़ेअ़ल मजहूल के लिए टी–पी–आई के इशारेः इशारे वहीं रहेंगे मगर हाथ को लेने वाले की ह़ालत में रख कर। नीचे वह टेबल दिया गया है जो हमने पहले ही सीख लिया।

फ़ेअ़ले मजहूल (Active voice)			
فِعْل مُضَارِع		فِعْل مَاضٍ	
वह मदद करता है	يَنْصُرُ	उस ने मदद की	نَصَرَ
वह सब मदद करते हैं	يَنْصُرُوْنَ	उन सब ने मदद की	نَصَرُوْا
आप मदद करते हैं	تَنْصُرُ	आप ने मदद की	نَصَرْتَ
मैं मदद करता हूँ	أَنْصُرُ	मैं ने मदद की	نَصَرْتُ
आप सब मदद करते हैं	تَنْصُرُوْنَ	आप सब ने मदद की	نَصَرْتُمْ
हम सब मदद करते हैं	نَنْصُرُ	हम सब ने मदद की	نَصَرْنَا
वह औ़रत मदद करती है	تَنْصُرُ	उस औ़रत ने मदद की	نَصَرَتْ

www.understandquran.com

अब नीचे फ़ेअ्ले मजहूल का टेबल दिया जा रहा है। ऊपर का टेबल और अगले टेबल को ग़ौर से देखिए ताकि दोनों का फ़र्क़ अच्छी तरह़ समझ में आ जाए।

फ़ेअ्ले मजहूल (Passive Voice)

فِعْل مُضَارِع		فِعْل مَاضِ	
वह मदद किया जाता है	يُنْصَرُ	वह मदद किया गया	نُصِرَ
वह सब मदद किए जाते हैं	يُنْصَرُوْنَ	वह सब मदद किए गए	نُصِرُوْا
आप मदद किए जाते हैं	تُنْصَرُ	आप मदद किए गए	نُصِرْتَ
मैं मदद किया जाता हूँ	أُنْصَرُ	मैं मदद किया गया	نُصِرْتُ
आप सब मदद किए जाते हैं	تُنْصَرُوْنَ	आप सब मदद किए गए	نُصِرْتُمْ
हम सब मदद किए जाते हैं	نُنْصَرُ	हम सब मदद किए गए	نُصِرْنَا
वह औ़रत मदद की जाती है	تُنْصَرُ	वह औ़रत मदद की गई	نُصِرَتْ

फ़ेअ्ले मजहूल की बाज़ और मिसाले यहाँ दी जा रही है, इन्हें ग़ौर से देखिए और उनमें होने फ़र्क़ को ज़ेहन में बैढ़ा लीजिए।

फ़ेअ्ले मजहूल (Passive Voice)	**फ़ेअ्ले मारूफ़** (Active Voice)
سُئِلَ	سَأَلَ
رُزِقُوْا	رَزَقُوْا
ضُرِبَتْ	ضَرَبَتْ
رُزِقْنَا	رَزَقْنَا
قِيْلَ	قَالَ
يُؤْخَذُ	يَأْخُذُ
يُذْكَرُ	يَذْكُرُ
تُسْأَلُ	تَسْأَلُ
تُسْأَلُوْنَ	تَسْأَلُوْنَ
تُرْجَعُوْنَ	تَرْجِعُوْنَ
تُؤْمَرُوْنَ	تَأْمُرُوْنَ

अल्ह़म्दुलिल्लाह, यह हमारे इस दूसरे कोर्स का आख़िरी सबक़ था। इस कोर्स को अच्छी तरह़ पढ़ लेने के बाद अगर आप हमारा **20** घंटों का अगला कोर्स (कोर्स:**3**) भी कर लें तो आप के लिए कुरआन मजीद के अगले सफ़्हात पर औसतन सिर्फ़ एक नया लफ़्ज़ रहता है यानी आप **90%** अल्फ़ाज़ सीख लेंगे इन्शा अल्लाह। अपने कुरआन सीखने के सफ़र को जारी रखिए, ख़ास तौर पर इस वक़्त जब्कि कुरआन का सीखना इतना आसान हो और उस के लिए कोर्स भी मौजूद हो।

www.understandquran.com

वर्कबुक

कुरआन सफ़्हा 1a तआ़रुफ़ और तअ़व्वुज़

सवाल-1: कोर्स-2 के मक़ासिद को ब्यान कीजिए।
जवाबः

सवाल-2: कुरआन फ़हमी के दौरान पेश आने वाले दो चैलेंजस क्या हैं और उन का क्या ह़ल है?
जवाबः

सवाल-3: इशारात के कोई तीन और फ़ेकरों के कोई तीन फ़वायद को ब्यान कीजिए।
जवाबः

सवाल-4: फ़ेकरों के मआ़नी को आसानी से याद करने का फ़ार्मूला लिखिए और उस को मुख़्तसर तौर पर समझाईए।
जवाबः

www.understandquran.com

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 1b

सूरह अल-फ़ातिहा

सवाल-1: सूरह अल-फ़ातिहा के दो इशारात का नाम और उनसे मुतअ़ल्लिक़ कोई **3** अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।

जवाबः

सवाल-2: दिल की गहराई से अल्लाह की तारीफ़ करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ...

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ...

اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ...

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						حَمِدَ	ح م د س	46
						مَلَكَ		48
						عَبَدَ		143
						غَضِبَ		7

मआ़नी	जमा	वाहिद
		اِسْم
		عَالَم
		يَوْم

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 1c मुत्तकियों के लिए हिदायत (अल-बक़रा:1-2)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ का क्या मतलब है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाबः لَا رَيْبَ فِيْهِ ....

هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ...

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

इन दोनों आयतों में एक भी तीन ह़र्फ़ी सह़ीह़ फ़ेअ़ल नहीं है

मआ़नी	जमा	वाहि़द
		كِتٰب
	مُتَّقُوْن، مُتَّقِيْن	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 1d मुत्तकियों की सिफ़ात (अल-बक़राः 3-5)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: इस इशारे में मुत्तक़ीन की कितनी और कौन सी सिफ़ात ब्यान की गई है।
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?
जवाबः يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ ....

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ..

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ..

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						رَزَقَ	ر ز ق ذ	122

मआ़नी	जमा	वाहिद
		صَلٰوة
	مُفلِحُوْن، مُفلِحِيْن	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2a काफ़िरीन को हिदायत नहीं (अल–बक़रा: 6-7)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उससे मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: काफ़िरों के लिए दुनिया और आखिऱत में क्या सज़ा है?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?
जवाब: سَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ....

ءَاَنۡذَرۡتَهُمۡ ....

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ..

وَعَلٰٓى اَبۡصَارِهِمۡ غِشَاوَةٌ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						كَفَرَ	ك ف ر ذ	461
						خَتَمَ		6

मआ़नी	जमा	वाहिद
	قُلُوْب	
	أَبْصَار	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2b) मुनाफ़िक़ीन को हिदायत नहीं (अल–बक़राः 8-10)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: दिल की बीमारी कितनी तरह़ की है? वज़ाहत के साथ लिखिए!
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः يُخٰدِعُوْنَ اللهَ ....

وَمَا يَشْعُرُوْنَ..

فَزَادَهُمُ اللهُ مَرَضًا ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						خَدَعَ	خ د ع / ف	3
						شَعَرَ		30
						كَذَبَ		76

मआ़नी	जमा	वाहि़द
	أَيَّام	
	أَنْفُس	
		مَرَض

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2c फ़सादी और बेवक़ूफ़ (अल-बक़राः 11-13)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: फ़साद कब फैलता है और अस्ल फ़सादी कौन हैं?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः لَا تُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ ....

اِنَّمَا نَحۡنُ مُصۡلِحُوۡنَ ....

وَلٰكِنۡ لَّا يَشۡعُرُوۡنَ ....

السُّفَهَآءُ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						شَعَرَ	ش ع ر / ذ	30
						عَلِمَ		518
						قَالَ		1715

मआ़नी	जमा	वाहिद
	مُصۡلِحُوۡن، مُصۡلِحِيۡن	
	مُفۡسِدُوۡن، مُفۡسِدِيۡن	
	سُفَهَاء	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 2d — दो रुख़े (अल–बक़राः 14-16)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्ब़ाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जाबः

सवाल-2: दोग़ले (दो रुखे) लोगों का अंजाम क्या होगा।
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَاِذَا لَقُوْا ....

مُسْتَهْزِءُوْنَ ....

وَيَمُدُّهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ..

فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						عَمِهَ	ع م ه س	7
						خَلَا		26

मआ़नी	जमा	वाहिद
		شَيْطٰن
		مُسْتَهْزِئ

www.understandquran.com

कु़रआन सफ़्हा 3a — आग की मिसाल (अल-बक़रा: 17-18)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: मुनाफ़िक़ों के लिए आग की मिसाल किस तरह समझी जा सकती है?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाब: اسْتَوْقَدَ نَارًا ....

فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ....

وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						ذَهَبَ	ذ ه ب ف	37
						تَرَكَ		41
						رَجَعَ		86

मआ़नी	जमा	वाहि़द
		مَثَل
		نُوْر
	ظُلُمَات	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 3b बारिश की मिसाल (अल–बक़रा: 19-20)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: मुनाफ़िक़ीन की मिसाल किस क़िस्म की बारिश से दी गई है? इसको आप किस तरह़ समझ सकते हैं?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?
जवाब: وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ....
يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ ....
وَلَوْ شَآءَ اللهُ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماض	माद्दा/कोड	तकरार
						جَعَلَ	ج ع ل / ف	346
						حَذِرَ		10
						خَطِفَ		3
						ذَهَبَ		37
						مَاتَ		89
						مَشٰى		22
						قَامَ		55

मआ़नी	जमा	वाहिद
	سَمَاوَات	
	ظُلُمَات	
	أَصَابِع	
	آذَان	
	صَوَاعِق	
	أَبْصَار	
	أَشْيَاء	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 3c कुरआन की दावत (अल–बक़राः 21-22)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्ब़ाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत क्यों?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ....

وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً..

فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						عَبَدَ	ع ب د ذ	143
						خَلَقَ		248
						جَعَلَ		346
						رَزَقَ		122
						عَلِمَ		518

मआ़नी	जमा	वाहि़द
		سَمَاء
	ثَمَرَات	
	أَنْدَاد	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 3d — कुरआन का चैलेंज (अल-बक़रा: 23)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: कुरआन एक ज़िन्दा मोजिज़ा है? कैसे?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाब: فَأْتُوْا بِسُوْرَةٍ ....

وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ ....

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						صَدَقَ	ص د ق / ذ	89
						كَانَ		1358
						أَتٰى		264
						دَعَا		199

मआ़नी	जमा	वाहिद
		عَبْد
		سُوْرَة
	شُهَدَاء	
	صَادِقُوْن، صَادِقِيْن	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 4a वईद और बशारत (अल–बक़रा: 24-25)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: जहन्नम के ईंधन कौन होंगे?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?
जवाब: فَاتَّقُوا النَّارَ ....

أُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ..

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ..

وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						فَعَلَ	ف ع ل / ف	105
						كَفَرَ		461
						عَمِلَ		318
						رَزَقَ		122
						خَلَدَ		83
						جَرٰى		60
						قَالَ		1715
						أَتٰى		264

मआ़नी	जमा	वाहिद
	نَاس	
	حِجَارَة	
	جَنَّات	
	أَنْهَار	
	ثَمَرَات	
	أَزْوَاج	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 4b मच्छर की मिसाल (अल–बक़राः 26)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: कौन लोग गुमराह होते हैं?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाबः لَا يَسْتَحْيٖٓ ....

اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا ....

بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ....

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						ضَرَبَ	ض ر ب ضـ	58
						عَلِمَ		518
						كَفَرَ		461
						فَسَقَ		54
						قَالَ		1715
						هَدٰى		161

मआ़नी	जमा	वाहिद
		مَثَل
		رَبّ
	فَاسِقُوْن، فَاسِقِيْن	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 4c गुमराह कौन? (अल-बक़राः 27)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: अल्लाह तआ़ला के अह्द से क्या मूराद है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ..............................

مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ....

وَيَقْطَعُوْنَ..............................

اَنْ يُّوْصَلَ..............................

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						نَقَضَ	ن ق ض ذ	8
						قَطَعَ		15
						أَمَرَ		244
						خَسِرَ		51
						وَصَلَ		10

मआ़नी	जमा	वाहिद
		عَهْد
		مِيْثَاق
		أَرْض
	خَاسِرُوْن، خَاسِرِيْن	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 4d कुफ़्र कैसे? (अल–बक़रा: 28-29)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: जब कोई अल्लाह की तख़्लीक़ पर ग़ौर व फ़िक्र करेगा तो क्या होगा?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाबः ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ....

ثُمَّ اسْتَوٰى اِلَى السَّمَآءِ..

فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						كَفَرَ	ك ف ر ذ	461
						رَجَعَ		86
						خَلَقَ		248
						كَانَ		1358

मआ़नी	जमा	वाहिद
	أَمْوَات	
		أَرْض
		سَمَاء
		شَيْئ

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 5a ख़लीफ़ा पर सवाल? (अल–बक़रा: 30)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: ख़लीफ़ा के कितने मआ़नी हैं और वह क्या हैं?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?
जवाबः وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ....

وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ ....

وَنُقَدِّسُ لَكَ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा/कोड	तकरार
						جَعَلَ	ج ع ل / ف	346
						سَفَكَ		2
						عَلِمَ		518
						قَالَ		1715

मआ़नी	जमा	वाहिद
	مَلَائِكَة	
		خَلِيْفَة
	دِمَاء	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 5b) अस्मा की तालीम (अल–बक़राः 31-33)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: हमें सीखने की सलाहियत किन चीज़ों में इस्तेमाल करनी चाहिए?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?
जवाबः ثُمَّ عَرَضَهُمْ ....

اَنْۢبِـُٔوْنِىْ بِاَسْمَآءِ..

وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ..

وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						عَرَضَ	ع ر ض / ض	13
						صَدَقَ		89
						كَتَمَ		21
						غَابَ		53

मआ़नी	जमा	वाहिद
	أَسْمَاء	
	مَلَائِكَة	
		غَيْب
	سَمَاوَات	
		أَرْض

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 5c सज्दा और इब्लीस (अल-बक़रा: 34-35)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ़ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: इब्लीस ने आदम अलैहिस्सलाम को सज्दे करने से क्यों इंकार किया?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाब: اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ....

اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ....

وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						سَجَدَ	س ج د ذ	64
						سَكَنَ		17
						قَرِبَ		37
						ظَلَمَ		266
						أَبٰى		13
						أَكَلَ		101
						شَاءَ		236

मआ़नी	जमा	वाहि़द
		زَوْج
		جَنَّة
		شَجَرَة

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 5d फिसलाना और तौबा (अल-बक़रा: 36-37)

सवाल-1: इशारे (pointer) का नाम, और उस से मुतअ़ल्लिक़ अस्बाक़, दुआ और प्लान मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-1: शैतान की चालों से आप कैसे बच सकते हैं?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाब: فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ..

اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ....

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ..

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा/कोड	तकरार
						هَبَطَ	ه ب ط / ض	8
						تَابَ	ت و ب / قا	72

मआ़नी	जमा	वाहिद
		شَيْطَان
	أَعْدَاء	عَدُوّ
		مَتَاع
	كَلِمَات	

www.understandquran.com

कम्ज़ोर अफ़्आ़ल का तअ़रूफ़

सवाल-1: कुरआन की हर लाईन में कितने हुरूफ़, कितने अस्मा और कितने अफ़्आ़ल आए हैं?
जवाबः

सवाल-2: इस्म की पहचान क्या है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेअ़्ल हो या इस्म, मआ़नी सीखनी का बेहतरीन तरीक़ा क्या है?
जवाबः

सवाल-4: सुलासी अफ़्आल किसे कहते हैं? दो मिसालें दीजिए?
जवाबः

सवाल-5: कम्ज़ोर हुरूफ़ क्या हैं हैं? कम्ज़ोर अफ़्आल किस को कहते हैं? दो मिसालें दीजिए?
जवाबः

सवाल-6: कुरआन में सुलासी सही़ह़ और सुलासी कम्ज़ोर अफ़्आल कितने बार आते हैं?
जवाबः

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 1b कम्ज़ोर अफ़्आलः وَهَبَ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया وَهَبَ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिएः

- अ़रबी बनाईएः अल्लाह ने अ़ता क्या हम सबको
- उर्दू में तर्जमा कीजिएः وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब देंः هَلْ وَهَبْتُمْ خَالِدًا؟

सवाल-2: وَهَبَ ही की तरह़ وَضَعَ (उस ने रखा) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
وَضْع

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	وَضَعَ

कम्ज़ोर अफ़्आलः وَعَدَ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया وَعَدَ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: आप सब वाअ़दा करते हैं ख़ालिद से
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब दें: هَلْ وَعَدْتَّ خَالِدًا؟

सवाल-2: وَعَدَ ही की तरह़ وَجَدَ (उस ने पाया) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
وُجُوْد

فعل مضارِع	فعل ماضِ
	وَجَدَ

www.understandquran.com

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 1d कम्ज़ोर अफ़्आल: قَالَ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया قَالَ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: तुम सब कहो लोगों से अच्छी बात
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब दें: هَلْ قُلْتُمْ خَيْرًا؟

सवाल-2: قَالَ ही की तरह़ تَابَ (उस ने तौबा की) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
تَوْبَة

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	تَابَ

ग्रामर बराए सफ़्हा 2a

कम्ज़ोर अफ़्आलः كَانَ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया كَانَ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: तुम सब जानते थे
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब दें: هَلْ كُنْتَ تَعْمَلُ صَالِحًا؟

सवाल-2: كَانَ ही की तरह़ ذَاقَ (उस ने चखा) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهى काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
ذَوْق

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	ذَاقَ

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 2b कमज़ोर अफ़्आलः زَادَ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया زَادَ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: सो बढ़ा दिया उनको अल्लाह ने बीमारी में
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब दें: هَلْ تَزِيْدُ فِی الْعِلْمِ؟

सवाल-2: زَادَ ही की तरह़ كَادَ (उस ने खुफ़िया तदबीर की) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول	فعل مضارِع	فعل ماضٍ
		كَادَ
كَيْد		

www.understandquran.com

कम्ज़ोर अफ़्आल: دَعَا

सवाल-1: सबक़ में दिया गया دَعَا का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: पस उस ने पुकारा अपने रब को
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब दें: هَلْ تَدْعُورَبَّكَ؟

सवाल-2: دَعَا ही की तरह़ تَلَا (उस ने तिलावत की) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
تِلَاوَة

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	تَلَا

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 2d कम्ज़ोर अफ़्आलः هَدٰى

सवाल-1: सबक़ में दिया गया هَدٰى का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिएः

- अ़रबी बनाईएः और हर क़ौम के लिए एक रहनुमाई करने वाला
- उर्दू में तर्जमा कीजिएः اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ
- अ़रबी में (न में) जवाब देंः هَلْ هَدَيْتُمْ اَحَدًا؟

सवाल-2: هَدٰى ही की तरह़ جَزٰى (उस ने बदला दिया) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम
جَزَاء

فعل مضارِع	فعل ماضِ
	جَزٰى

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 3a

हम्ज़ा वाले अफ़्आल: أَمَرَ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया أَمَرَ का टेबल अच्छी तरह याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: हम सब ने हुक्म दिया नमाज़ का
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब दें: هَلْ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ؟

सवाल-2: أَمَرَ ही की तरह़ أَخَذَ (उस ने पकड़ा) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
أُخْذ

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	أَخَذَ

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 3b यकसाँ हुरूफ़ वाले अफ़्आ़लः ظَنَّ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया ظَنَّ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिएः

- अ़रबी बनाईएः उन सबने गुमान किया जिस तरह़ से तुम सबने गुमान किया
- उर्दू में तर्जमा कीजिएः اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब देंः هَلْ تَظُنُّوْنَ بِاللهِ خَيْرًا؟

सवाल-2: ظَنَّ ही की तरह़ رَدَّ (उस ने वापस किया) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
رَدٌّ

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	رَدَّ

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 3c) यकसाँ हुरूफ़ वाले अफ़्आलः ضَلَّ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया ضَلَّ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिएः

- अ़रबी बनाईएः तुम सब गुमराह न हो जाओ
- उर्दू में तर्जमा कीजिएः وَلَا الضَّآلِّيْنَ
- अ़रबी में (न में) जवाब देंः هَلْ هُوَ ضَالٌّ عَنِ الطَّرِيْقِ؟

सवाल-2: ضَلَّ ही की तरह़ خَرَّ (वह गिरा) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
خَرّ

فعل مضارع	فعل ماضٍ
	خَرَّ

www.understandquran.com

3d कम्ज़ोर हुरूफ़ और हम्ज़ा वाले अफ़्आल: شَاءَ

सवाल-1: सबक़ में दिया गया شَاءَ का टेबल अच्छी तरह़ याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: आप सब चाहते हैं भलाई
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: إِنْ شَاءَ اللّٰهُ
- अ़रबी में (हाँ में) जवाब दें: هَلْ يَشَاءُوْنَ خَيْرًا؟

सवाल-2: شَاءَ ही की तरह़ خَافَ (वह डरा) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी **6** चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهی काम का नाम، اسم فاعل، اسم مفعول
خَوْف

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	خَافَ

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा **4a**

فَتَحَ يَفْتَحُ के जैसे अफ़्आल का इआदा

सवाल-1: इस सबक़ में "فَتَحَ" के वज़न पर आने वाले अफ़्आल आपको सिखाए गए, नीचे टेबल में सिर्फ़ काम का नाम दिया गया है, उसकी मदद से इस फ़ेअ़्ल का माज़ी, मुज़ारे, फ़ेअ़्ल अम्र, इस्मे फायल और इस्मे मफऊल के ख़ानों को मुकम्मल कर के आख़िरी ख़ाने में सिर्फ़ काम के नाम का तर्जमा लिखें।

काम के नाम का तर्जमा	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
	فَتْح						29	ف ت ح	ف	1
	جَعْل						346	ج ع ل	ف	2
	فِعْل						105	ف ع ل	ف	3
	خِدَاع						3	خ د ع	ف	4
	ذَهَاب						37	ذ ه ب	ف	5
	قَطْع						15	ق ط ع	ف	6

www.understandquran.com

نَصَرَ يَنْصُرُ के जैसे अफ़्आल का इआदा

सवाल-1: इस सबक़ में "نَصَرَ" के वज़न पर आने वाले अफ़्आल आपको सिखाए गए, नीचे टेबल में सिर्फ़ काम का नाम दिया गया है, उसकी मदद से इस फ़ेअ़्ल का माज़ी, मुज़ारे, फ़ेअ़्ल अम्र, इस्मे फ़ायल और इस्मे मफ़ऊल के ख़ानों को मुकम्मल कर के आख़िरी ख़ाने में सिर्फ़ काम के नाम का तर्जमा लिखें।

काम के नाम का तर्जमा	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
	نَصْر						94	ن ص ر	نـ	1
	خَلْق						248	خ ل ق	نـ	2
	عِبَادَة						143	ع ب د	نـ	3
	ذِكْر						187	ذ ك ر	نـ	4
	شُكْر						65	ش ك ر	نـ	5
	دُخُوْل						78	د خ ل	نـ	6
	حَسَد						5	ح س د	نـ	7
	أَكْل						101	أ ك ل	نـ	8
	أَمْر						244	أ م ر	نـ	9
	أَخْذ						135	أ خ ذ	نـ	10
	تَرْك						41	ت ر ك	نـ	11
	خُلْد، خُلُوْد						83	خ ل د	نـ	12
	رِزْق						122	ر ز ق	نـ	13
	سُجُوْد						64	س ج د	نـ	14
	سَكَن						17	س ك ن	نـ	15

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 4c — نَصَرَ، ضَرَبَ के जैसे अफ़्आल का इआदा

सवाल-1: इस सबक़ में "نَصَرَ، ضَرَبَ" के वज़न पर आने वाले अफ़्आल आप को सिखाए गए, नीचे टेबल में सिर्फ़ काम का नाम दिया गया है, उसकी मदद से इस फ़ेअ़ल का माज़ी, मुज़ारे, फ़ेअ़ल अम्र, इस्मे फ़ायल और इस्मे मफऊल के ख़ानों को मुकम्मल कर के आख़िरी ख़ाने में सिर्फ़ काम के नाम का तर्जमा लिखें।

काम के नाम का तर्जमा	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
	نَصْر						94	ن ص ر	نـ	1
	كُفْر						461	ك ف ر	نـ	2
	شُعُور						30	ش ع ر	نـ	3
	صِدْق						89	ص د ق	نـ	4
	فِسْق						54	ف س ق	نـ	5
	كِتْمَان						21	ك ت م	نـ	6
	ضَرْب						58	ض ر ب	ضـ	7
	رُجُوع						86	ر ج ع	ضـ	8
	ظُلْم						266	ظ ل م	ضـ	9
	مِلْك						48	م ل ك	ضـ	10
	كَذِب						77	ك ذ ب	ضـ	11

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा **4d**

سَمِعَ يَسْمَعُ، وَهَبَ يَهَبُ، وَعَدَ يَعِدُ के जैसे अफ़्आल का इआदा

सवाल-1: इस सबक़ में "سَمِعَ، وَهَبَ، وَعَدَ" के वज़न पर आने वाले अफ़्आल आप को सिखाए गए, नीचे टेबल में सिर्फ़ काम का नाम दिया गया है, उसकी मदद से इस फ़ेअ़्ल का माज़ी, मुज़ारे, फ़ेअ़्ल अम्र, इस्मे फ़ायल और इस्मे मफऊल के ख़ानों को मुकम्मल कर के आख़िरी ख़ाने में सिर्फ़ काम के नाम का तर्जमा लिखें।

काम के नाम का तर्जमा	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
	سَمَاعَة، سَمْع						147	س م ع	سـ	1
	عِلْم						518	ع ل م	سـ	2
	عَمَل						318	ع م ل	سـ	3
	حَمْد						46	ح م د	سـ	4
	خُسْر،خُسْرَان						51	خ س ر	سـ	5
	شَهَادَة، شُهُوْد						90	ش ه د	سـ	6
	عَهْد						35	ع ه د	سـ	7
	وَهْب						22	و ه ب	وهـ	8
	وُقُوْع						20	و ق ع	وهـ	9
	وَعْد						139	و ع د	وعـ	10
	وُجُوْد						107	و ج د	وعـ	11
	وُصُول						10	و ص ل	وعـ	12
	وِلَادَة						29	و ل د	وعـ	13
	وِقَايَة						19	و ق ى	وعـ	14

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 5a شَاءَ، زَادَ، قَالَ के जैसे अफ़्आ़ल का इआ़दा

सवाल-1: इस सबक़ में "قَالَ، زَادَ، شَاءَ" के वज़न पर आने वाले अफ़्आ़ल आपको सिखाए गए, नीचे टेबल में सिर्फ़ काम का नाम दिया गया है, उस की मदद से इस फ़ेअ़्ल का माज़ी, मुज़ारे, फ़ेअ़्ल अम्र, इस्मे फ़ायल और इस्मे मफऊल के ख़ानों को मुकम्मल कर के आख़िरी ख़ाने में सिर्फ़ काम के नाम का तर्जमा लिखें।

काम के नाम का तर्जमा	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
	قَوْل						1715	ق و ل	قا	1
	ذَوْق						41	ذ و ق	قا	2
	تَوْبَة						72	ت و ب	قا	3
	كَوْن						1358	ك و ن	قا	4
	قِيَام، قَوْمَة						55	ق و م	قا	5
	زِيَادَة						53	ز ي د	زا	6
	كَيْد						35	ك ي د	زا	7
	مَشِيئَة						236	ش ي ئ	شا	8
	خَوْف، خِيْفَة						118	خ و ف	شا	9

www.understandquran.com

دَعَا، هَدٰی، ظَنَّ، ضَلَّ के जैसे अफ़्आल का इआदा

सवाल-1: इस सबक़ में ''دَعَا، هَدٰی، ظَنَّ، ضَلَّ'' के वज़न पर आने वाले अफ़्आल आपको सिखाए गए, नीचे टेबल में सिर्फ़ काम का नाम दिया गया है, उसकी मदद से इस फ़ेअ़्ल का माज़ी, मुज़ारे, फ़ेअ़्ल अम्र, इस्मे फ़ायल और इस्मे मफऊल के ख़ानों को मुकम्मल कर के आख़िरी ख़ाने में सिर्फ़ काम के नाम का तर्जमा लिखें।

काम के नाम का तर्जमा	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمرِ	فعل مضارِع	فعل ماضٍ	तकरार	माद्दे	कोड	शुमार नं
	دُعَاء، دَعْوَة						199	د ع و	دعـ	1
	تِلَاوَة						63	ت ل ا	دعـ	2
	خُلُوّ						26	خ ل و	دعـ	3
	هُدًى/هِدَايَة						161	ه د ي	هد	4
	جَزَاء						116	ج ز ى	هد	5
	إِتْيَان						264	أ ت ي	هد	6
	جَرَيَان						60	ج ر ي	هد	7
	مَشْي						22	م ش ي	هد	8
	ظَنّ						68	ظ ن ن	ظنـ	9
	رَدّ						44	ر دد	ظنـ	10
	مَدّ						17	م د د	ظنـ	11
	ضَلَالَة، ضَلَال						113	ض ل ل	ضلـ	12
	خَرّ						12	خ ر ر	ضلـ	13
	حَقّ						270	ح ق ق	ضلـ	14

www.understandquran.com

कम्ज़ोर अफ़्आल: رَضِيَ، نَسِيَ

सवाल-1: सबक़ में दिए गए رَضِيَ، نَسِيَ के टेबल अच्छी तरह याद कीजिए और इन सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: हम सब राज़ी हुए/ वह सब भूल गए
- उर्दू में तर्जमा कीजिए: يَنْسَوْنَ أَنْفُسَهُمْ/ اِرْضَ عَنِ ابْنِكَ!
- अ़रबी में (न में) जवाब दें: هَلْ تَنْسَى اللهَ؟

सवाल-2: رَضِيَ، نَسِيَ ही की तरह़ خَشِيَ (वह डरा) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उस की चाबियों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل أمر، نهى काम का नाम، اسم مفعول، اسم فاعل
خَشْيَة

فعل مضارِع	فعل ماضٍ
	خَشِيَ

www.understandquran.com

इआ़दाः टूटी हुई जमा

सवाल-1: इस सबक़ में आप ने टूटी हुई जमा के कुछ मशहूर औज़ान पढ़े। नीचे दिए गए टेबल में ख़ाली ख़ानों को भरें, जहाँ वाह़िद दिया गया है वहाँ उस की जमा लिखें और जहाँ जमा दी गई है वहाँ उस का वाह़िद लिखें। नीज़ उस लफ़्ज़ का तर्जमा भी लिखें।

तर्जमा	जमा	वाह़िद	नंबर शुमार
		مَلِك	1
	شُرَكَاء		2
		مَثَل	3
	أَنْوَار		4
	سُفَهَاء		5
		نَفْس	6
	صَوَاعِق		7
	سُوَر		8
		نَبِيّ	9
		عُقْدَة	10
	أَيَّام		11
		خَلِيْفَة	12
	أَمْوَات		13
	حِجَارَة		14
		لُبّ	15
	أَفْوَاج		16
	قُلُوْب		17
	عِبَاد		18
		دَم	19
		صَدْر	20

www.understandquran.com

फ़ेअ़ले मजहूल

सवाल-1: फ़ेअ़ले मजहूल किसे कहते हैं और तीन ह़र्फ़ी फ़ेअ़ल माज़ी मारूफ़ से फ़ेअ़ल माज़ी मजहूल बनाने का तरीक़ा क्या है?

जवाब:

सवाल-2: نَصَرَ ही की तरह़ خَلَقَ (उस ने पैदा किया) है। इस फ़ेअ़ल से मजहूल की गर्दान बना कर नीचे दिए टेबल को मुकम्मल करें। आप की सहूलत के लिए माज़ी और मुज़ारे का पहला लफ़्ज़ लिख दिया गया है। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नहीं।

فعل مضارِع مجھول	فعل ماضِ مجھول
يُخْلَقُ	خُلِقَ

www.understandquran.com

यकसां हुरूफ़ वाले अफ़्आल कुरआन में 1300 बार	कम्ज़ोर अफ़्आल कुरआन में 9000 बार			सेहत मन्द अफ़्आल कुरआन में 9000 बार
और अच्छा गुमान रखो वर्ना भटक जाओगे	इस लिए दुआ़ करो हिदायत की	बल्कि कहा: ज़्यादा दूँगा	अल्लाह ने देने का वादा किया है	
			وَهَبَ	कुरआन खोलोगे فَتَحَ
ظَنَّ	دَعَا	قَالَ	–	तो अल्लाह की मदद आएगी, نَصَرَ
ضَلَّ	هَدٰى	زَادَ	وَعَدَ	वर्ना मार पड़ेगी! ضَرَبَ
	رَضِيَ	شَاءَ		इस लिए सुन लो سَمِعَ

जुमलों की मदद से इन स्टाइलस को याद रखिए।

कमज़ोर अफ़्आ़ल के सिलसिले में 2 बातें याद रखें

1- यह कोई एक स्टाइल पर आते है: فَتَحَ، نَصَرَ، ضَرَبَ، سَمِعَ

2- यह थक जाते हैं, या तो ग़ायब हो जाते हैं या एक दूसरे से बदलते हैं

कभी कभी हम्ज़ा कमज़ोर हुरूफ़ की तरह हो जाता है!

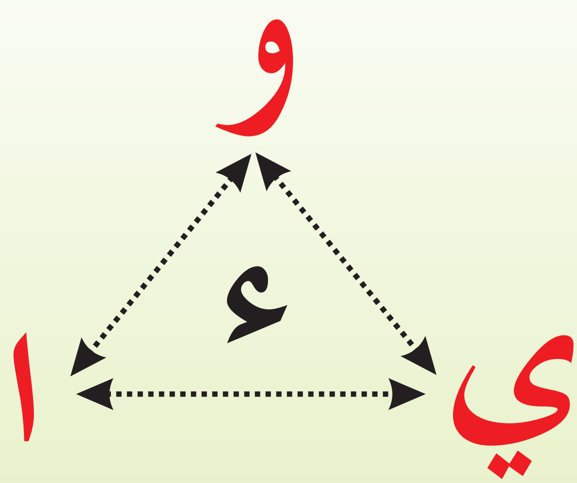

www.understandquran.com

आओ कुरआन पढ़ें - आसान तरीक़े से

(बच्चों और बड़ों के लिए)

- अ़रबी हुरूफ़, ह़रकात और उसूले तज्वीद (क़वायद) की तालीम तख़्लीक़ी अंदाज़ में
- मसरूफ़ लोगों के लिए कम वक़्त में सीखने का बेहतरीन मौक़ा
- जदीद साइंसी अंदाज़ को इस्तेमाल करते हुए मुशकिल नज़रियात की आसान तालीम

आओ कुरआन समझें - आसान तरीक़े से

(निहायत दिलचस्प और आसान तर्ज़े तालीम)

कोर्स: 1	(20 घण्टे) आओ कुरआन समझें (7 सूरतें और नमाज़ के अज़्कार)	ज़मायर, हुरूफ़े जर और फ़ेअ़ल सुलासी सहीह़	50% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 2	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 1-37)	फ़ेअ़ल सुलासी मोअ़तल	80% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 3	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 38-76)	फ़ेअ़ल सुलासी मज़ीद फ़ी:	90% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 4	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 77-105)	इज़ाफ़ी सर्फ़ और नह़्व का तआ़रूफ़	90% से ज़ायद*
कोर्स: 5	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 106-141)	नह़्व के बुनियादी क़वायद	90% से ज़ायद*

*फ़ीसद की यह तक़सीम उस वक़्त दुरूस्त शुमार होगी जब कि सूरह अल-बक़रा और उस के बाद वाली सूरतों की तालीम जारी रखी जाए।

स्कूली निसाब

- दुनिया भर के बहुत से स्कूलों में दाख़िले निसाब
- तक़रीबन दो लाख से ज़ायद मुस्तफ़ीद तलबा
- नर्सरी से दसवीं जमाअ़त तक का निसाब

कुरआन की ऑनलाइन पर्सनल क्लासेस

घर बैठे आसानी के साथ कुरआन सीखने का बेहतरीन मौक़ा

- इंग्लिश, उर्दू, तमिल, और बंगाली वग़ैरह ज़ुबानों में पढ़ाने के लिए मुस्तनद और क़ाबिल असातिज़ा मौजूद
- आसान निसाब और सहूलत बख़्श शेड्यूल
- साइंसी तरीक़ों के इस्तेमाल और याद-दाश्त के लिए मुफ़ीद तकनीक के साथ
- तदरीस के लिए मुआ़विन चीज़ों का इस्तेमाल
- तलबा की रोज़ाना की कारकर्दगी का जायज़ा और फ़ीडबैक
- कोर्स की तकमील पर सनद

100+ से ज़ायद ट्रेनर्स

2000+ से ज़ायद रजिस्टर्ड तलबा

50000+ से ज़ायद क्लासेस की तकमील

मुअल्लिफ़ के बारे में

डा० अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रहीम ने अपनी 25 साला तह़क़ीक़ात व तजर्बात की बुनियाद पर कुरआनी निसाब की एक सीरीज़ "आओ कुरआन पढ़े आसान तरीक़े से और तज्वीद के साथ" और "आओ कुरआन समझें आसान तरीक़े से" तैयार की है जो दुनिया भर के बहुत से स्कूलों में दाख़िले निसाब है। यह किताब बड़ी उम्र के लोगों के मेयार के मुताबिक़ भी तैयार की गई है। उन्होंने इन कोर्सेज़ को अब तक 10 मुल्कों मे पेश किया है और इन के प्रोग्राम नेशनल व इण्टरनेशनल टीवी पर भी नश्र किए जाते हैं। इन किताबों का 20 से ज़ायद ज़ुबानों में तर्जमा किया जा चुका है।

Plot No. 13-6-434/B/41, 2nd Floor, Omnagar, Langar House, Hyderabad - 500 008. Telangana - INDIA
Phone Nos: +91- 9652 430 971 /+91-40-2351 1371
Website: www.understandquran.com I Email: info@understandquran.com

INR 99/-